आर.एन.आई. नं. 3653/57
डाक पंजीयन संख्या JPC/3825/02/2003-05

हिन्दी मासिक

जिनवाणी

श्री नमस्कार महामन्त्र

णमो अरिहंताणं
णमो सिद्धाणं
णमो आयरियाणं
णमो उवज्झायाणं
णमो लोए सव्वसाहूणं ॥
एसो पंच णमोक्कारो,
सव्व-पावप्पणासणो,
मंगलाणं च सव्वेसिं,
पढमं हवइ मंगलं ।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
जयपुर

वर्ष 60 अंक 3
मार्च, 2003 फाल्गुन, 2059

अलंकारों के सौंदर्य शिल्प!

स्वर्ण आभूषणों को
सौंदर्य का मंगल प्रतिक
माना गया है।
समय समयानुसार
इन गहनों के रूप बदले,
जिन में हमारी
वैभवशाली एवं शालीन सभ्यता
की छवी स्पष्ट होती है।
ऐसे ही कुछ अलंकार शिल्पोंका
अनुपम दर्शन संजो लाये है।
देश के सुविख्यात स्वर्ण आभूषण निर्माता
''रतनलाल सी. बाफना ज्वेलर्स'' जलगाँव
नई ऋतु एवं त्योहारों के स्वागत हेतु
सोने - चांदी एवं हीरों के
यह सुंदर अलंकार शिल्प!

सोने के गहने, हीरों के आभुषण
सब कुछ एक ही छत के नीचे

व्यापारियों के लिए सोने के गहने एवं
चांदी पात्रों की होलसेल बिक्री सुविधा

अवश्य पधारिए!
जहाँ विश्वास हि परम्परा है!

रतनलाल सी.बाफना,ज्वेलर्स

पारस महल
चांदी भांडी शोरुम
'शुद्ध आहार शाकाहार'

सुभाष चौक, जलगाँव
दूरभाष : २२३९०३, २२५९०३,
२२२६२९, २२२६३०

नयनतारा
स्वर्णालंकार शोरुम
डायमंड शोरुम
(रविवार अवकाश)

सावधान : हमारी कहीं भी शाखा एवं एजंट नही!

जिनवाणी हिन्दी-मासिक

मंगल-मूल, धर्म की जननी, शाश्वत सुखदा कल्याणी।
द्रोह-मोह-छल-मान-मर्दिनी, फिर प्रगटी यह 'जिनवाणी'

● **प्रकाशक**
प्रकाशचन्द डागा
मंत्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल
दुकान नम्बर 182-183 के ऊपर, बापू बाजार,
जयपुर-302003 (राज.), फोन नं. 2565997

● **संस्थापक**
श्री जैन रत्न विद्यालय, भोपालगढ़

● **सम्पादक**
डॉ. धर्मचन्द जैन, एम.ए., पी-एच.डी.

● **सम्पादकीय सम्पर्क सूत्र**
3 K 24-25, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड
जोधपुर- 342005(राज.)
फोन नं. 0291-2730081

● **सम्पादक मण्डल**
डॉ. संजीव भानावत, एम.ए. पी-एच.डी.

● **भारत सरकार द्वारा प्रदत्त**
रजिस्ट्रेशन नं. 3653/57
डाक पंजीयन सं. JPC/3825/02/2003-05

● **सदस्यता**

स्तम्भ सदस्यता	11000 रु.
संरक्षक सदस्यता	5000 रु.
आजीवन सदस्यता देश में	500 रु.
आजीवन सदस्यता विदेश में	100$(डालर)
त्रिवर्षीय सदस्यता	120 रु.
वार्षिक सदस्यता	50 रु.
इस अंक का मूल्य	10 रु.

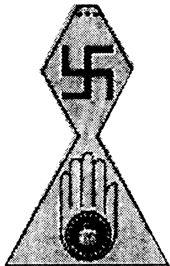

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

कालीपव्वंग-संकासे,
किसे धमणिसंतए।
मायन्ने असणपाणस्स,
अदीणमणसो चरे।।
-उत्तराध्ययन सूत्र २.३

काकजंघ-सम क्षुधाक्षीण,
तन नस-ढांचा भर रह जाए।
अशन-पानमात्र साधु,
भिक्षा अदीनमनसे लाए ॥३॥

मार्च 2003
वीर निर्वाण सं. 2529
फाल्गुन, 2059

वर्ष : 60 **अंक** : 03

मुद्रक : दी डायमण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, मोतीसिंह भोमियों का रास्ता, जयपुर, फोनः 2562929

ड्राफ्ट 'जिनवाणी' जयपुर के नाम बनवाकर प्रकाशक के उपर्युक्त पते पर प्रेषित किया जा सकता है।

नोट: यह आवश्यक नहीं कि लेखकों के विचारों से सम्पादक या मण्डल की सहमति हो।

विषयानुक्रमणिका

प्रवचन/निबन्ध

गुरु के प्रति समर्पण	: आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.	7
स्थानकवासी परम्परा की मान्यताएँ	: सौ. मंगलाबाई चोरड़िया	13
ठाणेणं मोणेणं झाणेणं	: डॉ. पानमल सुराणा	24
देव तो मेरे अरिहंत हैं पर....	: श्री उदयमुनि जी म.सा.	29
दहेज से परहेज करें	: श्री गजमल लोढ़ा	36
परीक्षा के समय मनोबल बनाए रखें	: श्री नवलसिंह जैन	46

विचार/तत्त्वचर्चा/आगम-परिचय

ब्रह्मचर्य	: आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.	6
रत्नवंश के मूल महापुरुष	: भण्डारी सरदारचन्द जैन	31
अपर्याप्त और पर्याप्त	: श्री धर्मचन्द जैन	32
दशवैकालिक सूत्र (5)	: डॉ. अमृतलाल गांधी	34
पाक्षिक पत्र	: संकलित	40
जीवन	: श्री सुरेशचन्द कोठारी	48

कविता/प्रेरक-प्रसंग

मुक्तक मुक्ता	: श्री दिलीप धींग 'जैन'	23
म्हारा पूज्य हीराचन्द्र	: श्री हस्तीमल गोलेछा	35
स्वाध्याय में पूर्वाभास समाहित है	: श्री लक्ष्मीचन्द जैन	37
गणिवर हीरा हैं महान	: श्री मनमोहनचन्द बाफना	38
दृष्टि बदलें, सब कुछ बदल जाएगा	: प्रो. चाँदमल कर्णावट	43
जब कदम बढ़ेंगे दृढ़ उस ओर	: डॉ. (श्रीमती) चन्दनबाला मारू	44
पानी	: श्री कस्तूरचन्द बाफना	45

स्तम्भ/ अन्य

सम्पादकीय	: डॉ. धर्मचन्द जैन	3
साहित्य-समीक्षा	: डॉ. धर्मचन्द जैन	49
जिनवाणी पर अभिमत	: संकलित	50
समाचार-संकलन	: संकलित	51
संक्षिप्त समाचार	: संकलित	63
बधाई	: संकलित	65
श्रद्धांजलि	: संकलित	66
साभार-प्राप्ति-स्वीकार	: संकलित	74

सम्पादकीय

वन्दन है, अभिनन्दन है

डॉ. धर्मचन्द जैन

स्थानकवासी जैन परम्परा में रत्नवंश के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का प्रथम तीर्थंकर भगवान ऋषभदेव के जन्म-कल्याणक चैत्रकृष्णा अष्टमी को ६६वाँ जन्म-दिवस है। आपका जन्म विक्रम संवत् १९९५ में १३ मार्च १९३८ को हुआ था। यह जन्म दिवस इस वर्ष २५ मार्च को समुपस्थित हो रहा है।

लगभग २५ वर्ष की युवावय, स्वस्थ, सुन्दर एवं आकर्षक भव्य व्यक्तित्व हो तो वासना के समुद्रेक की कल्पना तो की जा सकती है, किन्तु वैराग्य के बीजों का अंकुरण, पल्लवन एवं फलन इस उम्र में होना अत्यन्त दुष्कर है। लघुवय में दीक्षा अंगीकार करना अपेक्षाकृत आसान है, किन्तु पूर्ण यौवन में संसार-त्याग कर संयम को अंगीकार करने का दुःसाध्य कार्य विरले मनोविजेता ही करने में समर्थ होते हैं। ऐसा दुर्धर्ष एवं दुःसाध्य कार्य किया पीपाड़ निवासी धर्मनिष्ठ सुश्रावक श्री मोतीलाल जी गांधी एवं सुश्राविका मोहनीबाई जी गांधी के युवापुत्र श्री 'हीराचन्द्र' ने। उन्होंने कामदेव को लज्जित कर भगवान महावीर की वीरता का अनुसरण करते हुए महान् अध्यात्मयोगी बालब्रह्मचारी, युगमनीषी, करुणासिन्धु आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के चरणों में कार्तिक शुक्ला षष्ठी संवत् २०२० को प्रव्रज्या पथ अपना लिया। स्पष्टतः आपने संयम का पथ सोच-समझकर अपनाया और योग्य गुरु के चरणों में रहकर अपने को ऐसा विनीत बनाया कि गुरु की पूरी कृपा बनी रही और गुणों का आधान होता चला गया।

एक बार 'गुरु' स्वीकार कर लेने पर कभी गुरु आज्ञा का प्रतिकार या उल्लंघन न करना, विनीत भाव से उनके आदेश का पालन करना, संकेत मात्र से उनके मनोभाव को समझ लेना और भगवन्त! कृपानाथ! कृपासिन्धु! जैसे शब्दों से उन्हें संबोधित कर अपने को उनकी सेवा में निष्काम भाव से समर्पित कर देना, वास्तव में अतीव कठिन एवं दुर्लभ कार्य है। किन्तु यह दृग्गोचर हुआ मुनि श्री हीराचन्द्र जी के साधना काल में। गुरुदेव की भी ऐसी कृपा कि 'हीरामुनि' को सदैव अपने साथ, अन्तेवासी के रूप में रखा। हीरामुनि जी करुणानाथ गुरुदेव के प्रमुख व्याख्यानी, तत्त्वज्ञ एवं विद्वान् संत के रूप में उभरे। आपका व्याख्यान पूज्य गुरुदेव हस्ती के व्याख्यान के पूर्व होता- जिसमें ओजस्विता एवं रोचकता के साथ शास्त्रज्ञता की भी झलक मिलती रहती थी। दीक्षित होने से लेकर संवत् २०४७ तक के सभी चातुर्मास(संवत् २०४४ के नागौर चातुर्मास को छोड़कर) पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में होना- कितनी अन्तरंग कृपा का सूचक है, अनुमान नहीं किया जा सकता। मुनि श्री हीराचन्द्र जी के मधुर एवं ओजस्वी प्रवचनों से, विभिन्न जिज्ञासुओं को दिए गए विद्वत्तापूर्ण समाधानों से आचार्य देव पूज्य हस्ती को जहाँ संतोष एवं सहकार मिलता

वहाँ मुनि हीराचन्द्रजी को भी पूज्य गुरुदेव के सान्निध्य में निरन्तर प्रशिक्षण का अनुभव होता। पूज्य गुरुदेव की सेवा में पहुँचे कई प्रमुख श्रावक श्रद्धेय मुनि हीराचन्द्र जी के सान्निध्य में बैठकर तत्त्वचर्चा का लाभ लेते तो पूज्य गुरुदेव को विनति आदि का निवेदन करने के पूर्व उनसे परामर्श भी लेते।

गुरुदेव के प्रति समर्पण, पूर्ण समर्पण के उच्च आदर्श एवं साधु-समाचारी के मर्मज्ञ सन्त श्री हीराचन्द्र जी ने संस्कृत, प्राकृत भाषाओं का गहन अभ्यास करने के साथ आगम एवं थोकड़ों का मर्म हृदयंगम कर लिया। सहज मुस्कान एवं निश्चिन्त किन्तु सजग मनोवृत्ति के धनी मुनि हीराचन्द्रजी ने अपने सतीर्थ्यों के साथ भी सदैव स्नेह एवं मैत्री का व्यवहार करते हुए उनका संयम में साथ दिया। अन्य सम्प्रदायों के प्रमुख सन्तों, आचार्यों आदि के साथ भी मैत्रीपूर्ण संबंध आपको विरासत में मिले।

प्रज्ञावान, चारित्रनिष्ठ, अध्यात्मसूर्य, परमश्रद्धेय पूज्य श्री हस्तीमल जी म. सा. के १३ दिवसीय तप-संथारे के साथ वैशाख शुक्ला अष्टमी संवत् २०४८ को हुए महाप्रयाण के पश्चात्, ज्येष्ठ कृष्णा पंचमी रविवार २ जून १९९१ को आपको पूज्य हस्ती की भावना के अनुसार पूज्य पछेवड़ी ओढाई गई। उस समय तक कोई नहीं जानता था कि 'हीरामुनि' से बने 'आचार्यप्रवर हीराचन्द्र जी' पूज्य हस्ती के इतने प्रभावशाली संघनायक सिद्ध होंगे। किन्तु हाथ कंगन को आरसी क्या? वे देदीप्यमान ललाट के धनी, निर्मल साध्वाचार की पताका को हाथ में लिए संघ एवं समाज को शान्ति,समत्व एवं अध्यात्म के मार्ग की ओर निरन्तर आकर्षित एवं प्रेरित कर रहे हैं।

१२ वर्षों के आचार्यकाल में अनेक संकट आए, कई विषम परिस्थितियाँ उत्पन्न हुई, किन्तु आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी शुद्ध साध्वाचार के पालन के समक्ष कभी नहीं झुके। यदि किसी सन्त ने आचार-पालन की कठोरता में अपनी असमर्थता प्रकट की तो आचार्यप्रवर ने समझौता नहीं किया और निर्मल साध्वाचार के पालन को सर्वोच्च महत्त्व दिया। संख्या की कमी का भय धीर संयमी आचार्यों को भला कैसे विचलित कर सकता है! आज उनकी संयमनिष्ठा एवं चारित्र-पालन की शुद्धता का डंका चहुँदिशाओं में गूँज उठा है।

न आप आडम्बर में विश्वास रखते हैं और न ही श्रावक-श्राविकाओं को इसकी प्रेरणा करते हैं। पूज्य गुरुदेव के द्वारा प्रदत्त सामायिक-स्वाध्याय की मशाल से आप श्रावक-श्राविकाओं के जीवन को जगमगाने हेतु सदैव तत्पर रहते हैं। महाराष्ट्र, मध्यप्रदेश और गुजरात के अनेक ग्राम-नगरों में सामूहिक सामायिक की क्रान्ति सी आयी है। सामायिक से जीवन-सुधार का मन्त्र सौंपकर ही आप निश्चिन्त नहीं होते, उसके हृदय में स्वाध्याय का दीपक भी प्रज्वलित करते हैं। सामायिक और स्वाध्याय का अमूल्य उपहार किसी को मिल जाए तो जीवन की किस्मत बदलते देर नहीं लगती। अनेक कलुषित विचार एवं व्यर्थ के आचार दुम दबाकर ऐसे भागते हैं कि लौटकर मुँह दिखाने की हिम्मत नहीं होती।

आचार्यप्रवर पात्र की स्थिति देखकर उसे जीवन-सुधार का मन्त्र सौंपते हैं।

जो व्यसनों में फंसे हुए हैं, उन्हें व्यसनों से निकलने का मन्त्र देते हैं, जो अशान्ति और तनाव से ग्रस्त हैं उन्हें शान्ति और सौहार्द का पाठ पढ़ाते हैं, जो निन्दा-विकथा में जीवन व्यर्थ कर रहे हैं, उन्हें स्वाध्याय और सच्चिन्तन का प्रकाश देते हैं। असंयम से संयम में आना ही जीवन-शुद्धि एवं आत्मिक-प्रगति का साधन है, इसे भलीभांति समझाते हुए आप व्रत-नियम ग्रहण करने की प्रेरणा करते हैं। आपका लक्ष्य अहंपोषण नहीं, जन-कल्याण की पावन भावना है। आप गणना में नहीं, जीवन-सुधार की प्रेरणा में प्रमोद का अनुभव करते हैं। अजमेर चातुर्मास में शताधिक १२ व्रतधारी बनने का जो क्रम चला वह आगे के चातुर्मासों में भी उसी उमंग और उत्साह के साथ परिलक्षित हुआ। आपकी मंगल-प्रेरणा से प्रतिवर्ष शताधिक आजीवन ब्रह्मचारी बन रहे हैं। कहते हैं कि मनुष्य के लिए व्रतों में ब्रह्मचर्य का पालन दुष्कर है, किन्तु भरयौवन में प्रव्रज्या अंगीकार करने वाले तपस्वियों के प्रभाव से ब्रह्मचर्य का पालन करने वालों की संख्या में प्रतिवर्ष अभिवृद्धि हो रही है। जो कार्य सरकार दण्ड के आधार पर नहीं करा पाती, सन्त उसे स्वेच्छा से कराने में सफल हो जाते हैं।

तप-त्याग की पावन-धारा को प्रवाहित करने वाले आचार्यप्रवर में भी अब उसी प्रकार का आकर्षण दिखाई पड़ रहा है, जैसा अध्यात्मयोगी पूज्यपाद गुरुदेव आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. में परिलक्षित होता था। आचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने पूज्य गुरुदेव के निर्मल यश को सुरक्षित रखकर सच्ची सन्त-परम्परा की रक्षा की है, यह श्रावक-समुदाय एवं जिनशासन के लिए गौरव का विषय है।

साध्वाचार के अनन्य उपासक, मृदुभाषी एवं निर्मल बुद्धि के धनी उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. सदृश सन्तों से आचार्यप्रवर को जहाँ संघ-संचालन में सुगमता का अनुभव होता है वहाँ साध्वाचार की दृढ़ता हेतु सम्बल भी प्राप्त होता है। सन्तों की रत्नाधिकता एवं संघनायक को सहयोग से संघ निरन्तर अग्रसर है। साध्वी प्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा. सहित समस्त साध्वीमण्डल का सहकार भी आचार्य श्री के चिन्तन- मनन एवं सदाचरण की ओर बढ़ते चरणों को सम्बल प्रदान कर रहा है।

धीर, वीर, गम्भीर, साधनानिष्ठ आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की छत्रछाया में चतुर्विध संघ अपने को सुरक्षित अनुभव कर रहा है एवं निरन्तर ज्ञान, दर्शन-चारित्र में चरण बढ़ाने की आशा रखता है। आचार्यकाल में ३४ नये साधकों (६ सन्तों एवं २८ सतियों) की दीक्षा से संघ-सदस्यों को अपनी धर्मप्रवृत्तियों को आगे बढ़ाने में सम्बल मिला है। आचार्यप्रवर को उनके जन्म-दिवस के अवसर पर शतशः वन्दन- अभिनन्दन और उनके निस्पृह किन्तु तेजस्वी संयमी-जीवन के लिए सहस्रशः मंगल कामनाएँ। वे न केवल रत्नवंश के आचार्य के रूप में, अपितु समस्त जैन एवं जैनेतर जनसमूह के मार्गदर्शक आचार्य के रूप में मान्य हों तथा जन-जन का उनके प्रति सहज आकर्षण हो, यही प्रभु से हार्दिक मंगल प्रार्थना है। ●

ब्रह्मचर्य

आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा.

- जनसंख्या की वृद्धि से चिन्तित राष्ट्रीयजन वैज्ञानिक तरीकों से संतति नियन्त्रण करना चाहते हैं। भले ही इन उपायों से संतति निरोध हो जाय और लोग अपना बोझा हल्का समझ लें, क्योंकि इन उपायों से संयम की आवश्यकता नहीं रहती और ये सुगम और सरल भी जंचते हैं, किन्तु इनसे उतने ही अधिक खतरे की संभावना भी प्रतीत होती है। भारतीय परम्परा से यदि ब्रह्मचर्य के द्वारा सन्तति निरोध का मार्ग अपनाया जाए तो आपका शारीरिक व मानसिक बल बढ़ेगा और दीर्घायु के साथ आप अपने उज्ज्वल चरित्र का निर्माण कर सकेंगे।
- व्यवहार में स्त्री-पुरुष के समागम को कुशील माना गया है। यद्यपि संसार वृक्ष का मूल होने से गृहस्थ इसका सम्पूर्ण त्याग नहीं कर सकता, फिर भी परस्त्री-विवर्जन और स्वस्त्री-समागम को सीमित रखना तो उसके लिए भी आवश्यक है।
- ब्रह्मचर्य-व्रत उत्तेजना के समय मनुष्य को कुवासनाओं पर विजय प्राप्त कराकर धर्म-विमुख होने से बचाता है। ब्रह्मचारी-सदाचारी गृहस्थ अपने जीवन में बुद्धि पूर्वक सीमा बांध कर, अपनी विवेक शक्ति को निरन्तर जागृत रखता है। वह भोग-विलास में कीड़े के सदृश तल्लीन नहीं रहता और न समाज में कुप्रवृत्तियों को ही फैलाता है। कामना को सीमित ढंग से शमन कर लेना ही उसका दृष्टिकोण रहता है।
- कुशील की मर्यादा के द्रव्य, क्षेत्र, काल और भाव रूप से अनेक रूप हैं। अपने स्त्री-पुरुष का परिमाण यह द्रव्य मर्यादा है, क्षेत्र से विदेश का त्याग करना, काल से दिन का त्याग और रात्रि की मर्यादा, भाव से एक करण एक योग आदि रूप से व्रत की मर्यादा होती है।
- अल्पायु में मृत्यु का एक कारण अधिक मैथुन एवं आहार-विहार का असंयम भी है।
- कुशील सेवन करने वाले, वीर्य हानि के साथ असंख्य कीटाणुओं के नाश रूप हिंसा के भी भागी बनते हैं। ब्रह्मचर्य की चोरी करने वालों को प्रकृति के घर से सजा होती है और इसी कारण आज (एड्स आदि) रोगियों की संख्या अधिक हो रही है।

प्रवचन

गुरु के प्रति समर्पण

आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा.

बालकेश्वर, मुम्बई चातुर्मास के प्रारम्भिक दिनों में गुरु पूर्णिमा के दिन 24 जुलाई 2002 को निर्मल साध्वाचार के पालयिता आगम प्रभाकर आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने धर्मसभा में गुरु के प्रति समर्पण एवं ज्ञानपूर्वक क्रिया करने की महती प्रेरणा की है। धर्म के क्षेत्र में गुरु के प्रति समर्पण हो तो गुरु भी ज्ञान एवं क्रिया की प्रेरणा कर भक्त की नैया पार लगा सकता है। आचार्यप्रवर के इस प्रवचन का आशुलेखन श्री नौरतन जी मेहता, जोधपुर ने किया है। *-सम्पादक*

अज्ञान-अंधकार का हरण कर अनन्त ज्ञान मिलाने वाले अरिहन्त भगवन्तों को, साधना पथ पर चरण बढ़ाकर स्वयं पाप से दूर रहने वाले और दूसरों को आश्रव द्वार रोकने का उपदेश प्रदान करने वाले संत-भगवन्तों के चरणों में कोटि-कोटि वन्दन।

तीर्थंकर भगवान महावीर की आदेय-अनमोल वाणी में बन्धन में डालने वाले तीन तत्त्व कहे गये। इसी तरह बन्धन से मुक्त कराने वाले भी तीन तत्त्व कहे गए हैं। तन की आसक्ति बंधन में डालने वाली है। धन की ममता बंधन में डालने वाली है। परिवार का मोह संसार-चक्र में घुमाने वाला है। बन्धन के ये तीन तत्त्व कहे जा रहे हैं। इनके कारण अज्ञानी जीव, मोही जीव, आसक्ति वाला जीव आज तक चक्कर लगा रहा है।

बन्धन-मुक्ति के भी तीन तत्त्व हैं-देव, गुरु और धर्म। एक वे हैं जो हमारे सामने धर्म के आदर्श रूप हैं। जिन्होंने धर्म को एकमेक कर लिया। धर्म के साकार आधार बन गये। बन्धन में डालने वाले राग, ममता, आसक्ति और मोह को समाप्त कर जो वीतराग अवस्था प्राप्त कर गये, ऐसे आराध्य देवाधिदेव बन्धन-मुक्ति के प्रथम सहायक कारण हैं। ऐसे तीर्थंकर भगवन्तों का संग पाकर पापी से पापी, अधर्मी से अधर्मी, हत्यारे तक अपने पाप का निराकरण कर उसी जन्म में मुक्ति मिला चुके।

दूसरा आराध्य तत्त्व है 'गुरु'। गुरु स्वयं वीतराग वाणी को हृदय में बसाकर, महाव्रत-समिति-गुप्ति की आराधना कर स्वयं तिरने के मार्ग पर चलते हैं तथा दूसरों को इसी मार्ग पर चलने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। इन गुरुदेवों ने, संत भगवन्तों ने और तिरने-तारने वाले महापुरुषों ने न जाने कैसे-कैसे नास्तिकों की धारणाएँ बदलकर उन्हें आस्तिक बनाया। गिरे हुए

पतित लोगों को ज्ञान का प्रकाश देकर पावन बनाया। न जाने कितने पापाचरण करने वाले लोगों को पाप से हटाकर साधनापथ पर बढ़ाया।

इन सबमें जो शक्ति है- साधना है वह धर्म की साधना है। 'धर्म' तीसरा तत्त्व है, जो मुक्ति में सहायक है। देवाधिदेव साक्षात् दर्शन कराते हैं। जीव की करणी को ज्ञान के आलोक से समझा कर सन्मार्ग बताते हैं। गुरु भगवन्त अपना जीवन स्वयं निष्पाप बनाकर दूसरों को भी आगे बढ़ाने की प्रेरणा करते हैं। किन्तु तिरता वह है जो उनके चरणों में समर्पण करता है। श्रद्धा, विश्वास और अटूट आस्था के साथ जो अपने-आपको अर्पण कर दे वह ही जीवन को मोड़ दे सकता है।

मैंने भी सुना है, आपने भी सुना है आज गुरु पूर्णिमा है। एक समय था, जब बड़े-बड़े जिज्ञासु महापुरुष गुरु की खोज करते रहे। आचार्य पूज्य श्री धर्मदास जी महाराज की बात कहें, शासनप्रभावक धर्मसिंह जी महाराज की बात कहें इन्होंने दीर्घकाल तक खोज की, फिर भी सद्गुरु का समागम नहीं हुआ। किसी परम्परा में सुनते हैं कि गुरु की खोज के लिए पर्वतों एवं जंगलों में कितना प्रयास करना पड़ता, तब जाकर गुरु मिलते।

महानगरी मुम्बई का सद्भाग्य है यहाँ प्रायः हर उपनगर में गुरु विराजमान हैं। क्या गुरु के मिलने से मुक्ति मिल जाती है? (नहीं) कब मिलती है? गुरुदेव की शरण स्वीकार कर उनके प्रति समर्पण भावना करने पर द्वन्द्व और दुःख मिटते हैं।

दृष्टान्त सुना है। साक्षात् गुरु जो कलाचार्य थे, ने यह कहकर शिष्य को ठुकरा दिया कि मैं राजकुमार को, कुलीन और श्रेष्ठि पुत्रों को शिक्षा प्रदान करता हूँ। हीन कुल और हीन जाति वालों को मैं शिक्षा नहीं देता। गुरु ने ठुकरा दिया, पर शिष्य का समर्पण था। शिष्य ने गुरु की प्रतिमा बनाई और मूर्ति के सामने कला सीखनी प्रारम्भ की। आप जानते हैं गुरुभक्त एकलव्य ने अर्जुन की विद्या को भी पीछे छोड़ दिया। एकलव्य एकदृष्टि लगाकर विद्याध्ययन करते-करते शब्दभेदी बाण चलाने की कला सीख गया। कारण था उसका समर्पण।

आप अपने रोग निकन्दन के लिए चिकित्सक के पास जाते हैं। देखने वाला चिकित्सक दवा का चयन भी वही कर रहा है, पथ्य-परहेज भी वही बता रहा है। आप चिकित्सक की दवा बिना तर्क किए लेते हैं या नहीं? आप नहीं पूछते कि यह कौनसा इंजेक्शन है, यह कैसी गोली है। कोई बहस नहीं, कोई तर्क नहीं, कोई शंका नहीं। जो दवा दी जा रही है उसे ग्रहणकर रहे हैं। डॉक्टर

जैसा कहता है, वैसा करते हैं।

डॉक्टर पर इतना विश्वास है, क्या सद्गुरु पर भी इतना विश्वास है? अगर गुरु सामायिक करने का कहें तो....? कुछ हैं जो सामायिक कर लेंगे, पर सामायिक क्या है? सामायिक क्यों की जाती है? सामायिक कैसे की जाती है? ४८ मिनट बैठना क्यों जरूरी है? सामायिक से क्या होता है? सामायिक करने से क्या फल मिलेगा? इस प्रकार के न जाने कितने तर्क करेंगे। ये तर्क किसलिए?

शिक्षा के लिए विद्यालय गये, क्या वहाँ आपने अपनी सहूलियत के टाइम के लिए पूछताछ की? स्कूल का टाइम सात बजे है तो बच्चे को ले जाते हैं या नहीं? स्कूल के टाइम के लिए तर्क नहीं। यहाँ व्याख्यान का टाइम थोड़ा जल्दी होना चाहिए, बैंक के समय वहाँ पहुँचना है। बहिनें कहती हैं, व्याख्यान थोड़ा देर से शुरू करो। सवा नौ बजे तक तो हम नाश्ते-पानी से निपटते हैं। एक को जल्दी चाहिये, एक को देर से। कई हैं जो कहते हैं- महाराज, इतनी ऊँची बात कहते हैं जो सिर के ऊपर से निकल जाती है। महाराज को समय के अनुसार हमारी समझ में आए वैसी बात कहनी चाहिये। कई हैं जो कहते हैं- महाराज, हमें तो परमात्मा बनने की कला सीखाओ। आपके न जाने कितने मत हैं, कितने विचार हैं। मैं पूछूँ आपकी श्रद्धा कितनी है?

कभी आप जंगल में भटक जाएँ और वहाँ रास्ता दिखाने वाला भील हो। भील भी कैसा? उसके वस्त्र तक नहीं, केवल छाल लपेटी हुई हो। वह रास्ता बताता है तो क्या आप उसे मंजूर नहीं करते? यहाँ कहा जाता है ओली करने को। आप आयंबिल तो कदाचित् कर लेंगे, लेकिन नौ दिन ठण्डा-लूखा-अलूणा कौन खाये? नौ दिन की ओली करना भारी लगता है। कई तो हैं जो कह देंगे- महाराज! क्या पेट खराब करना है? ठण्डा खाने से वायु बढ़ जाती है, पेट खराब हो जाता है। हमें तो गरमागरम चाहिये।

आप कितने सुविधाभोगी हैं? आयंबिल में कितने-कितने पदार्थ बनाये जा रहे हैं। ढ़ोकले अलग हैं, खमण अलग हैं। नमक नहीं खाना तो सेंधा नमक है। मिर्ची की जगह कालीमिर्च है। अरे भाई, जब सब खाते हो, तो फिर यह आयंबिल का नाम क्यों? क्यों नहीं नीवीं कर लेते। एकाशन कर लीजिये आपको गर्म-गर्म खाने में रुकावट नहीं आयेगी। आप चाहे जो तप करें, मर्यादाओं को तोड़ें नहीं। तर्क देकर गलियाँ नहीं निकालें।

आप तर्क कर सकते हैं। पर कब तक? तब तक तर्क कीजिये जब तक आपने गुरु नहीं बनाया। जब तक किसी पर श्रद्धा नहीं जमी, तब तक

तर्क करना चाहें तो कर लीजिये, पर एक बार किसी को गुरु बना लिया तो फिर वहाँ तर्क नहीं, समर्पण चाहिये।

मैंने सुना है- बड़े-बड़े घरों में फैमिली डाक्टर होते हैं। क्यों? फैमिली डाक्टर उस परिवार के सदस्यों की प्रकृति, प्रवृत्ति और परिस्थिति से परिचित रहता है। आप इसीलिए फैमिली डाक्टर रखते हैं। आपकी कोई समस्या है। समस्या के समाधान के लिए फैमिली वकील होता है कह दूँ तो....। आपके हिसाब-किताब की जाँच के लिए सी.ए. होता है। सी.ए. आपको जो भी कानून बताये, आप मान लेते हैं। आप उसके सामने कोई तर्क नहीं करते, अपना एकाउण्ट बता देते हैं, कुछ छिपाते नहीं। आप जब फैमिली डाक्टर, फैमिली वकील और सी.ए. के सामने तर्क नहीं करते तो महाव्रतियों के सामने तर्क क्यों करते हैं?

गुरुमंत्र क्या है? वह किसलिए करवाया जाता है? गुरु आपकी परिस्थितियों का, प्रकृति का, पुरुषार्थ का जानकार होता है। प्रदेशी राजा का कोई गुरु नहीं था। गुरु नहीं था तब तक वह आत्मा को और शरीर को एक मानकर चलता था। उसके लिए उसने न जाने कितनी हिंसाएँ की होंगी, कितने परीक्षण किए होंगे, हिसाब नहीं। कई जीवों की बोटी उतार दी, मानव को पेटियों में बन्द कर दिया, जीवित था तब कितने वजन का था और मर जाने पर कितना वजन का रहा, जैसे उसने कई परीक्षण किए। लेकिन जब उसने समझ लिया कि जीव अलग है, शरीर अलग है तो तर्क छोड़ दिया। तर्क छोड़ने पर समर्पण का भाव आता है। अब तक जो हिंसा करता था, पापाचरण करता था, जानवर को काटते विचार तक नहीं करता था वही प्रदेशी बारह व्रती बन गया। कब? जब श्रद्धा जागृत हो गई।

आपने शायद देखा होगा- एक परम्परा में लोग दण्डवत् करते हुए घर से निकलते हैं और जिन चरणों में पहुँचना होता है वहाँ तक दण्डवत् करते-करते पहुँचते हैं। ऐसे श्रद्धालु न स्नान करते हैं न शरीर की संभाल ही कर पाते हैं। गुरु चरणों में श्रद्धा के साथ इस प्रकार जाने वाले आपने देखे होंगे।

आप यहाँ आते हैं, बैठते हैं, व्याख्यान भी सुनते हैं, पर कई हैं जिनका ध्यान जूतों की ओर रहता है। वहाँ से हटाकर अपना ध्यान वीतराग वाणी में लगाइये।

आज गुरु पूर्णिमा है। आपको क्या जगाना है? मैं मात्र एक बात कह रहा हूँ- आप श्रद्धा के साथ गुरु को स्वीकार कर लीजिये। फिर आप चाहें

जंगल में हैं, वन में हैं, चाहे किसी संकट में हैं, किसी भी परिस्थिति में हैं आपको भय नहीं लगेगा।

आपने देखा होगा- छोटा बच्चा जब बाहर जाता है, पिता की अंगुलि पकड़ कर चलता है। वह हजारों के बीच है, उसे चिंता नहीं। वहाँ चाहे लड़ने वाले भी हैं, खतरा भी है तब भी बच्चे को चिंता नहीं। क्योंकि वह पिता की अंगुलि पकड़कर चल रहा है। क्या आपको अंगुली पकड़ने जैसा विश्वास है?

गुरु आत्मकल्याण के लिए रास्ता बताता है। आप गुरु को भगवान कह दीजिये। तीर्थंकर भी गुरु ही होते हैं। आज गुरु को एवं उनका साक्षात् संयोग नहीं, पर उनकी वाणी का आधार आज भी है। गुरु भी वीतराग भगवन्तों की वाणी का आधार लेकर आपका मार्गदर्शन करते हैं। आपकी गुरु के प्रति श्रद्धा होगी, समर्पण होगा तो आप तिर सकेंगे। ज्ञान, दर्शन, चारित्र एवं तप की साधना में आगे बढ़ सकेंगे।

धर्म क्या है, इसे समझना है। धर्म में पहला स्थान है- ज्ञान का। मैं पहले कह चुका- पढमं नाणं तओ दया। ज्ञान आवश्यक है। ज्ञान नहीं तो क्रिया अंधी है। आपने देखा होगा- घाणी का बैल दिन भर चलता है, पर है कहाँ? वहीं का वहीं। घाणी का बैल आगे नहीं बढ़ता। इसी तरह जब तक ज्ञान नहीं, आप चाहे जितनी क्रिया कर लीजिये, तपाराधन कर लीजिये, वह उतना फलदायी नहीं होगा। लोग हैं जो महाराज के कहने से सामायिक कर लेते हैं, उपवास-आयंबिल-एकाशन कर लेते हैं। उनसे पूछा जाय- सामायिक क्या है, कैसे की जाती है तो....? शाम को सैकड़ों प्रतिक्रमण करते हैं, उनसे पूछा जाय कि प्रतिक्रमण क्या तो...? क्या केवल 'मिच्छामि दुक्कड़' कहने मात्र से प्रतिक्रमण हो गया?

आप कोई भी क्रिया करें पहले ज्ञान प्राप्त करें। सामायिक क्या, उसकी विधि क्या, इसकी जानकारी प्राप्त करें। आज कई वयोवृद्ध श्रावक मिल जायेंगे जो वर्षों से सामायिक कर रहे हैं।, पर सामायिक क्या शायद नहीं जानते।

आप व्यापार करते हैं। क्या व्यापार बिना जानकारी किया करते हैं? आज जो सामायिक करते हैं अधिकांश ऐसे हैं जो या तो महाराज के कहने से करते हैं या धर्मपत्नी ने कह दिया इसलिए करते हैं। जो कहने से कर रहे हैं, उसे भी मैं गलत नहीं कह रहा, पर कैसे करनी चाहिये, उसका ज्ञान कीजिये। गुरु के प्रति समर्पण हो तो सब कुछ दिया जा सकता है। एकलव्य ने तीर चलाने का एकमात्र उपयोगी साधन अंगूठा भी गुरु को समर्पित कर दिया।

हम कभी सामायिक के लिए एक घंटा मांगते हैं, वह भी कइयों को भारी लगता है। आप व्यापार-धंधे में, आमोद-प्रमोद में, मिलने-जुलने में घंटों पूरे कर देते हैं वहाँ समय निकालना भारी नहीं लगता। मैं आपसे फिर कहूँ- आपमें से जो सामायिक नहीं कर रहे हैं वे करना शुरू करें और जो कर रहे हैं वे विधि का ज्ञान प्राप्त करें। अगर आपने शुद्ध भाव से सामायिक की और आप आराधक हैं तो मानकर चलिये- एक सामायिक नरक में नहीं जाने देगी। मैं सामायिक की कीमत नहीं बता रहा हूँ, प्रभावना नहीं बाँट रहा हूँ। आज लोग सामायिक को, जाप को, प्रतिक्रमण को खरीदना चाहते हैं। पूनिया की एक सामायिक लेने के लिए भगवान ने श्रेणिक से कहा- तेरे राज्य की जितनी सम्पदा है, वह दलाली में जाती है। आप प्रभावना में पाँच रुपये का नोट देकर क्या पाना चाहते हैं?

एक सामायिक-एक नवकारसी करोड़ों वर्षों के पापों का शमन कर सकती है। प्रत्येक श्रावक-श्राविका का नियम होना चाहिए कि वह कम से कम एक सामायिक करे। सामायिक भी घर में करने के बजाय धर्मस्थान में करे।

आज गांव-गांव में सामायिक करने वाले हैं, तप करने वाले हैं। हमने ऐसी जगह भी देखी है जहाँ हर रोज दस आयंबिल, ग्यारह एकाशन और बारह उपवास होते हैं। वे एक-एक घर में तारीख बांधकर ऐसा करते हैं। बालकेश्वर में २०० घर हो सकते हैं- आप एक-एक घर की तारीख बांध लें तो सामायिक-प्रतिक्रमण वाले मिल सकते हैं। छोटे-छोटे गांव में बच्चे तारीख बांधकर प्रतिक्रमण करवाते हैं। पोता प्रतिक्रमण कराये, दादा सुने। सुनते-सुनते ७२ साल के एक व्यक्ति को मन में आई कि मैं प्रतिक्रमण याद करूँ। उसने ढ़लती उम्र में प्रतिक्रमण कण्ठस्थ कर लिया।

आज गुरु पूर्णिमा है, समर्पण का दिन है। आप ज्ञान, दर्शन, चारित्र और तप में समर्पण बढ़ायें, इसी मंगल मनीषा के साथ....

स्वाध्याय की महत्ता

- स्वाध्याय को मैं वक्त की फिजूलखर्ची नहीं मानता, बल्कि मानता हूँ उसे एक तप, एक विज्ञान, एक कीमिया, एक निकष, एक लाइट हाउस, एक समुद्र मंथन। इसीलिए जब भी एक अच्छी किताब मेरे हाथों में पड़ जाती है, मैं उसमें अतल डूब जाता हूँ, इस तरह एकमेव, कुछ जैसे पानी में नमक। एक अद्‌भुत अद्वैत के हालात होते हैं, तब पुस्तक से और उसकी प्रेरणा से।
- स्वाध्याय समय की टकसाल है, जिसमें से आप घड़ी, घण्टे, मिनिट, सैकण्ड उत्पन्न कर सकते हैं। स्वाध्याय से जो स्फूर्ति मिलती है, वह स्वयं वक्त में किफायतसारी को जन्म देती है। *-संकलनः-श्री चेतनप्रकाश जी डूंगरवाल, बैंगलोर*

स्थानकवासी परम्परा की मान्यताएँ

सौ. मंगलाबाई चोरड़िया

जैनधर्म की प्रमुख दो परम्पराएँ हैं-श्वेताम्बर और दिगम्बर। एक यापनीय परम्परा भी रही, किन्तु वह सम्प्रति विद्यमान नहीं है। श्वेताम्बर परम्परा दो प्रकार की हैं- मूर्त्तिपूजक और अमूर्त्तिपूजक। अमूर्त्तिपूजक परम्परा स्थानकवासी एवं तेरापंथ के भेद से दो प्रकार की है। इनमें स्थानकवासी परम्परा एवं उसकी प्रमुख मान्यताओं के संबंध में प्रस्तुत लेख में सारगर्भित निरूपण हुआ है। यह लेख अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर की कक्षा एकादश की पुस्तक में भी संकलित किया गया है। -सम्पादक

संसार के प्राणिमात्र के सच्चे त्राता, विश्वबन्धु, करुणासिन्धु, श्रमण भगवान महावीर ने सम्पूर्ण जगत् के प्राणियों के हित के लिए विश्वधर्म-जैनधर्म का वागरण करते हुए श्रमण, श्रमणी, श्रावक, श्राविका रूप चतुर्विध तीर्थ के आचार, विचार एवं व्यवहार का स्वरूप बताया तथा प्राणिमात्र के प्राणों की रक्षा-दया को ही धर्म का प्राण बतलाया।

जैन दर्शन दुःख-मुक्ति का पथ प्रदर्शित करता है। धर्म, प्राकृतिक नियम (Law of Nature) होने से सार्वभौमिक, सार्वदेशिक, सार्वकालिक व सार्वजनीन होता है। समय-समय पर इन्हीं नियमों की अनुपालना से बन्धनों के मूल राग-द्वेष को समाप्त करने वाले आप्त पुरुष इन सिद्धान्तों की प्ररूपणा करते हैं। राग-द्वेष की ग्रन्थि से रहित होने से वे निर्ग्रन्थ कहलाते हैं और उनके द्वारा प्ररूपित धर्म निर्ग्रन्थ-धर्म कहलाता है। सर्वप्रथम नाम यही था, कालक्रम से अनेक नाम प्राप्त हुए, जिनमें प्रमुख नाम इस प्रकार हैं-

निर्ग्रन्थ धर्म	: निर्ग्रन्थों द्वारा प्ररूपित
जैन धर्म	: जिन भगवन्तों द्वारा उपदिष्ट
सुविहित परम्परा	: आगम मर्यादानुसार
लोंकागच्छ	: लोंकाशाह द्वारा क्रियोद्धार के कारण
ढूँढिया	: प्रारम्भ में मुनिराज ढूँढो(पुराने मकान) में ठहरे।
साधुमार्गी	: साधु मर्यादा को सम्यक् रूप से स्थापित किया।
बाईस टोला	: संवत् १७७२ में धर्मदास जी के २२ टोलों में विचरण।
स्थानकवासी	: विक्रम की १६वीं शताब्दी के अन्त में।

भगवान महावीर की विशुद्ध परम्परा निर्ग्रन्थ, श्रमण, सुविहित, वनवासी, वसतिवासी आदि विविध रूपों को पार करती हुई समय के प्रभाव से

स्थानकवासी के नाम से पुकारी जाने लगी।

'स्थानक' शब्द का अर्थ बहुत व्यापक और उत्कृष्ट उद्देश्यों का द्योतक रहा है। यह पौषध, संवर, सामायिक आदि धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न करने का स्थान है। स्थानक में वर्ण, गंध, रस, स्पर्श आदि इन्द्रिय-पोषक विषयों का स्थान न होने से वैराग्य की ओर प्रवृत्त कराने वाली और संसार तारक क्रियाएँ सुगमता-पूर्वक शुद्ध रूप में होती हैं।

छः काय के जीवों की विराधना टालकर धार्मिक अनुष्ठान को सम्पन्न कराने का स्थान 'स्थानक' है। सावद्य क्रियाओं अर्थात् पाप व हिंसक प्रवृत्तियों का त्याग कर धार्मिक क्रियाओं को सम्पन्न कराने, मन को अन्तर्मुखी बनाने तथा निवृत्ति मार्ग की ओर उन्मुख करने का स्थान भी 'स्थानक' है।

स्थीयते अस्मिन्नितिस्थानम्। स्थानमेवेति-स्थानकम्।
स्थानके वसति तच्छील इति 'स्थानकवासी'।।

शान्त, एकान्त तथा आगमवर्णित दोषों से रहित शुद्ध स्थान में धार्मिक क्रियाएँ करने से और वहाँ निवास करने से वे स्थानकवासी कहे जाते हैं। जैन दर्शन की अनेक परम्पराएँ वर्तमान में देखने को मिलती हैं।

जैन
(वीर निर्वाण संवत् 609 में 2 भेद)

- श्वेताम्बर
  - अमूर्ति पूजक
    - स्थानकवासी
    - तेरापंथी (वि.सं.१८१५)
  - मूर्ति पूजक (चैत्यवास विशेष वि.नि.८८२ से खरतर, तपा, आंचलिक आदि अनेक गच्छ)
- दिगम्बर
  - तेरापंथी
  - बीसपंथी
  - तारणपंथी

सैद्धान्तिक आधार पर अनेक मान्यताएँ सभी में समान हैं। द्रव्य, तत्त्व, गति, जाति, दंडक, लेश्या, योग, उपयोग, कर्म, सिद्धि आदि बातों के साथ, सामायिक, प्रतिक्रमण आदि निरवद्य साधना द्वारा मोक्ष-प्राप्ति के मूलभूत सिद्धान्तों में समानता है। किन्तु काल के प्रभाव से समाविष्ट विकृतियों से, अहंकृतियों से शाखा, प्रशाखा, भेद, प्रभेद होते चले गए।

हमें यहाँ उन समान विषयों की चर्चा नहीं कर उन विशिष्ट बिन्दुओं पर विचार करना है जो वीतराग दर्शन के आधारभूत सिद्धान्तों द्वारा मान्य होने के उपरान्त भी सर्वमत स्वीकृत नहीं रह पाए। इसलिए हम स्थानकवासी

परम्परा की मान्यताओं के आधार पर इस परम्परा के वैशिष्ट्य को उजागर कर रहे हैं। वीतराग दर्शन विवेकपूर्ण उदार दर्शन है। स्वलिंग के साथ यहाँ अन्यलिंग व गृहस्थलिंग से भी सिद्ध होना बताया गया, पर बाहर के भेद के बावजूद भीतर की कषाय-विजय की साधना में एकरूपता है। 'मित्ती मे सव्वभूएसु' के साथ यहाँ गुणिजनों पर प्रमोद-भाव कहा गया, इसी मैत्री-भाव की प्रतिक्षण वृद्धि कर शुद्ध परम्परा के प्रति प्रमोद की अभिव्यक्ति की जा रही है। विकृति पर प्रहार करना ही होगा। विकृति दोष है, पाप है, जड़ है, उससे अपने को बचाना ही होगा, परन्तु विकृति पक्ष का सेवन करने वालों के प्रति भी हितबुद्धि रखते हुए उनके आत्मोत्थान की मंगल मनीषा ही रखनी है।

श्वेताम्बर परम्परा के आचार्य एवं श्रमण-श्रमणी समूहों ने एकादशांगी (११अंग) और अन्य आगमों (उपांग, मूल, छेद) को सर्वज्ञप्रणीत एवं गणधरों द्वारा ग्रथित बताते हुए उन्हें प्रामाणिक माना और उनमें जैन-धर्म के स्वरूप, सिद्धान्तों एवं श्रमणाचार आदि का जिस रूप में विवरण दिया गया है, उसे ही प्रामाणिक तथा आचरणीय माना। इसके विपरीत दिगम्बर परम्परा के आचार्यों, श्रमणों आदि ने यह अभिमत व्यक्त करते हुए कि एकादशांगी विलुप्त हो गयी, एकादशांगी सहित सभी आगमों को अमान्य घोषित कर दिया। मूलतः इसी प्रश्न को लेकर भगवान महावीर का संघ दो भागों में विभक्त हो गया। दिगम्बर परम्परा की ओर से दिगम्बर अनुयायी ही आगम विलुप्त होने की बात कहते हैं। इसके साथ यह प्रश्न उपस्थित होता है कि 'नष्टे मूले कुतो शाखा' अर्थात् मूल के नष्ट हो जाने पर वृक्ष की शाखा-प्रशाखाएँ किस प्रकार अस्तित्व में रह सकती हैं? श्वेताम्बर परम्परा पूर्ण रूप में आगमों को विलुप्त नहीं मानती।

एकादशांगी की विद्यमानता अथवा विच्छेद के संबंध में भी निष्पक्ष दृष्टिकोण से विचार करने की आवश्यकता है। श्वेताम्बर परम्परा की यह मान्यता एवं आस्था है कि एकादशांगी का कतिपय अंशों में ह्रास तो अवश्य हुआ है, पर विच्छिन्न नहीं हुई है।

पूर्वज्ञान जैसे अत्यन्त महत्त्वपूर्ण एवं अतिविशाल ज्ञान का क्रमिक ह्रास तो युक्तिसंगत एवं बुद्धिगम्य हो सकता है, किन्तु बिना किसी असाधारण परिस्थिति अथवा विप्लवकारी घटना के यह कहा जाय कि अन्तिम दस पूर्वधर के स्वर्गस्थ होते ही दस पूर्व का ज्ञान विलुप्त हो गया, यह बात स्थानकवासी परम्परा को मान्य नहीं है।

श्वेताम्बर परम्परा के अनुसार-भगवान महावीर के मुखारविन्द से

प्रकट हुई इस दिव्य ध्वनि-"गौतम! मेरा धर्मसंघ पंचम आरक के अवसान काल के अन्तिम दिन तक रहेगा।" के अनुसार सिद्ध होता है कि मूल श्रमण परम्परा और जैन-धर्म का मूल स्वरूप, ये दोनों ही तीर्थ प्रवर्तन काल से आज तक अविच्छिन्न रूप से निरन्तर प्रवाहमान एक धारा के रूप में चले आ रहे हैं।

दिगम्बर परम्परा की ओर से मुनियों के नग्न रहने के पक्ष में यह युक्ति प्रस्तुत की गई कि धर्मतीर्थ की स्थापना करने वाले तीर्थंकर स्वयं नग्न रहते थे, अतः श्रमण को भी निर्वस्त्र ही रहना चाहिए। श्वेताम्बर परम्परा में मुनियों के लिए वस्त्र, पात्र, मुखवस्त्रिका, रजोहरण आदि धार्मिक उपकरणों की आवश्यकता पर बल दिया गया है। अपनी इस बात की पुष्टि के लिए यह युक्ति प्रस्तुत की गई कि द्वादशांगी के प्रथम एवं प्रमुख अंग आचारांग में मुनियों को एक वस्त्र, दो वस्त्र अथवा तीन वस्त्र, पात्र आदि रखने तथा साध्वियों को चार वस्त्र रखने का विधान किया गया है। इस प्रकार धर्मोपकरणों का स्पष्ट उल्लेख आगमों में विद्यमान है।

दिगम्बरत्व के पक्ष की पुष्टि हेतु वस्त्र को मुक्ति-प्राप्ति में बाधक तत्त्व बताकर 'स्त्रीणां न तद्भवे मोक्षः' इस सिद्धान्त की प्रतिष्ठापना का प्रयास किया गया, किन्तु स्थानकवासी परम्परा के अनुसार स्त्रियों में भी पुरुषों के ही समान अध्ययन, चिन्तन, मनन, तपश्चरण, संयमाराधन आदि सभी प्रकार की योग्यताएँ हैं, अतः "स्त्रीणां तद्भवे मोक्षः" यह सिद्धान्त सर्वमान्य होना चाहिए।

दिगम्बर परम्परा एकान्ततः जिनकल्प का, नग्नत्व का ही विधान मानती हैं। श्वेताम्बर परम्परा जम्बू स्वामी के मोक्षगमन के साथ जिनकल्प का विच्छेद मानती है। श्वेताम्बर स्थानकवासी परम्परा दशवैकालिक सूत्र के आधार पर (मुनियों के वस्त्र, पात्र, कम्बल, पादप्रोक्षण का उल्लेख देखकर) नग्न और उपधिसहित दोनों मानती है। स्थानकवासी परम्परा में वस्तुतः किसी वस्तु पर ममत्व भाव रखना परिग्रह माना गया है, जैसाकि भगवान महावीर ने कहा है-

"मुच्छा परिग्गहो वुत्तो" इइ वुत्तं महेसिणा।।

-दशवैकालिक 6/21

एक वर्ग नग्न मूर्तियों की पूजा-प्रतिष्ठा में विश्वास करता है तो दूसरा सवस्त्र मूर्तियों की पूजा प्रतिष्ठा में। दिगम्बर-मूर्ति आभूषण व चक्षु उन्मीलन से रहित होती है, जबकि श्वेताम्बर-मूर्ति आभूषण व चक्षु उन्मीलन सहित होती है।

तीसरावर्ग- मूर्तिपूजा का मूलतः ही विरोध करता है। वह मानता है-

ध्यान धूपं मनः पुष्पं, पंचेन्द्रिय हुताशनम्।
क्षमा जाप संतोष पूजा, पूजो देव निरंजनम्।।

द्रव्य पूजा हिंसामूलक होने से अमान्य है। भावपूजा अहिंसामूलक होने से मान्य है। स्थानकवासी परम्परा निरंजन व निराकार अध्यात्म-उपासना में ही विश्वास करती है।

श्वेताम्बर साधु-साध्वियों का जहाँ तक प्रश्न है, उनमें मूर्ति-पूजा में विश्वास करने वाला वर्ग मुखवस्त्रिका मुँह पर नहीं रखता, हाथ में रखता है। मान्यता की दृष्टि से श्वेताम्बर संघ की सभी सम्प्रदायों ने मुखवस्त्रिका को उपकरण के रूप में मान्य किया है। इसी वर्ग का एक उपवर्ग केवल वस्त्र के अंचल (टुकड़े) को मुखवस्त्रिका के रूप में काम लेता है व हाथ में दण्ड रखता है।

इसके विपरीत स्थानकवासी साधु मुख पर मुखवस्त्रिका रखते हैं। रजोहरण, पात्र व पुस्तकादि के अतिरिक्त वृद्धावस्था आदि कारण को छोड़कर सामान्यतः हाथ में दंड नहीं रखते।

जैन धर्म का भव्य भवन अहिंसा की आधारशिला पर अवस्थित है। आगमों में अहिंसा को संसार के समस्त प्राणिसमूह के लिए ममतामयी माँ की गोद, प्यासों के लिए पानी, भूखों के लिए भोजन और रोगियों के लिए औषधि से भी अधिक महत्त्वपूर्ण बताया गया है। प्रश्न यह है कि जब जिनालयों के निर्माण में सभी षड्जीवनिकायों का आरम्भ-समारम्भ होता है तो वे जिनालय तीर्थंकरों द्वारा प्ररूपित कैसे हो सकते हैं?

जैन धर्म में, आगमों में धर्म के नाम पर, मुक्ति के नाम पर, स्वर्ग के नाम पर छोटी-बड़ी किसी भी प्रकार की हिंसा का प्रवेश कभी कोई व्यक्ति न कर बैठे, इसीलिए सर्वज्ञ-सर्वदर्शी सभी तीर्थंकरों ने अपने-अपने धर्म-तीर्थ में सभी प्रकार की हिंसा के द्वार सदा-सदा के लिए बन्द करते हुए फरमाया है कि 'अपने जीवन की रक्षा, मान, सम्मान, पूजा, प्रतिष्ठा और यहाँ तक कि सभी प्रकार के सांसारिक दुःखों से सदा सर्वदा के लिए भी कोई मुमुक्षु किसी प्रकार की हिंसा न करे। जिन पृथ्वी, अप्, तैजस्, वायु एवं वनस्पति के एकेन्द्रिय स्थावर जीवों को उनके स्पर्श मात्र से मारणान्तिकी वेदना होती है, उन जीवों की कभी हिंसा न करे। क्योंकि इस प्रकार के स्थावर-एकेन्द्रिय जीवों की हिंसा भी हिंसा करने वाले व्यक्ति के लिए अहितकर एवं अनन्तकाल तक असह्य दारुण दुःखों से ओत-प्रोत संसार में भयावह भवाटवी में भटकाने वाली है।

अतः धर्म के नाम पर किसी भी हिंसा को स्थानकवासी परम्परा मान्य

नहीं करती। धर्म कार्य के निष्पादन के लिए भी पाँच स्थावर काय में से किसी भी प्राणी की हिंसा करना हिंसा ही है।

लोंकाशाह जीवन चरित्र में स्वर्गीय मरुधर केसरीजी ने लिखा है-

उपदेश अब देने लगे हैं, सिंह की सी नाद से।
श्रोता सहस्रों आ सुने, अति प्रेम से आह्लाद से।।
मूर्ति पूजा शास्त्र सम्मत, है नहीं सच मानिये।
अल्प से भी अल्प हिंसा, धर्म घातक जानिये।।

स्थानकवासी परम्परा की मौलिक मान्यताएँ

स्थानकवासी परम्परा की मौलिक मान्यताएँ इस प्रकार हैं-

(1) 32 आगम ही प्रमाण ग्रन्थ हैं–

तीर्थंकर भगवान केवलज्ञान के बाद अर्थरूप से देशना फरमाते हैं, जिसे सुनकर गणधर सूत्र रूप से रचना करते हैं, वे सूत्र, आगम कहलाते हैं। १० पूर्वी तक की सारी रचनाएँ आगम हैं। १० पूर्वी से १ पूर्वी तक की वही रचना स्वीकार होगी जो आगम से विरोधी न हो। १ पूर्वी के बाद के कोई ग्रन्थ आगम नहीं। वीर निर्वाण संवत् १००० के बाद का कोई ग्रन्थ आगम रूप में मान्य नहीं है।

नन्दीसूत्र में "अभिण्णदसपुव्विस्स सम्मसुअं, तेणं परं भिण्णेसु भयणा।" सम्पूर्ण दस पूर्वधारी द्वारा रचित ग्रन्थ भी सम्यक् श्रुत ही होता है। उससे कम अर्थात् कुछ कम दस पूर्व और नव आदि पूर्व का ज्ञान होने पर विकल्प, अर्थात् सम्यक् श्रुत हो और न भी हो।

विक्रम संवत् १०८४ दुर्लभराज वनराज चावड़ा की राजसभा, अणहिलपुरपट्टन में वर्धमान सूरि के शिष्य जिनेश्वर सूरि ने प्रश्न पूछा- 'राजन्! आप अपने बनाए मनमाने नियमों से राज्य का संचालन करते हो अथवा अपने पूर्वजों द्वारा निर्धारित रीति-नीति, मर्यादा, राजनीति के सिद्धान्तों से?' जब अपेक्षित उत्तर मिला तो चैत्यवासी परम्परा द्वारा रखी सभी दलीलों, तर्कों और छल-छद्मों को भस्मीभूत करके राजसभा में राजा ने मुहर-छाप लगा दी- 'ये खरे हैं, क्योंकि ये प्रभु द्वारा उपदिष्ट, पूर्वधरों द्वारा रचित आगम को प्रमाण मानकर उसी के अनुरूप साधना करते हैं। एक स्पष्ट विभाजन रेखा खींची गई- ३२ आगम प्रमाण हैं तथा निर्युक्ति, भाष्य, चूर्णि, अवचूर्णि और टीकाओं के वे अंश स्वीकार है, जो आगम से विरोधी नहीं हैं। आगम विरुद्ध अंश अमान्य हैं।

आगम का बहुत बड़ा भाग लुप्त होने पर भी शेष उपलब्ध अंश जीवन का उद्धार करने में समर्थ है। अतः स्थानकवासी परम्परा शुद्ध परम्परा है।

कपोल कल्पित, स्वरचित, छद्मस्थ की वाणी में अनेक दूषण संभव हैं, जबकि आप्त वाणी निर्दोष होती है। अतः दोषरहित आगम मान्य करना सत्य-धर्म की पहचान है।

(2) सावद्य योग से विरत ही धर्मतीर्थ है–

भगवती सूत्र शतक २० उद्देशक ८ में-

तित्थं पुण चाउव्वण्णाइण्णे समणसंघे, तं जहा– समणा समणीओ सावगा साविगाओ।

तीर्थ चार प्रकार के वर्णों(वर्गों) से युक्त श्रमणसंघ है। यथा- श्रमण, श्रमणियाँ, श्रावक और श्राविकाएँ। श्रमण-श्रमणियों में सर्व सावद्य योग का त्याग होता है। श्रावक-श्राविकाओं में सावद्य योग का अंशतः त्याग होता है।

तीर्थ– जिसके द्वारा तिरा जाय। अर्थात् जिसके द्वारा संसार समुद्र से तिरा जाय, वह तीर्थ है। मागध, वरदाम, प्रभास आदि द्रव्य तीर्थों के नाम आगम में हैं, परन्तु शत्रुंजय, गिरनार आदि तीर्थों के द्वारा जीव को कोई विशेष उपलब्धि नहीं हो सकती।

भाव तीर्थ श्रेष्ठ होता है, उत्तम होता है। एक बार कर्म अथवा दोष निकलने पर संसार में घूमना नहीं पड़ता। आत्मोत्थान के लिए व्रतों को ग्रहण करना भाव तीर्थ है। अतः पानी (नदी आदि), वृक्ष, पर्वतादि तीर्थ नहीं। उनमें तिराने की क्षमता नहीं है।

भगवान के समवशरण में जाकर भी कितने ही जीव नहीं तिर सके, तब द्रव्य तीर्थ तो पूरी तरह निष्फल है। १८ पाप का त्यागी सावद्य योग से विरत धर्मतीर्थ है। तिरने का एकमात्र साधन पापों का त्याग है। अतः अग्नि, जल, वनस्पति आदि छः काय की हिंसा पाप है, संसार बढ़ाने वाली है, तिराने वाली नहीं।

(3) सर्व सावद्य योग से विरत ही वंदनीय–पूजनीय होता है–

पाँच महाव्रत, पाँच समिति और तीन गुप्ति का पालन करने वाले, छः काय के जीवों की रक्षा करने वाले, छः जीवनिकाय के जीवों का आरम्भ समारम्भ न करने वाले, न कराने वाले और न ही इस प्रकार का कार्य करने वाले का अनुमोदन करने वाले, मान-प्रतिष्ठा की भावना तथा आडम्बर से रहित जो आत्म-साधना में तल्लीन रहते हैं, ऐसे सर्व सावद्ययोग से विरत ही वंदनीय-पूजनीय होते हैं। आगम में 'सुसाहुणो गुरुणो' अर्थात् समस्त सुसाधु मेरे गुरु हैं, ऐसा वर्णन आता है।

(दशवै. अध्ययन ६ में वर्णित) श्रमणाचार के अठारह स्थानों का

यथावत् पालन करने वाले, साज-शृंगार से रहित, जीवादि तत्त्वों के यथार्थ स्वरूप के ज्ञाता, भगवान की आज्ञा में सदा रत रहने वाले छः काय के रक्षक, सावद्य योग से विरत ही वंदनीय-पूजनीय हैं।

सर्व जीवों से मैत्री, द्वेष किसी से भी नहीं, किन्तु वंदनीय, पूजनीय, नमस्करणीय तो पाप के त्यागी ही हैं।

(4) जड़ पदार्थों में भगवद्दशा तो दूर सावद्य योग के त्याग का आरोपण भी सम्भव नहीं–

भगवान सचेतन हैं, मूर्ति जड़ है। भगवान अरूपी हैं, मूर्ति रूपी है। जड़ अवन्दनीय है, भगवान वन्दनीय हैं। जिनेश्वर प्रभु जन्म-जरा-मृत्यु आदि अनन्त दुःखों से ओत-प्रोत इस संसार में कभी लौट कर नहीं आयेंगे तो फिर रत्न, स्वर्ण, रजत, कांस्य, पीतल, पत्थर आदि से निर्मित मूर्तियों में मन्त्रों द्वारा जिनेश्वर प्रभु का आह्वान कैसा? प्राण प्रतिष्ठा कैसी? क्या एकादशांगी में, निर्ग्रन्थ प्रवचन में एक भी ऐसा मन्त्र है, जिसे श्रमण भगवान महावीर ने सिद्ध क्षेत्र में विराजमान जिनेश्वरों को मूर्ति में आह्वान के लिए, मूर्ति में (उन जन्म-जरा-मृत्युंजयी अजन्मा जिनेश्वरों की) प्राण प्रतिष्ठा के लिए प्ररूपित किया हो? नहीं, क्योंकि एकादशांगी में एक भी ऐसा मन्त्र विद्यमान नहीं है।

प्रकाश तो सूर्य से ही होगा, सूर्य की मूर्ति से कदापि नहीं। मूर्ति सूर्य की है, पर अन्धकार पूर्ण गृह में रखी हुई है, उस दशा में उस सूर्य की मूर्ति के द्वारा दूसरों को प्रकाश दिये जाने की बात तो दूर, उसके लिए स्वयं को प्रकाशित करना भी संभव नहीं हो सकेगा। उसको देखने के लिए सूर्य के प्रकाश की अथवा दीपक आदि किसी अन्य प्रकाश की अनिवार्य रूपेण आवश्यकता होगी।

अतः निरंजन, निराकार, अविकार, अजन्मा, अमूर्त्त जिनेश्वर भगवान का जड़ पदार्थों में आरोपण कैसा?

सार्वजनिक स्थल के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर अन्तिम संस्कार नहीं करना। चबूतरा, पगल्या नहीं बनाना। फोटो, कलैण्डर, लॉकेट आदि कोई भी वंदनीय- पूजनीय नहीं, क्योंकि जड़ में योग अथवा सावद्य योग त्याग का प्रश्न ही नहीं। सावद्ययोग त्याग रूपी संवर तो सन्नी पंचेन्द्रिय कर्मभूमिज आर्य मनुष्य के अलावा कहीं भी संभव नहीं, फिर भगवद्दशा का तो कहना ही क्या?

कदाचित् कोई परिचय के रूप में प्रस्तुत करे तो प्रथम कक्षा का बालक तो Apple को देखकर 'A' पहचानता है। अनार देखकर 'अ' पहचानता है, पर B.A., M.A. के विद्यार्थी को उसकी आवश्यकता नहीं है।

जड़ को चेतन मानना, रूपी को अरूपी मानना, संसारी को मुक्त

मानना आदि अनेक प्रकार के मिथ्यात्व भी लगने का प्रसंग होता है।

(5) 5 पद भाव निक्षेप की अपेक्षा ही है–

(अनुयोग द्वार में, तत्त्वार्थ सूत्र में) निक्षेप ४ प्रकार के बतलाये हैं- नाम, स्थापना, द्रव्य और भाव। भाव निक्षेप २ प्रकार का है- १. आगमतः २. नो आगमतः।

शब्द के साथ भाव जुड़े वह आगमतः।

प्रतिक्रमण, प्रतिलेखन आदि क्रियाएँ नो आगमतः।

अनुयोग द्वार सूत्र में आवश्यक पर निक्षेप के प्रसंग में एक अत्यन्त महत्त्वपूर्ण तथ्य ध्वनित होता है- नाम, स्थापना के साथ द्रव्य आवश्यक में भी पूज्यता नहीं। पूरी तरह शुद्ध उच्चारण के साथ भी अनुपयोग है, अतः वहाँ 'जस्स' शब्द है- अर्थात् उसे सामान्य संबोधन मिला- अर्थात् भाव को ही प्रधानता दी गई।

द्रव्य, वेष व्यवहार में उपयोगी होता है। परमार्थतः पंच परमेष्ठी में गुणी-महापुरुषों का ही समावेश होता है।

परमेष्ठी शब्द ही स्पष्ट है- 'परमे भावे तिष्ठति असौ परमेष्ठी।' परम भाव में, आत्म भाव में रहता है, जो शान्त है, वह सन्त है- अर्थात् जिसके कषाय के कम से कम तीन चौक का उदय नहीं, सर्व सावद्य योग का त्याग है।

भाव की ही प्रधानता है। इसी शुद्ध मान्यता का निर्वहन करते हुए छठे गुणस्थान व उससे ऊपर आत्मभाव में लीन महापुरुषों को पंच परमेष्ठी में समाविष्ट किया है। अतः भाव निक्षेप की महत्ता स्पष्ट है।

वन्दनीय तो व्यक्ति गुणों से ही होता है। तीर्थंकर बनने वाली आत्मा भी तब ही वन्दनीय बनती है जब वह चारित्र गुण को धारण करती है। चारित्र के अभाव में चतुर्थ गुणस्थानवर्ती देव भी वंदनीय नहीं होता, अतः भाव निक्षेप ही वन्दनीय है।

(6) मुखवस्त्रिका

त्रिविध-गुण-संयुक्ता, लोके वै मुखवस्त्रिका।
प्रथमं जैन चिह्नं स्यात्, रक्षणं जीव-सूत्रयोः।।

१. स्थानकवासी परम्परा की पहचान मुखवस्त्रिका से होती है, जो १६ अंगुल चौड़ी और २१ अंगुल लम्बी होती है। जीव-यतना के लिए डोरे सहित मुखवस्त्रिका मुख पर बाँधनी चाहिए।
२. नभ-चर जीव जो अनायास उड़कर खुले मुँह में गिर कर मरं जाते हैं, ऐसे मक्खी, मच्छर आदि जीवों की रक्षा मुखवस्त्रिका करती है।
३. शास्त्रों का पठन-पाठन करते-करवाते समय मुख में से थूँक उछल कर न

गिरे।

(7) स्थानकवासी परम्परा में जादू, टोना, यन्त्र, मन्त्र, आडम्बर नित नये विधानों का प्रचलन, थोथे चमत्कारों एवं भौतिक प्रलोभनों का कोई स्थान नहीं है।

(8) स्वाध्याय, ध्यान, चिन्तन, मनन, स्तवन, आत्म-रमणरूपी भाव पूजा ही महत्त्वपूर्ण है।

(9) काल की बदली हुई परिस्थितियों में आगमसम्मत श्रमणाचार का पालन हो सकता है।

(10) दया-भाव से गरीबों को दान देना पाप नहीं है, अपितु पुण्य का कारण है।

(11) स्थानकवासी परम्परा सामायिक, स्वाध्याय और साधना पर विशेष रूप से आधारित है, मन्दिर आदि पर नहीं।

(12) स्थानकवासी परम्परा के अनुसार-'आरम्भे णत्थि दया' आरम्भ में दया नहीं है। धर्म के नाम पर हिंसा को कोई स्थान नहीं है। सभी जीव जीना चाहते हैं, मरना कोई नहीं चाहता। सब में हमारे समान आत्मा है। एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय तक किसी भी जीव की हिंसा न हो, इसका विशेष खयाल रखने का उपदेश भगवान ने शास्त्रों में स्थान-स्थान पर दिया है। अतः धर्म के नाम पर धूप, दीप, अगरबत्ती, सचित्त फूल, पानी आदि का उपयोग करना निषिद्ध है।

(13) यतना ही धर्म का प्राण है। इसलिए छह काय के जीवों के अहिंसा-पालन में यतनावान् रहना चाहिए। मन्दिर आदि बनाना, धूपादि देना, चंवर ढुलाना, नृत्यादि करना, फूल चढ़ाना आदि क्रियाएँ यतना को समाप्त करने वाली हैं।

(14) सार्वजनिक स्थल को छोड़ साधु-साध्वी की देह का अन्तिम संस्कार अन्यत्र करने से उनके ऊपर चैत्य, स्मारक, स्तूप या चबूतरा आदि बनाने की प्रथा चालू हो जाती है, जिन पर लोग धूप, दीप, अगरबत्ती आदि करते हैं। विशेष स्थल जड़ पूजा-मिथ्यात्व में निमित्त बन सकता है।

आज जैन धर्म संघ में प्रचलित सभी सम्प्रदाय, संघ अथवा आम्नायें अपनी-अपनी मान्यताओं को भगवान महावीर द्वारा प्ररूपित विशुद्ध धर्म का रूप मानती हैं। ऐसी स्थिति में श्रमण भगवान महावीर द्वारा अपने तीर्थ प्रवर्तन काल में प्ररूपित श्रमणाचार का एवं श्रावक-श्राविकाओं के आचार-विचार का क्या मूल शुद्ध स्वरूप हो सकता है, इसका निर्णय भी आचारांग आदि आगमों के आधार पर ही करना चाहिए। आगमों में भगवान महावीर द्वारा प्ररूपित धर्म

के वास्तविक स्वरूप एवं आचार-विचार की कसौटी पर जो स्वरूप एवं आचार-विचार खरा उतरे, वही वस्तुतः जैन धर्म का वास्तविक स्वरूप एवं श्रमणों आदि का विशुद्ध आचार-विचार है।

यदि हम वास्तव में सच्चे हृदय से अपनी खोई हुई समृद्धि, प्रतिष्ठा और गौरव-गरिमा को पुनः प्राप्त करना चाहते हैं तो हमें अपनी स्थानकवासी परम्परा का वास्तविक ज्ञान करना होगा। वह ज्ञान हमें अपने इतिहास के द्वारा प्राप्त होगा। क्योंकि इतिहास वह सीढ़ी है जो सदा ऊपर की ओर ही चढ़ाती है, वह कभी नीचे नहीं गिरने देती।

उन्नति के इस मूलमन्त्र को श्रद्धेय जैनाचार्य श्री हस्तीमल जी महाराज साहब ने अच्छी तरह अनुभव करने के पश्चात् 'जैन धर्म का मौलिक इतिहास' के रूप में एक महान् सम्बल और अक्षय पाथेय हमें प्रदान किया है, जिसमें जीवन को समुन्नत बनाने वाले प्रशस्त मार्ग के साथ-साथ 'सत्यं शिवं सुंदरम्' के दर्शन होते हैं। *-धर्मपत्नी श्री ईश्वरलाल जी चोरड़िया,*

जामनेर (महाराष्ट्र)

मुक्तक मुक्ता

दिलीप धींग

(१) *गुलाब*

वृष्टि नहीं होगी गर बादलों में बिखराव है।
सम्प्रदाय नहीं, सम्प्रदायवाद खराब है।
विविधताओं से भरा अनेकान्तवादी समाज,
पंथों की पंखुड़ियों का खिलता गुलाब है।

(२) *चिराग*

न अहंकार है न क्रोध की आग है।
समता ही जिसका जीवन पराग है।
स्व-पर कल्याण हेतु जो सदा है तत्पर।
पावन-जीवन उसका जलता चिराग है।

(३) *आत्मार्थी*

अकर्मण्य व्यक्ति कभी पुरुषार्थी नहीं होता है।
परमार्थी व्यक्ति कभी स्वार्थी नहीं होता है।
आत्म-सिद्धि ही लक्ष्य तो भेद की दीवारें क्यों?
सच्चा आत्मार्थी कभी मतार्थी नहीं होता है।

-बम्बोरा, जिला-उदयपुर (राज.)

ठाणेणं मोणेणं झाणेणं

डॉ. पानमल सुराणा

वीतराग वाणी

जिन महापुरुषों ने अपने चारों घनघाती कर्मों का पूर्ण क्षय करके केवलज्ञान की प्राप्ति करली है उनके आप्तवचन सदा सत्य, प्रामाणिक, शंकारहित, निर्विवाद एवं जन-कल्याणकारी होते हैं। तीर्थंकर देव केवलज्ञान प्राप्ति के पहले कभी देशना नहीं देते। वे केवलज्ञान प्राप्ति के पश्चात् त्रिलोकों (अधोलोक, मध्यलोक और ऊर्ध्वलोक) एवं अलोक तथा त्रिकाल (भूत, वर्तमान एवं भविष्यकाल) के युगपत् रूप से सर्वद्रष्टा एवं सर्वज्ञ बनने के उपरान्त ही देशना देते हैं। अतः वीतरागवाणी सदा अटल सत्य होती है, उसमें रत्तीभर शंका-संशय की कोई गुंजाइश नहीं हो सकती।

जिनेश्वर देव अर्थ रूप आगम वाणी (अत्थागमे) फरमाते हैं, गणधर उस प्रत्यक्षदर्शी तीर्थंकरों की वाणी को ग्रहण कर चतुरमाली की तरह उसे सूत्र रूप में (सुत्तागमे) गूंथते हैं, सूत्र की रचना करते हैं और शास्त्रकार उन्हें अर्थ और सूत्र दोनों रूप में (तदुभयागमे) हमारे सामने रखते हैं।

द्वादशांगी की तरह 'आवश्यक सूत्र' भी जिनेश्वर देव द्वारा भाषित होने से आगम वाणी है। इसमें विद्यमान कायोत्सर्ग सूत्र का पाठ सामायिक, चउवीसत्थव, प्रतिक्रमण, प्रायश्चित्त आवश्यकों में बोला जाता है जिसमें 'ठाणेणं मोणेणं झाणेणं' शब्दों का समावेश है।

कायोत्सर्ग का अर्थ–

'कायोत्सर्ग' में दो शब्द-काय+उत्सर्ग हैं। काय=शरीर (और उसकी चंचल क्रियाएँ) और उत्सर्ग=त्याग। अर्थात् कायोत्सर्ग में साधक शारीरिक विकल्पों और शरीर के मोह का त्याग कर आत्मभाव में रमण करने का प्रयत्न करता है।

'तस्सउत्तरी' पाठ अनन्त काल से दूषित हुई आत्मा को उत्कृष्ट करने (उत्तरीकरण) का सूत्र है। इसीलिए इसे आत्म-शुद्धि का सूत्र भी कहा गया है। इसका मूलमन्त्र कायोत्सर्ग है, जिसमें काय-शरीर (जिसमें मन और वाणी भी समाहित है) के समस्त व्यापारों का त्याग करके, आत्मा को कषायों से अलग करके निश्चल होकर मौन रहते हुए ध्यानस्थ अवस्था में चित्त को रमाया जाता है। कषायों अथवा मन, वचन और काया के व्यापारों का उद्वेग रहते चित्त

ध्यानस्थ नहीं हो संकता।

कायोत्सर्ग (आत्मशुद्धि) के प्रयोजन–

तस्सउत्तरी के पाठ में कायोत्सर्ग के पाँच प्रयोजन बताये हैं।

१. तस्सउत्तरीकरणेणं- उस (दूषित आत्मा) को उत्कृष्ट करने या श्रेष्ठ बनाने के लिए।

२. पायच्छित्तकरणेणं- (पूर्व में किये पाप कर्मों का स्मरण करते हुए उन पाप कर्मों को विनष्ट करने, चित्त (मन) को विशुद्ध बनाने हेतु) प्रायश्चित्त या पश्चात्ताप करने के लिए।

३. विसोहीकरणेणं- (आत्मा की विशेष) विशुद्धि करने, उसे निर्मल बनाने के लिए।

४. विसल्लीकरणेणं- (दूषित आत्मा को) शल्यरहित करने के लिए। शल्य= माया, कपट, भोगवृत्ति एवं मिथ्यादृष्टि रूपी कांटा जो चित्त पर आच्छादित रहता है।

५. पावाणं कम्माणं निग्घायणट्ठाए-(संचित) पाप कर्मों का नाश करने, उन्हें क्षय करने के लिए।

कायोत्सर्ग का उद्देश्य

अनन्त काल से पाप-मल से मलिन हुई आत्मा एक-दो प्रयत्नों से ही शुद्ध नहीं हो जाती। उस मलिन आत्मा की शुद्धि के लिए साधक को बार-बार प्रयत्न करना पड़ता है। इन निरन्तर प्रयत्नों के अभ्यास से ही आत्मा अपने शुद्ध स्वरूप को प्राप्त कर सकती है। निरन्तर आत्म-शोधन के इन प्रयत्नों को संस्कारीकरण कहते हैं जिन्हें तीन भागों में विभक्त किया जा सकता है-

1. **दोष मार्जन संस्कार**– इसमें आलोचना और प्रतिक्रमण के द्वारा स्वीकृत व्रतों के प्रमादजन्य दोषों का मार्जन (सफाई) किया जाता है।

2. **हीनांगपूर्ति संस्कार**– इसमें कायोत्सर्ग के द्वारा पापमल की अवशेष सूक्ष्म मलिनता को दूर करने, आत्मा का निःशल्यीकरण करने का संकल्प किया जाता है।

3. **अतिशयाधायक संस्कार**– इसमें प्रत्याख्यान के द्वारा आत्मशक्ति में द्रुतगति जागृत करके अपने स्वीकृत व्रतों को अभग्न-अखण्ड (अभग्गो) और अविराधित (अविराहियो) बनाया जाता है।

मन, वचन और काया की चंचलता हटाकर, हृदय में वीतराग प्रभु की स्तुति का प्रवाह बहाकर, अपने मन को अशुभ व्यापारों से परे रखकर शुभ व्यापारों में केन्द्रित कर अपूर्व समाधि-भाव की प्राप्ति करना ही उत्तरीकरण

सूत्र का मंगलकारी उद्देश्य है।

कायोत्सर्ग करने की विधिवत् प्रतिज्ञा

कायोत्सर्ग सूत्र एक विधिवत् प्रतिज्ञा है जिसमें 'ठाणेणं मोणेणं झाणेणं' शब्दों का समावेश है। इन शब्दों का अवलोकन-विश्लेषण करना आवश्यक है, अन्यथा प्रतिज्ञा के भग्न और विराधित होने की संभावना बन सकती है।

ठाणेणं– शरीर को (एक स्थान पर) स्थिर, निश्चल और निस्पन्द रखते हुए। शरीर की समस्त क्रियाओं– हलन-चलन आदि से हटकर ही ध्यान किया जा सकता है। इसमें शरीर को हिलाना, हाथ-पैर फैलाना (पसारना) या संकुचित करना आदि क्रियाओं का परित्याग करने की प्रतिज्ञा का विधान है। इसमें सूक्ष्म रूप में भी शरीर के अंग– हाथ-पैर, दृष्टि आदि अथवा कफ को ऊँचा-नीचा न करना भी शामिल है। परन्तु ऐसी स्थिति बन जाने पर इन्हें कायोत्सर्ग प्रतिज्ञा में आगारों के रूप में शामिल किया गया है।

मोणेणं– मौन धारण करके, वाणी से कोई उच्चारण न करके। इसमें वाणी के हलन-चलन न होने देने की प्रतिज्ञा है।

झाणेणं– चित्त को ध्यानस्थ अवस्था में ले जाकर। इसमें साधक मन को आत्म- भाव में लगाकर जब तक अरिहन्त परमात्मा को नमस्कार करके ध्यान का समापन नहीं कर लेता, तब तक ध्यान में अपनी आत्मा को (पाप-कर्मों से) अलग रखने की प्रतिज्ञा (अप्पाणं वोसिरामि) करता है।

कायोत्सर्ग प्रतिज्ञा की अवधि

कुछ शास्त्रकारों के अनुसार कायोत्सर्ग प्रक्रिया करने की कोई निश्चित काल सीमा नहीं है। मौन रखते हुए जब तक चित्त ध्यानस्थ अवस्था में रमण करता रहे, कायोत्सर्ग में ध्यान चलता रहता है। कायोत्सर्ग प्रतिज्ञा 'जाव अरिहंताणं भगवंताणं' जब तक अरिहंत भगवान को 'नमोक्कारेणं न पारेमि' नमस्कार करे कायोत्सर्ग ध्यान की इतिश्री न कर लेता, तब तक (कायोत्सर्ग-प्रतिज्ञा) चलती रहती है। इसका समापन 'नमो अरिहताणं' बोल कर किया जाता है।

इस संबंध में जैन जगत के सुप्रसिद्ध सन्त उपाध्याय अमरगुनिजी का कथन द्रष्टव्य है-

"........'नमो अरिहंताणं' पढ़ने तक कायोत्सर्ग का काल है, इसका यह अर्थ नहीं कि कायोत्सर्ग का कोई निश्चित काल नहीं, जब जी चाहा तब 'नमो अरिहंताणं' पढ़ा और कायोत्सर्ग पूर्ण कर लिया। 'नमो अरिहंताणं' पढ़ने का तो यह भाव है कि जितने काल का कायोत्सर्ग किया जाय अथवा जो कोई

निश्चित पाठ (जैसे ईर्यापथिक सूत्र, लोगस्स सूत्र, अतिचार आदि) पढ़ा जाय, वह पूर्ण होने पर ही समाप्ति सूचक 'नमो अरिहंताणं' पढ़ना चाहिए।"

कायोत्सर्ग के भेद

कायोत्सर्ग दो भागों में विभक्त किया जा सकता है- आगार सहित एवं आगार रहित।

आगार सहित (सागारी) कायोत्सर्ग- इसका प्रयोग सामायिक, प्रतिक्रमण, अतिचार आदि में द्रष्टव्य है। शारीरिक स्थिरता में बाधक, कुछ प्राकृतिक एवं अनिच्छित शारीरिक क्रियाओं का आगार (छूट) इसमें समाहित है। आगार मुख्यतः बारह प्रकार के बताये गये हैं-

१. ऊससिएणं- उच्छ्वास (ऊँचा) श्वास लेना (Inspiration)
२. नीससिएणं- निःश्वास, श्वास नीचे छोड़ना (Expiration)
३. खासिएणं- खांसी आना (Coughing)
४. छीएणं- छींक आना (Sneezing)
५. जंभाइएणं- जम्भाई, उबासी आना (Yawning)
६. उड्डूएणं- डकार आना (Belching)
७. वायनिसग्गेणं- अपान या अधो वायु (Flatus) निकलना
८. भमलीए- चक्कर आना (Giddiness Vertigo)
९. पित्तमुच्छाए- पित्त - प्रकोप से मूर्च्छित होना (Bilious unconsciousness)
१०. सुहुमेहिं अंगसंचालेहिं- सूक्ष्म रूप में भी अंग का संचार होना, हिलना (Minute movement of body)
११. सुहुमेहिं खेलसंचालेहिं- सूक्ष्म रूप में कफ का संचार होना (Minute movement of sputum (Phlegm) or saliva)
१२. सुहुमेहिं दिट्ठिसंचालेहिं- सूक्ष्म रूप में दृष्टि का संचार होना, पलक झपकना (Minute movement of Eyes, Eyelids or Eyebrows)

पुस्तकों में उपर्युक्त बारह प्रकार के आगार बताए गए हैं, किन्तु आगारों की संख्या बारह तक ही सीमित नहीं है, और भी है। यह सूत्र में 'एवमाइएहिं' इत्यादि (और भी) शब्द से ज्ञातव्य है। उदाहरणार्थ-हिचकी (Hicough) आना, मुंह में लार आना (Salivation) जिसे स्वतः ही निगला जाता है, शरीर पर खुजली आना (Itching) आदि। इसमें अग्नि,

चोर-डाकू, सिंह, सर्प आदि के प्रकोप से खुद की एवं अन्य लोगों की सहायतार्थ कायोत्सर्ग भंग करना आगारों में सम्मिलित किया जा सकता है।

साधक कितना ही दृढ़ चित्त क्यों न हो, शरीर के कुछ व्यापार तो बराबर होते ही रहते हैं- जैसे श्वासोच्छ्वास कभी बन्द नहीं होता, चलता ही रहता है। अतः कायोत्सर्ग की प्रतिज्ञा में उक्त आगारों का विधान करने से कायोत्सर्ग की प्रतिज्ञा भग्न होने का दोष नहीं लगता। यहां 'अभग्गो अविराहिओ' की प्रतिज्ञा है। अभग्गो(अभग्न) का अर्थ पूर्णतः नष्ट नहीं होना है और अविराहिओ(अविराधित) का अर्थ देशतः (अंशतः) नष्ट नहीं होना है।

आगार रहित कायोत्सर्ग– सम्पूर्ण रूप में आगार रहित कायोत्सर्ग संभव नहीं लगता, क्योंकि श्वासोच्छ्वास जैसी प्रक्रिया तो निरन्तर चलती ही रहती है। इसके अतिरिक्त, कुछ स्वाभाविक शारीरिक प्रक्रियाओं का जिनका वर्णन ऊपर किया जा चुका है, निरोध सम्भव नहीं है। हाँ, अधिकांशतः इन आगारों पर नियन्त्रण भी किया जा सकता है जैसे खाज-खुजली, कफ-पित्त, अंग, नेत्र का सूक्ष्म संचालन भी अभ्यास के द्वारा नियन्त्रण में लाया जा सकता है। इन आगारों के कदाचित् घटित हो जाने पर कायोत्सर्ग की प्रतिज्ञा में दोष न लगे इस उद्देश्य से शास्त्रकारों ने आगारों के विधान की रचना की है। यही कायोत्सर्ग का शुद्ध स्वरूप है। इसका अर्थ कदापि यह नहीं है कि हम कायोत्सर्ग में इन आगारों का निरंकुश सेवन करें, केवल इसलिए कि इन विषयों के आगार तो रख ही लिए हैं।

प्रायः पूर्णतः कायोत्सर्ग के अनेक उदाहरण प्रस्तुत किए जा सकते हैं-

१. भ. महावीर जब कायोत्सर्ग मुद्रा में थे तब गोशालक ने उनके कानों में कीलें लगाई थी जिसे भगवान ने समभाव से परीषह मान कर सहन कर लिया।

२. भ. पार्श्वनाथ ने भी कायोत्सर्ग अवस्था में मेघमाली (पूर्व भवी कमठ तापस) द्वारा दिए गए घोर कष्टों को समभाव से सहन कर लिया।

३. गजसुकुमाल के सिर पर सोमिल ब्राह्मण ने गीली मिट्टी की पाल बांधकर धधकते अंगारे रख दिये थे, किन्तु गजसुकुमाल ने अपने श्वसुर सोमिल ब्राह्मण पर लेशमात्र भी द्वेष न करते हुए कायोत्सर्ग मुद्रा में ही इस विकट परीषह को सहन करते हुए सिद्ध, बुद्ध और मुक्त हो गए।

-1-D, Shangrila Appartments, 61, Jatin Das Road, Kolkata-700029

जीवन में यदि कुछ मूल्यवान है, तो वह है–स्वयं का मूल्य। स्वयं के मूल्य से बढ़कर दुनिया में और कोई मूल्यवान हो ही नहीं सकता।

-भगवान महावीर

देव तो मेरे अरिहंत हैं, पर.....

श्री उदयमुनि जी म.सा.

डॉ. उदयलाल जी जारोली से जिनवाणी के पाठक सुपरिचित हैं। आप अब डॉ. उदयमुनि जी महाराज बन कर मेवाड़ क्षेत्र में विचरण करते हुए धर्म-प्रभावना कर रहे हैं। प्रस्तुत है 'देव' के संबंध में आपका विचारपूर्ण प्रेरक लेख। -सम्पादक

**''अरिहंतो महदेवो जावज्जीवाए सुसाहुणो गुरुणो,
जिणपण्णत्तं तत्तं, इय समत्तं मए गहियं।।''**

जब तक जीऊँ-अरिहंत परमात्मा मेरे देव हैं, सुसाधु मेरे गुरु हैं और जिन प्रणीत तत्त्व ही सारभूत है- इन तीन को मैं ग्रहण करता हूँ।

व्यवहार सम्यक्त्व के ६७ बोल में इन तीन तत्त्वों को ग्रहण करने से व्यवहार सम्यक्त्व कही जाती है। यह निश्चय सम्यक्त्व प्रकट करने हेतु निमित्त या सहायक कारण है।

इन तीन तत्त्वों को यथार्थ जानना और समझना होगा। इनमें प्रथम है- देव। देवाधिदेव, चौंसठ इन्द्रों- नरेन्द्रों के पूजनीय, वंदनीय श्री अरिहंत परमात्मा, तीर्थंकर परमात्मा ही मेरे देव हैं। वे मेरे परम इष्ट हैं, परम आराध्य हैं। जिन्होंने राग-द्वेष, कामादि शत्रुओं पर विजय प्राप्त कर ली है, ज्ञानावरण, दर्शनावरण, मोहनीय, अन्तराय ऐसे चारों घाती कर्मों का नाश करके अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र (परम वीतरागता) और अनन्त वीर्य प्रकट कर लिया उन्हें अरिहंत परमात्मा जानें। जिन्होंने पूर्व में तीर्थंकर गोत्र कर्म का उपार्जन किया हो उनके उस कर्म के उदय से, केवलज्ञान होने के बाद तीर्थ की स्थापना होती है। साधु, साध्वी, श्रावक, श्राविका रूप तीर्थ के वे नायक, तीर्थपति, तीर्थंकर कहलाते हैं।

तीर्थंकर आधि, व्याधि व उपाधि से ग्रस्त तथा जन्म, जरा व मृत्यु से पीड़ित-दुःखी जीवों को बोध देते हैं, मुक्ति का उपाय बताते हैं। वे परम सद्गुरु हैं, परम उपकारक है, सामान्य केवली उपदेश नहीं देते। अरिहंत पद में दोनों सम्मिलित हैं।

प्रथम पद में १२ गुण कहे जाते हैं वे तीर्थंकर परमात्मा की अपेक्षा से हैं। उनमें चार आभ्यन्तर और आठ बाह्य होते हैं। अनन्त ज्ञान, अनन्त दर्शन, अनन्त चारित्र और अनन्त वीर्य के धारक अरिहंत कहलाते हैं। ये उनके आभ्यन्तर गुण हैं। स्फटिक सिंहासन, छत्र, चंवर, भामण्डल, अशोकवृक्ष, देवदुदुंभि,कुसुमवृष्टि,दिव्य ध्वनि ऐसे आठ गुण बाह्य हैं, जो तीर्थंकर के होते हैं।

अरिहंत ही सिद्ध होते हैं। नाम, गोत्र, आयुष्य और वेदनीय ये चार

अघाती कर्म नष्ट होने पर ये मोक्ष में चले जाते हैं। वहाँ वे अनन्त अव्याबाध सुख में सदा के लिये लीन हो जाते है।

ऐसे देव को परम इष्ट मानने वाला अन्य किसी देवी देवता को नहीं मान सकता। प्रश्न उठा कि वह तो गृहस्थ है उसके कुलदेवी, कुलदेवता होते हैं, कुटुम्ब का पूर्वज ही देव या देवी बनता है, कुलदेवी भी होती है, उन्हें पूजना पड़ता है,बच्चे के बाल उतारने 'देश'में जाना पड़ता है,बाल उतारकर प्रीतिभोज देना पड़ता है, पूर्वजों की मान्यता है। व्यापारी हैं-लक्ष्मी की पूजा करनी पड़ती है। ब्याह-शादी के समय गणपति स्थापना नहीं करें तो मंगल अमंगल हो जाता है। श्राद्ध में पूर्वजों को धूप देनी पड़ती है। बच्चे विद्या के लिए सरस्वती की पूजा करते हैं। मंगलवार-शनिवार को हनुमानजी को नारियल चढ़ाना पड़ता है। संतोषी माता का व्रत करने से संतोष बढ़ता है। ऐसी कई मान्यताएँ है।

दादा या पिता की मृत्यु पर व्यक्ति चित्र लगाकर, माला पहनाकर, दीप जलाता है, अगरबत्ती लगाता है। रोग-निवारण के लिए तथा भूत-प्रेत निकलवाने के लिए पीर बावजी के ढोक लगाता है। पुत्र-प्राप्ति के लिए देवी-देवताओं की मनौती लेता है। नाकोड़ा भैरवजी के समक्ष कुछ नोट की भेंट चढ़ाकर धन की वृद्धि हेतु याचना करता है, पूजा करता है।

कहता है, भगवन्! देव तो मेरे अरिहंत ही हैं। अरिहंत परमात्मा को मैं पूरी श्रद्धा से मानता हूँ। पर क्या करूँ, गृहस्थी में बैठे हैं तो अन्य सब देवी देवताओं को मानना पड़ता है। यदि राजा या राज्य सत्ता को न मानते हुए किसी अन्य राजा, राज्यसत्ता को माने, उसकी प्रशंसा याचना करे तो यह राजद्रोह में आता है, उसका दंड मृत्यु है। उसी तरह यदि हम भगवान महावीर के शासन में हैं,फिर भी विरुद्ध चलें,उनकी आज्ञा-उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त में विश्वास न करें, न मानें तो यह देव-द्रोह में आता है। उसका फल अनन्त मृत्युदंड है।

चौंसठ इन्द्रों के पूजनीय वन्दनीय, जिसे नरेन्द्र चक्रवर्ती भी वंदन करें ऐसे वीतराग सर्वज्ञ परमात्मा के स्थान पर अन्य देवी-देवताओं को मानना पूजा, अर्चना करना घोर मिथ्यात्व है। विचार करना है कि व्यक्ति ऐसे उक्त क्षुद्र देवी देवताओं को क्यों मानता है? ऋद्धि-सिद्धि के लिए, रोग-शोक निवारण के लिए, सांसारिक अनिष्ट-अमंगल-दुर्घटना को टालने के लिए, इष्ट की प्राप्ति के लिए। भगवान महावीर का कर्म-सिद्धान्त तो स्पष्ट है कि शरीर में साता-असाता, परिवार-समाज में अनुकूलता-प्रतिकूलता धनादि की प्राप्ति, वृद्धि या हानि इस जीव के पूर्व कर्म साता या असाता वेदनीय कर्म का फल होता है। पुण्य के उदय से ऋद्धि और पाप के उदय से हानि होती है। पुरुषार्थ भरपूर करते हुए भी लाभ नहीं मिलना या सावधानी बरतते हुए भी हानि होना, यह सब कर्मों का खेल है।

कोई देवी देवता कतई हानि नहीं पहुंचा सकते, न ही अमंगल टाल सकते हैं और न ही कोई लाभ पहुंचा सकते हैं। ये देवी देवता ऐसा कर सकते हैं यह मिथ्या मान्यता है। इस मिथ्यात्व के चलते अनन्त कर्म का उपार्जन होता है और अनन्त भव भ्रमण करना पड़ता है।

ये क्षुद्र देवी-देवता तो क्या, अरिहंत परमात्मा भी, साधु-साध्वी भी, महामंत्र नवकार भी, मांगलिक या भक्तामर भी सांसारिक लाभ नहीं दे सकते, अमंगल नहीं टाल सकते। ये पंच परमेष्ठी तो अनन्त आत्मगुणों के धारक हैं।

कितनी विचित्रता है कि अज्ञानी व तृष्णातुर जीव वीतरागियों से सांसारिक वैभव मांगता है जिसे तुच्छ और त्याज्य समझकर उन्होंने त्याग कर अनगारत्व, मुनित्व धारण कर लिया।

वीतरागी मुनि, वीतरागी देव, वीतराग धर्म-देशना की प्रेरक मांगलिक आदि से तो वीतरागता, परम वीतरागता प्राप्त हो सकती है। नवकार के जाप से भक्तामर के पाठ से परमार्थ हो सकता है, समस्त कर्म कट सकते हैं, उनसे कर्मों के उत्पादक पुद्गल, पौद्गलिक पदार्थ-ऋद्धि मांगना हो तो हीरे के स्थान पर कोयला मांगना है।

-प्रेषकः-उमरावसिंह मारू, सम्पादक-तपोधन, भीलवाड़ा

रत्नवंश के मूल महापुरुष

भंडारी सरदारचन्द जैन

मूल पुरुष पूज्य श्री 1008 श्री कुशलचन्द्र जी म.सा.

माता- कानूदेवी जी

पिता- श्री लादूराम सा चंगेरिया, ओसवंशीय

जन्म- वि.सं. १७६७ चैत्र वदि ३, सेठों की रीयां, जोधपुर (राज.)

दीक्षा- वि.सं.१७९४ फागण सुदि ७, सेठों की रीयां, जोधपुर (राज.)

स्वर्गवास- वि.सं. १८४० जेठ वदि ६, नागौर (राज.)

प्रथम आचार्य पूज्य श्री 1008 श्री गुमानचन्द्र जी म.सा.

माता- चैनादेवी जी

पिता- श्री अखेराज जी लोहिया, माहेश्वरी

जन्म- जोधपुर (राज.)

दीक्षा- वि.सं. १८१८ मिगसर सुद ११, मेड़ता सिटी (राज.)

स्वर्गवास- वि.सं. १८५८ काती वद ८, मेड़ता सिटी (राज.) **(क्रमशः)**

-त्रिपोलिया बाजार, जोधपुर

अपर्याप्त और पर्याप्त

श्री धर्मचन्द जैन

जिन जीवों के अपर्याप्त नाम कर्म का उदय हो, उन्हें अपर्याप्त तथा जिन जीवों के पर्याप्त नाम कर्म का उदय हो, उन्हें पर्याप्त कहते हैं अथवा जो स्व-योग्य पर्याप्तियाँ जब तक प्राप्त न करें तब तक अपर्याप्त तथा स्व-योग्य पर्याप्तियाँ जब पूरी प्राप्त कर लें तो उन्हें पर्याप्त कहते हैं।

पर्याप्तिः नाम शक्तिः। अर्थात् परिणमन करने की जीव की शक्ति विशेष पर्याप्ति है अथवा जीव की वह शक्ति विशेष जिससे ग्रहण किये गये पुद्गलों को आहार, शरीर, इन्द्रियादि के रूप में परिणमन किया जा सके, उसे पर्याप्ति कहते हैं। ये पर्याप्तियाँ आहार, शरीर, इन्द्रिय, श्वासोच्छ्वास, भाषा और मन के रूप में छः प्रकार की होती हैं।

गृहीत पुद्गलों को खल और रस के रूप में परिणत (बदलना) करना आहार पर्याप्ति का कार्य है। सप्त धातु रूप अथवा शरीर रूप में परिणत करना शरीर पर्याप्ति का कार्य है। कान, आँख, नाक आदि इन्द्रियों के रूप में परिणत करना इन्द्रिय पर्याप्ति का कार्य है। श्वास-उच्छ्वास के रूप में परिणत करना श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति का, वचन रूप में परिणत करना भाषा पर्याप्ति का तथा मनन रूप में परिणत करना मनः पर्याप्ति का कार्य है।

पर्याप्त जीवों में गृहीत पुद्गलों को आहारादि रूप में परिणत करने की शक्ति होती है, किन्तु अपर्याप्त जीवों में इस प्रकार की शक्ति नहीं होती। इसीलिये पर्याप्त-अपर्याप्त के निम्नलिखित दो-दो भेद भी किये जा सकते हैं-

1.लब्धि अपर्याप्त 2.करण अपर्याप्त,

1.लब्धि पर्याप्त 2.करण पर्याप्त

लब्धि अपर्याप्त जीव वे कहलाते हैं जो स्व-योग्य पर्याप्तियों को पूर्ण किये बिना ही मर जाते हैं, पर्याप्त हो ही नहीं पाते, अपर्याप्त अवस्था में ही काल कर जाते हैं। ये नियमा मिथ्यादृष्टि ही होते हैं।

करण अपर्याप्त जीव वे कहलाते हैं जिन्होंने उत्पन्न होकर शरीर व इन्द्रिय इन दोनों पर्याप्तियों को अभी तक प्राप्त नहीं किया है। लब्धि पर्याप्त वे जीव हैं, जिनको पर्याप्त नाम कर्म का उदय हो और स्व योग्य पर्याप्तियों को पूर्ण करके ही मरते हों, पहले नहीं। करण पर्याप्त वे जीव हैं, जिन्होंने शरीर व इन्द्रिय पर्याप्ति को पूर्ण कर लिया है।

प्रत्येक भव में जीव करण पर्याप्त तो निश्चित रूप से होता ही है,

क्योंकि आहार, शरीर व इन्द्रिय इन तीन पर्याप्तियों को पूर्ण किये बिना कोई जीव मर ही नहीं सकता। कारण कि आगामी भव की आयु का बन्ध किये बिना जीव मर नहीं सकता तथा आयु बन्ध करने के लिये प्रथम तीन पर्याप्तियाँ पूर्ण होना आवश्यक है। प्रायः यह कहा जा सकता है कि जीव चाहे लब्धि अपर्याप्त हो अथवा लब्धि पर्याप्त दोनों ही करण पर्याप्त तो नियमा होते ही हैं।

आहार पर्याप्ति उत्पन्न होने के प्रथम समय में ही पूर्ण हो जाती है। यद्यपि स्वयोग्य सभी पर्याप्तियों की शुरुआत एक साथ होती है। किन्तु उनकी पूर्णता क्रमशः अन्तर्मुहूर्त-अन्तर्मुहूर्त में होती है। सभी पर्याप्तियों की पूर्णता का काल भी अन्तर्मुहूर्त ही होता है। अर्थात् शरीर पर्याप्ति में अन्तर्मुहूर्त, इन्द्रिय पर्याप्ति में अन्तर्मुहूर्त, श्वासोच्छ्वास पर्याप्ति में अन्तर्मुहूर्त, भाषा पर्याप्ति में अन्तर्मुहूर्त तथा मनः पर्याप्ति में अन्तर्मुहूर्त लगता है। प्रत्येक का अन्तर्मुहूर्त क्रमशः बड़ा होता है। यह नियम औदारिक शरीर की पर्याप्तियों की अपेक्षा से समझना चाहिये।

एकेन्द्रिय के अपर्याप्त जीवों में आहार, शरीर व इन्द्रिय ये तीन पर्याप्तियाँ तथा एकेन्द्रिय के पर्याप्त जीवों में प्रथम चार पर्याप्तियाँ पायी जाती हैं। बेइन्द्रिय, तेइंद्रिय, चौरेन्द्रिय और असन्नी पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त में आहार, शरीर, इंद्रिय और श्वासोच्छ्वास ये चार पर्याप्तियाँ तथा इनके पर्याप्त में पाँच पर्याप्तियाँ (उपर्युक्त चार व भाषा पर्याप्ति) पायी जाती है। सन्नी पंचेन्द्रिय के अपर्याप्त में प्रथम पाँच पर्याप्तियाँ तथा इसके पर्याप्त में छहों पर्याप्तियाँ पायी जाती हैं।

पाँच शरीर में से प्रथम तीन शरीर (औदारिक, वैक्रिय और आहारक शरीर) की ही पर्याप्तियाँ होती हैं। अर्थात् औदारिक शरीर को प्राप्त मनुष्य व तिर्यंच पर्याप्त अवस्था में जब वैक्रिय लब्धि से वैक्रिय शरीर बनाता है तब छहों पर्याप्ति वैक्रिय शरीर की भी प्राप्त होती है। इसी प्रकार चतुर्दश पूर्वधर अणगार भगवन्त जब आहारक लब्धि से आहारक शरीर बनाते हैं तब आहारक शरीर की भी छहों पर्याप्तियाँ पूर्ण होती हैं। तैजस और कार्मण ये दोनों शरीर तो सभी संसारी जीवों में हमेशा विद्यमान ही रहते हैं। एक बार छूटने के बाद वापस प्राप्त ही नहीं होते, इस कारण इन दोनों शरीर की पर्याप्तियाँ नहीं होती।

-रजिस्ट्रार, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड
घोड़ों का चौक, जोधपुर

संसार का कोई प्रारंभ नहीं, लेकिन अंत है।
मोक्ष का प्रारम्भ तो है, लेकिन अंत नहीं।।

-भगवान महावीर

क्रमशः (5)

दशवैकालिक सूत्र (सप्तम अध्ययन)

डॉ. अमृतलाल गांधी

दशवैकालिक सूत्र के सप्तम अध्ययन में वचन शुद्धि का वर्णन है। इसे षष्ठ अध्ययन के महाचार के बाद लिया गया है, क्योंकि मृषावाद आचार धर्म का मुख्य अंग होने से उसके लिये वचन-शुद्धि का ज्ञान आवश्यक है। साधु कैसी भाषा बोले और कैसी नहीं, ताकि उसका सत्यव्रत निर्मल रह सके, इस दृष्टि से इस अध्ययन में वर्णित चार प्रकार की भाषाओं में से असत्य और मिश्र को छोड़कर साधु सदैव सत्य एवं व्यवहार भाषा का ही प्रयोग करे। सत्य भी सावद्य और पर पीड़ाकारी नहीं बोले। जो भाषा सत्य होकर भी अवक्तव्य है और जो मिश्र तथा मिथ्या है, वह ज्ञानियों के लिये अनाचीर्ण है। अतः साधु सत्य भाषा, व्यवहार भाषा, पापरहित, कोमल और संदेहरहित भाषा का प्रयोग करे। इस अध्ययन में बोलने का निषेध भी है और विधान भी। साधु को सदैव 'पहले तोल फिर बोल' सिद्धान्त का पालन करना चाहिये। आचार्य हरिभद्र के अनुसार जिसे सावद्य और निरवद्य वचन का भेद नहीं, उसका बोलना भी उचित नहीं। इसीलिये शास्त्रकारों ने विवेकपूर्ण बोलने को भी मौन की तरह तप कहा है। श्रमणाचार का शुद्ध पालन और प्रतिपादन भी वही कर सकेगा, जिसको भाषा का पूर्ण विचार है। अतः इस अध्ययन की ५७ गाथाओं में इसका विस्तृत विवेचन किया गया है।

तीसरी गाथा के अनुसार बुद्धिमान साधु वैसी भाषा बोले जो लोक व्यवहार में प्रचलित और सत्य हो। दूषित भाषा सत्य हो तो भी साधु नहीं बोले। वे सदा निर्दोष और भले बुरे का विचार कर संदेह रहित, स्पष्ट रूप से समझ में आवे, ऐसी भाषा बोले। सत्यं ब्रूयात्, प्रियं ब्रुयात्, न ब्रूयात् सत्यम् अप्रियं अर्थात् साधु सदा सत्य और प्रिय बोले न कि अप्रिय सत्य। गाथा ८ के अनुसार साधु की भाषा बहुत महत्त्वपूर्ण और प्रामाणिक होती है। अतः उसको उतना ही बोलना चाहिए जो वस्तुतः यथार्थ हो। भूत, भविष्य या वर्तमान काल के जिस पदार्थ को यथावत् नहीं जाने, उस संबंध में कोई निर्णायक बात नहीं कहे। इतना ही कहे कि ऐसा देखा, सुना या पढ़ा है, निश्चय में जैसा अतिशय ज्ञानी कहे, वही प्रमाण है।

आगे कहा है कि सत्य भाषा के भी जिन शब्दों से सुनने वाले का मन कष्ट का अनुभव करे, वैसी बात और पीड़ाकारी वचन नहीं बोले। साधु की परीक्षा शब्दों से होती है, अतः साधु अशोभनीय, अप्रिय एवं हल्के शब्दों का प्रयोग नहीं करे। संसार-त्यागी साधु किसी को संसारी संबंध से भी नहीं पुकारे। साधु सदैव संयत भाषा में बोले। साधु अपने निवास या शयन के आसन बाबत भी हिंसा कारक भाषा नहीं बोले। प्रवचन के संबंध में भी साधु भावावेग में कभी

कोई बात नहीं कहे, अपितु पहले तोले, फिर बोले। गाथा ४६ के अनुसार साधु वेष से नहीं, गुणों से होता है। साधु का अर्थ होता है साधना करने वाला। अतः जो सम्यग् ज्ञान और श्रद्धा सम्पन्न तथा संयम और तप में रमण करने वाला है, ऐसे गुणयुक्त संयमी को ही साधु कहा जाय। किसी असाधु को साधु कहना गलत है।

अध्ययन की अंतिम गाथाओं के अनुसार साधु वाक्य शुद्धि की शिक्षा का सम्यक् विचार करके सादा दोषयुक्त वाणी का वर्जन करे और जो भाषा नपी तुली व दोष रहित हो, उसे ही बोले। षट्कायिक जीवों पर संयम करने वाला साधु भाषा के गुण और दोषों को जानकर, दोषों का सदा वर्जन करे तथा श्रमण धर्म में सदा यत्न करने वाला बुद्धिमान हितकारी तथा सबके लिये अनुकूल हो, वैसी भाषा बोले। लाभालाभ की परीक्षा पूर्वक बोलने वाला, शब्दादि विषयों से इन्द्रियों को वश में रखने वाला, क्रोधादि चारों कषायों से अलग और संसार के प्रपंच से मुक्त साधु पूर्वकृत कर्ममल को अलग करते हुए इस लोक और परलोक दोनों को सुधार लेता है।

-७३८, नेहरू पार्क रोड़, सरदारपुरा, जोधपुर (राज.)

म्हारा पूज्य हीराचन्द्र

श्री हस्तीमल जी गोलेछा

(सूरत में दीक्षा-अवसर पर प्रस्तुत रचना)

दिन में चमके सूरज, रात में चमके चन्द्र।
अर जिनशासन में हरदम चमके म्हारा पूज्य हीराचन्द्र।।
ज्ञान क्रिया रा अद्भुत दरिया विनय विवेक सुं भरया
ये निरतिचार व्रत पाले ओ म्हारा पूज्य हीराचन्द्र।
ये आगम बलिया श्रमण ओ म्हारा पूज्य हीराचन्द्र।।1।।
गांवा नगरां में विचरण करते, माधुकरी सुं जीवन चलाते
ये वीर प्रभु री आज्ञा पाले ओ म्हारा पूज्य हीराचन्द्र।।2।।
कोई प्राण ने नहीं सतावे, तिरना री तरकीब बतावे।
ये भव जल नाव रा, नाविक ओ म्हारा पूज्य हीराचन्द्र।।3।।
मरुधर देश में अलख जगायो, खानदेश रंग लायो।
ये सूरत में संजम देवे ओ म्हारा पूज्य हीराचन्द्र।
पायलजी दीक्षा लेवे ओ म्हारा पूज्य हीराचन्द्र।।4।।
व्यसन फैशन ने दूर निवारे, सामायिक स्थानक में करावे।
ये संस्कृति रा संस्कार जगावे ओ म्हारा पूज्य हीराचन्द्र।।5।।
स्वाध्याय री प्रेरणा कर्ता, सिद्धान्त से नहीं समझौता।
ये आचार रक्षण में आगे ओ म्हारा पूज्य हीराचन्द्र।।6।।
सुखैः सुखैः थे विचरण करजो, संघ ने संभालता रहिजो।
ओ भक्त प्राणी भक्ति चाहवे ओ म्हारा पूज्य हीराचन्द्र।।
ओ हस्ती थाणी आशीष चाहवे ओ म्हारा पूज्य हीराचन्द्र।।7।।

-ब्यावर(राज.)

दहेज से परहेज करें

श्री गजमल लोढ़ा

.विवाहिता द्वारा दहेज नहीं जुटा पाने पर उसे जहर देकर हत्या कर देने के आरोपी पति को अपर सेशन न्यायाधीश (फास्ट ट्रेक) ने उम्र कैद की सजा सुनाई। पति ने अपनी पत्नी को जहर देकर हत्या के मामले को आत्महत्या में बदलने के लिए शव को पानी के टांके में डाल दिया था। उस समय वह गर्भवती भी थी।

मामूली वस्तुओं के लिए अपनी पत्नी का जीवन समाप्त कर घृणित व जघन्य अपराध के लिए नरमी का रुख अपनाने से इन्कार करते हुए न्यायाधीश ने अभियुक्त को दहेज प्रताड़ना के आरोप में तीन वर्ष के कठोर कारावास व दहेज-हत्या के लिए उम्र कैद की सजा सुनाई।

'अगर आप पर इतनी कंगाली छाई है कि १०-११ हजार रुपये तक तिलक में नहीं चढ़ा सकते थे तो हम से कह देते, हम ही पूरा करके चढ़ा देते। हमारी कितनी बेइज्जती हुई है।'

'उठा ले जाइये अपना सब सामान। हमें अपने बेटे का ब्याह नहीं करना है।' इज्जत की दुहाई देकर लड़के के पिता लड़की वालों को अधिक से अधिक चूस लेने और नीचा दिखाने में लगे हुए थे।

विवाह एक संस्कार है। ऐसा संस्कार जिसमें एक पुरुष और एक स्त्री परस्पर आजीवन रिश्ते की एक अदृश्य सी मजबूत डोर में बंध जाते हैं। ऐसा माना जाता है कि विवाह के बाद जिंदगी का एक नवीन चरण प्रारंभ होता है, जिसे गृहस्थ आश्रम कहा जाता है। इस अवस्था में निष्ठा, विश्वास और समर्पण ही वह माध्यम है जिसको अपनाकर स्त्री और पुरुष का गृहस्थ जीवन सुख-समृद्धि और आनन्द से युक्त हो सकता है। लेकिन हमारे समाज में विवाह के उपलक्ष्य और विवाह के बाद गृहस्थ जीवन में कुछेक ऐसी परम्पराएँ, प्रथाएँ या सामाजिक नीतियाँ मौजूद हैं, जिनसे आधुनिक समाज का व्यक्ति चाह कर भी सामंजस्य नहीं बिठा पाता। इनसे वह न तो आज मुक्त हो पा रहा है और न ही उनका पालन ही कर पा रहा है।

हमारे समाज में दहेज को वस्तुतः एक रस्म, परम्परा या प्रथा माना गया है, जिसे एक सामाजिक बुराई, सामाजिक अभिशाप और समाज का कोढ़ कहकर विरोध किया गया है, जिससे लगता है कि समूचा व्यक्ति-समुदाय दहेज प्रथा का सख्त विरोधी है। लेकिन हमारा इतिहास और वर्तमान इस बात का साक्षी है कि सामाजिक बुराइयों के उन्मूलन में सामाजिक प्राणी की कथनी और

करनी में भिन्नता है।

इस ऐतिहासिक समस्या का समाधान मेरे विचार में प्रबुद्ध जैन समाज के नवयुवक एवं नवयुवतियों के पास है। वे इस पर मनन, चिन्तन और संकल्प करें तो इस दहेज प्रथा को समूल समाप्त कर सकते हैं। इसका एक ज्वलन्त उदाहरण हाल ही में जोधपुर के माली समाज के नवयुवकों व नवयुवतियों ने प्रस्तुत किया। उन्होंने विवाह के तुरन्त पश्चात् अपने समाज के उपस्थित जन-समूह के समक्ष अपने विचार प्रस्तुत कर प्रश्न किया कि, 'बेटी को शादी में गहने और रुपये देकर क्या बाप बेटी को बेचता है? क्या शादी एक सौदा है? यदि नहीं तो इस खोखली परम्परा का निर्वहन क्यों? शादी के लिए दहेज क्या जरूरी है और कौन इसे पनपाने वाले हैं?' जवाब देते नहीं बना। नवयुवतियों एवं नवयुवकों द्वारा प्रश्न करने वाली हिम्मत सराहनीय है।

अतः जैन समाज के नवयुवकों एवं नवयुवतियों से आह्वान करता हूँ कि दहेज से परहेज कर आदर्श प्रस्तुत कर समाज में प्रचलित इस समस्या को जड़ से मिटा दें। *-१४/७८, चौपासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर (राज.)*

स्वाध्याय में पूर्वाभास समाहित है

श्री लक्ष्मीचन्द जैन

1. **अध्ययनशील व्यक्ति का अतीन्द्रिय ज्ञान कुछ इस प्रकार का स्वतः विकसित हो जाता है कि उसे भविष्य की घटनाओं का पूर्वानुमान हो जाता है। वह वर्तमान में भविष्य के संकेत समझ जाता है।**
2. **धर्मग्रन्थ पढ़ने वाले व्यक्ति को अपनी वर्तमान समस्या का समाधान तो प्राप्त होता ही है, भविष्य की सुरक्षा का भी ज्ञान हो जाता है। यह प्रक्रिया एक जागृत मस्तिष्क की सूचक है। स्वाध्याय स्वप्रशिक्षण की एक सशक्त साधना है। इस साधना से हम अपने समस्त तौर तरीके इस प्रकार बदल सकते हैं कि हमारा हर कदम हमें लाभान्वित ही करेगा।**
3. **स्वाध्याय किसी भी कीमत पर घाटे का सौदा नहीं है। इसके माध्यम से हमें जो एकान्त में विचार करने का अवसर मिलता है वह हमारे जीवन को संवारने की पर्याप्त क्षमता रखता है। स्वाध्याय से प्राप्त सुख जिसने जाना है वह जीवन भर उसका आनंद उठाने के लिए तत्पर दिखाई देता है। यह एक सारस्वत साधना है।**

-छोटी कसरावद (म.प्र.)

जन्म–दिवस चैत्र कृष्णा अष्टमी पर

गणिवर हीरा हैं महान

श्री मनमोहनचन्द बाफना

(1)

अप्रमत्त साधक आचार्य प्रवर,
गरिमा मयी कहलाते हो।
अमृत धारा का पान करा,
सद्ज्ञान जगत को लुटाते हैं।।

(2)

हस्ती ने हीरा जब देखा,
शहर पीपाड़ में गुरुवर ने।
अन्तर की थी चमक गजब,
वो शिष्य बने थे हस्ती के।।

(3)

हैं गौरवर्ण वह दिव्य भाल,
शोभित सुन्दर व भव्य लगे।
जन-जन दर्शन पा हर्षित होते,
वाणी की अमृत धारा से।।

(4)

आगम ज्ञाता, गणिवर हीरा,
जो ज्ञान क्रिया के संयम हैं।
अन्तर में ज्ञान भरा भारी,
जग को वे नित्य लुटाते हैं।।

(5)

स्वाध्यायी रत्नों की चमक बढ़ा,
जो स्वाध्याय शृंखला बनाते हैं।
नित सामायिक, स्वाध्याय करो,
स्व आत्म-रमण कर बढ़ते हैं।।

(6)

व्यसन मुक्ति को ले गुरुवर,
अब अलख जगायी भारी है।
क्यों जहर खाते व पीते हो,
भव, परभव में रुल जाते हो।।

(7)

संस्कारों का गुरु बोध दिला,
नियम व्रत भेंट दिलाते हैं।
कर्मों के द्वन्द्व कटे कैसे
वह पथ आलोकित करते हैं।।

(8)

रत्नवंश के अष्टम पट्टधर,
आठों कर्मों का क्षय करने।
जो महावीर पथ धारक हैं,
"मनमोहन" नमन हजारों है।।

(9)

गुरु हीरा, मान व संत सती,
पूज्य हस्ती का उपकार ही है।
पा रत्वंश के रतन सभी,
मानो प्रभु साक्षात् ही हैं।।

-१२/१०९, प्रमोद दाल मिल, लाल बंगला,
पोखरपुर कानपुर (उ.प्र.)

JAI GURU HASTI

JAI MAHAVEER

JAI GURU HIRAMAN

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

LIVE & LET LIVE

Lord Mahaveer

With Best Compliments from

Prithvi Exchange

A 100% Money Changer

A DIVISION OF PRITHVI SECURITIES LIMITED

Regd. Office : 33, Montieth Road, Egmore, Chennai-600 008, Ph : 855 3185/3059. Website : www.prithvifx.com

CHENNAI	BANGALORE	PANJIM GOA
044-8553185	080-5327812	0832-231190
044-8553059	080-5327813	0832-420675

P. DELICHAND KAVAD

SURESH KAVAD

RAVINDRA KAVAD

NAVARATHAN KAVAD

ASHOK KAVAD

158, Trunk Road, Poonamallee, Chennai-600 056.

Ph : 044-627 3165, 627 4165

।। श्री महावीराय नमः ।।

पूज्य कुशलगणी की जय ।। जय गुरू हस्ती ।। श्री कुशलरत्न गजेन्द्रगणिभ्यो नमः

परमश्रद्धेय जैनाचार्य श्री १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. के सुशिष्य

आचार्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. एवं उपाध्याय श्री मानचन्द्रजी म. सा. की जय

श्री श्वे. स्था. जैन चतुर्विध संघ के हितार्थ प्रमुख मुनियों द्वारा स्वीकृत

पाक्षिक पत्र विक्रम सम्वत् २०६०

वीर सम्वत् २५२९-३० (निर्णय सागर पंचाग से सम्पादित) सन् २००३-२००४

क्र. सं.	मास—पक्ष	तिथिवार	पक्खी दिनांक	घड़ी पल	क्षय तिथि	वृद्धि तिथि	रोहिणी नक्षत्र	पुष्य नक्षत्र
१	चैत्र सुदि	१५ बुध	१६.४.२००३	४८.२०	१४	३	५ सोम	६ शुक्र
२	वैशाख वदि	१४ बुध	३०.४.२००३	२२.२१	७	१०	-	-
३	वैशाख सुदि	१४ गुरू	१५.५.२००३	१८.२८	-	-	३ रवि	७ गुरू
४	ज्येष्ठ वदि	१४ शुक्र	३०.५.२००३	३.३१	१	१४	३० शनि	-
५	ज्येष्ठ सुदि	१५ शनि	१४.६.२००३	२६.३१	१२	-	-	५ गुरू
६	आषाढ़ वदि	३० रवि	२९.६.२००३	४४.५७	-	-	१३ शुक्र	-
७	आषाढ़ सुदि	१५ रवि	१३.७.२००३	४५.४१	१३	-	-	३ बुध
८	श्रावण वदि	१४ सोम	२८.७.२००३	१५.३५	-	१०	११ शुक्र	३० मंगल
९	श्रावण सुदि	१५ मंगल	१२.८.२००३	८.५९	५	-	-	-
१०	भाद्रपद वदि	३० बुध	२७.८.२००३	४१.४७	-	-	९ गुरू	१३ सोम
११	भाद्रपद सुदि	१५ बुध	१०.९.२००३	३६.०३	८	-	-	-
१२	आश्विन वदि	१४ गुरू	२५.९.२००३	१२.३४	-	५	६ बुध	११ सोम

विशेष विवरण

आंयबिल ओली प्रारंभ चैत्र सुदि ६ मंगलवार ८.४.२००३।

भगवान महावीर जन्म कल्याणक चैत्र सुदि १३ मंगलवार दि. १५.४.२००३।

आंयबिल ओली पूर्ण चैत्र सुदि १५ बुधवार १६.४.२००३।

अक्षय तृतीया वैशाख सुदि ३ रविवार ४.५.२००३।

आचार्य भगवंत पूज्य गुरूदेव १००८ श्री हस्तीमलजी म. सा. की बाहरवीं (१२ वीं) पुण्य तिथि वैशाख सुदि ८ शुक्रवार दि. ९.५.२००३।

भगवान महावीर केवल कल्याणक वैशाख सुदि १० रविवार दि. ११.५.२००३।

संघ स्थापना दिवस वैशाख सुदि ११ सोमवार दि. १२.५.२००३।

आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का १३ वां, आचार्य पद दिवस ज्येष्ठ वदि ५ मंगलवार दि. २०.५.२००३।

परम्परा के मूल पुरूष पूज्य श्री कुशल चन्द्र जी म. सा. की २२० वी पुण्य तिथि ज्येष्ठ वदि ६ बुधवार २१.५.२००३।

आचार्य पूज्य श्री रतन चन्द्रजी म. सा. की १५८ वी पुण्य तिथि ज्येष्ठ सुदि १४ शुक्रवार दि. १३.६.२००३।

आद्रा नक्षत्र, आषाढ वदि ८ रविवार २२.६.२००३ को लगेगा, इसके बाद गाज-बीज होने पर सूत्र की, असज्झाय नहीं रहेगी।

चातुर्मास प्रारंभ (चातुर्मासी पक्खी), आषाढ़ सुदि १५ रविवार दि. १३.७.२००३।

~~आचार्य पूज्य~~ श्री शोभा चन्द्रजी म. सा. की ७७वीं पुण्यतिथि श्रावण वदि ३० मंगलवार दि. २९.७.२००३।

पर्युषण पर्व प्रारंभ भाद्रपद वदि १२ रविवार दि. २४.८.२००३।

११	भाद्रपद सुदि	१५ बुध	१०.६.२००३	३६.०३	८	-	-	-
१२	आश्विन वदि	१४ गुरू	२५.६.२००३	१२.३४	-	५	६ बुध	११ सोम
१३	आश्विन सुदि	१५ शुक्र	१०.१०.२००३	१६.३६	१	-	-	-
१४	कार्तिक वदि	३० शनि	२५.१०.२००३	२८.५४	१०	६	५ बुध	६ रवि
१५	कार्तिक सुदि	१५ शनि	८.११.२००३	६०.००	४	१५	-	-
१६	मार्गशीर्ष वदि	१४ रवि	२३.११.२००३	२.१६	३०	-	२ मंगल	६ शनि
१७	मार्गशीर्ष सुदि	१५ सोम	८.१२.२००३	४६.४६	-	-	१५ सोम	-
१८	पौष वदि	३० मंगल	२३.१२.२००३	१८.०७	१०	३	-	४ शनि
१९	पौष सुदि	१५ बुध	७.१.२००४	३३.३५	३	१०	१२ रवि	-
२०	माघ वदि	३० बुध	२१.१.२००४	४६.२४	१४	-	-	२ शुक्र
२१	माघ सुदि	१४ गुरू	५.२.२००४	१५.२७	-	११	११ रवि	१४ गुरू
२२	फाल्गुन वदि	३० शुक्र	२०.२.२००४	१८.०४	८	-	-	-
२३	फाल्गुन सुदि	१५ शनि	६.३.२००४	५५.१२	-	-	८ शनि	१३ गुरू
२४	चैत्र वदि	३० शनि	२०.३.२००४	५३.१२	१२	-	-	-

चातुर्मास प्रारंभ (चातुर्मासी पक्खी), आषाढ़ सुदि १५ रविवार दि. १३.७.२००३।
आचार्य पूज्य श्री शोभा चन्द्रजी म. सा. की ७७वीं पुण्यतिथि श्रावण वदि ३० मंगलवार दि. २९.७.२००३।
पर्युषण पर्व प्रारंभ भाद्रपद वदि १२ रविवार दि. २४.८.२००३।
संवत्सरी महापर्व भाद्रपद सुदि ४ रविवार दि. ३१.८.२००३।
आयंबिल ओली प्रारंभ, आसोज सुदि ७ गुरूवार दि. २.१०.२००३।
पूज्य आचार्य श्री भूधर जी म. सा. की पुण्य तिथि व दशहरा, आसोज सुदि १० रविवार दि. ५.१०.२००३।
आयंबिल ओली पूर्ण आसोज सुदि १५ शुक्रवार १०.१०.२००३।
स्वाति नक्षत्र कार्तिक वदि १४ शुक्रवार दि. २४.१०.२००३ को लगेगा, इस के बाद गाज-बीज होने पर 'सूत्र की असज्झाय होगी।
भगवान महावीर निर्वाण कल्याणक कार्तिक वदि ३० शनिवार २५.१०.२००३।
वीर संवत् २५३० प्रारंभ कार्तिक सुदि १ रविवार २६.१०.२००३
ज्ञान पंचमी कार्तिक सुदि ५ बुधवार दि. २९.१०.२००३।
आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्र जी म. सा. का ४१ वां दीक्षा दिवस कार्तिक सुदि ६ गुरूवार दि. ३०.१०.२००३।
चातुर्मासिक पक्खी (चातुर्मास पूर्ण) कार्तिक सुदि प्र. १५ शनिवार दि. ८.११.२००३।
वीर लोकाशाह जयन्ती कार्तिक सुदि द्वि १५ रविवार ९.११.२००३।
मौन एकादशी मार्गशीर्ष सुदि ११ गुरूवार दि. ४.१२.२००३।
भ. पार्श्वनाथ जन्म कल्याणक पौष वदि ९/१० गुरूवार दि. १८.१२.२००३।
फाल्गुनी चातुर्मासी पर्व फाल्गुन सुदि १५ शनिवार दि. ६.३.२००४।
भ. आदिनाथ जन्म कल्याणक एवम आचार्य प्रवर १००८ श्री हीराचन्द्रजी म. सा. का ६६वां जन्म दिवस चैत्र वदि ८ रविवार १४.३.२००४।

गुरू हस्ती के दो फरमान – सामायिक स्वाध्याय महान् | **गुरू हीरा का यह सन्देश – व्यसन मुक्त हो सारा देश**

प्रिय महानुभावो! शुद्ध चित्त से दोनों समय प्रतिक्रमण करने से निर्जरा होती है। उत्कृष्ट रसायन आने से तीर्थंकर गौत्र की उपार्जना होती है। अतः दोनो समय प्रतिक्रमण अवश्य करना चाहिये। यदि प्रमाद वश न हो सके तो पक्खी का तो अवश्य करना चाहिये। पांचवे आवश्यक के काउसग्ग में देवसी को ४, पक्खी को ८, चौमासी को १२, और सम्वत्सरी को २० लोगस्स का चिन्तन करना अजमेर सम्मेलन का नियम है। सामायिक स्वाध्याय का घर–घर प्रचार करें। ब्रह्मचर्य का पालन करें व व्यसनों का त्याग करें।

हमारी प्रार्थना के केन्द्र में यदि वीतराग होंगे तो निश्चित रूप से हमारी मनोवृत्तियों में प्रशस्ता और उच्च स्थिति आयेगी।

-आचार्य श्री हस्ती

With Best Compliments From :

JIN GEMS

DIAMONDS, PRECIOUS & SEMI PRECIOUS STONES

12th Floor, Flat 'C'
Mass Resources Dev. Bldg.
12, Humphrey's Avenue
T.S.T. Kowloon, Hongkong
© 23671373, Fax : 23671511
MOBILE : 94327311, 92594051
E-mail : jingems@ctimail.com

Rajendra Daga

संस्मरण

दृष्टि बदलें, सब कुछ बदल जाएगा

प्रो. चांदमल कर्णावट

वस्तु नहीं बदलती, व्यक्ति नहीं बदलता, न वातावरण ही बदलता है। केवल व्यक्ति की दृष्टि बदलने से सब कुछ बदल जाता है। आज हम वीतरागता का नाम लेते हैं, परन्तु जीते हैं राग में। यह रागमय जीवन हमारी दृष्टि नहीं बदलने का ही परिणाम है। राजकुमार इलायची ने नटकला का प्रदर्शन करते हुए किसी संयमी मुनि को देखा। उसका चिन्तन बदल गया। उसकी दृष्टि अथवा विचारधारा ने नया मोड़ ले लिया। अन्ततः वे इस भौतिकता के अन्धकार से निकलकर संयमी जीवन के प्रकाश में अग्रसर हो गए। उन्होंने सर्वोत्कृष्ट केवलज्ञान प्राप्त कर लिया। यह मात्र दृष्टि बदलने का परिणाम था। वस्तु, व्यक्ति और वातावरण कुछ नहीं बदलने पर भी केवल चिंतन धारा के बदलने से सब कुछ बदल गया।

मुम्बई के घाटकोपर में १४/६/२००२ के अपने प्रवचन में जैनाचार्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा. ने उक्त मार्मिक कथन किया। रत्नवंश के अष्टम पट्टधर आचार्य श्री ठाणांग सूत्र के अनुसार ४ प्रकार के जीवों का वर्णन कर रहे थे। उन्होंने बहिरात्मा जीवों की बहिर्दृष्टि की व्याख्या करते हुए कहा-संसार में बहिरात्मा या बहिर्दृष्टिवाले जीव-बाहर के पदार्थों-परिजनों में आसक्त रहते हैं। संसार में संसरण (परिभ्रमण) इसी बहिर्दृष्टि के कारण हो रहा है। इसी दृष्टि विपर्यय के कारण आज श्रेय अच्छा नहीं लग रहा, प्रेय अच्छा लग रहा है। आज झूठ सत्य के कन्धों पर चल रहा है। हिंसा अहिंसा के सहारे चल रही है। जिस दिन हम बाहर में जीना छोड़ देंगे, उस दिन श्रेणिक बड़ा न होकर पूणिया श्रावक हमारे लिए बड़ा हो जायेगा। जिस दिन अन्तर में झाँकना शुरु करेंगे, उस दिन प्रतिष्ठा, ऋद्धियाँ, पैसा हाथ का मैल लगने लगेगा। आचार्यप्रवर ने बताया- मानव यदि अपने को अंतर्मुखी बनाने का प्रयास करें, अपनी दृष्टि या विचारधारा में मोड़ लावे तो वह निश्चय ही संसार के दुःखों, बन्धनों से मुक्त हो सकता है। संसार सागर से किनारा पा सकता है।

जैसी दृष्टि वैसी सृष्टि की उक्ति के अनुसार हमारी दृष्टि या विचारधारा के अनुसार हम अपनी सृष्टि का सर्जन करते हैं। हमारी समस्त प्रवृत्तियाँ, हमारे क्रियाकलाप, हमारी विचारधारा के अनुरूप होने लगते हैं। अतः आवश्यक है कि हम सुन्दर सृष्टि का सर्जन करने हेतु अपनी दृष्टि

सम्यक् बनावें। सम्यक् दृष्टि से ही सम्यक् सृष्टि का सर्जन संभव हो सकेगा।

हम संसार के यथार्थ स्वरूप को जानकर समझकर आत्मस्वरूप का चिंतन करें। जड़ पदार्थों के विनाशी स्वरूप से हटकर आत्मा के अविनाशी स्वरूप पर विश्वास करें। हम अपने अन्दर झाँकें और अंतर्दृष्टि बनें। यही सम्यग्दर्शन है, यही सम्यक्दृष्टि है। एक बार भी यह विचार हमारी आस्था का केन्द्र बन जाय, तो हम दुःख सागर रूप संसार में भटकेंगे नहीं। निश्चित ही हमारा उद्धार होगा एवं हम दृष्टि सम्यक् बनाकर दुःख-मुक्ति रूप मोक्ष को अधिगत कर शाश्वत सुखों में रमण कर सकेंगे।

बालकेश्वर (मुम्बई) के २००२ के चातुर्मास के पूर्व आचार्यप्रवर मुम्बई के प्रायः सभी उपनगरों में पधारे। आपके प्रवचनों को श्रवण करने विशाल जनमेदिनी खिंची चली आती थी। श्रोता समुदाय आपके अमृतमय प्रवचनों को सुनकर कृतकृत्य समझते थे। आचार्यप्रवर के प्रवचन वीतरागवाणी के सुदृढ़ आधारों पर आधारित होते। अतीत की झांकी के साथ उनमें वर्तमान युग का विश्लेषण एवं भविष्य की संरचना का सुन्दर स्वरूप भरा होता था। वस्तुतः वे श्रोताओं के हृदयों को आन्दोलित करते और हिला देते थे।

-३५, अहिंसापुरी, फतहपुरा, उदयपुर (राज.)

जब कदम बढ़ेंगे दृढ़ उस ओर

डॉ. (श्रीमती) चन्दनबाला मारू

संकल्प साधना का हम लें, स्वाध्याय पर हो प्रतिदिन जोर,
चिन्तन आत्म-चेतना का, हो मनन, मौन, सेवा, सिरमौर,
मुक्तिधाम-पथ पर तब होंगे, जब कदम बढ़ेंगे दृढ़ उस ओर।।1।।

क्षमा-दया का भाव हृदय में, क्रोध-मोह से मन हो सुदूर,
सम्यक् दर्शन और ज्ञानमय, कर्त्तव्यों से मन हो परिपूर,
मुक्तिधाम पथ पर तब होंगे, जब कदम बढ़ेंगे दृढ़ उस ओर।।2।।

राग-द्वेष का बीज रहे ना, आत्म मैत्री का हो हर दौर,
प्राणिमात्र का हित चाहें हम, हिंसा न नाचे बन मोर,
मुक्ति धाम पथ पर तब होंगे, जब कदम बढ़ेंगे दृढ़ उस ओर।।3।।

-व्याख्याता संस्कृत,
राजकीय मीरा कन्या महाविद्यालय, उदयपुर

पानी

श्री कस्तूरचन्द बाफना

भोली दुनिया ने पानी की कीमत नहीं जानी
चहुँ ओर हाहाकार मचा बस पानी ही पानी
एक ही प्रश्न उठता कहाँ गया पानी?
भूस्तर गिर रहा कारण नयनों में नहीं पानी।।
कुदरत नियम से चलती है
कुदरत के कानून से दुनिया पलती है
नियमों का हुआ उल्लंघन
तो हवा उल्टी बहती है।।
कभी अतिवृष्टि, कभी अनावृष्टि
कभी भूंकप से विनष्ट होती सृष्टि
अमीर बनकर सुख से सोए रात को
हाथ में कटोरा भी न बचा प्रभात को।।
मूक प्राणियों ने किस का क्या बिगाड़ा है
दैनंदिन जीवन में इनका बड़ा सहारा है
घास फूस खाकर देते दूध अमृत तुल्य
पर्यावरण संतुलन में पशुधन है अमूल्य।।
गाजर मूली की तरह काटा जा रहा है पशु पक्षी को
जैसे जीने का हक नहीं जग में इनको
जग में जो आया सभी को जीने का हक है
हक छीनने से सजा मिलती इसमें न कोई शक है।।
पालना पोसना तो दूर बेरहमी से काटा जाता है
किया काम जिसने जैसा फल वैसा ही पाता है
सुन करुणा क्रंदन इनका, दिल में रहम नहीं आता है
पानी की क्यों आशा करते, हवामान बिगड़ा जाता है।।
समझ में आया कहाँ गया पानी
दिल में दया नहीं तो सूखा आंखों का पानी
दया अनुकंपा करुणा आदमी की निशानी है
ये गुण नहीं तभी तो सूखा धरती का पानी है।।

-जलगांव (महा.)

परीक्षा के समय मनोबल बनाए रखें

प्यारे भैया बहनों!

असीम स्नेह! रंगों का त्यौहार होली आपके जीवन में श्रम की खुशियों के रंग भरे, ऐसी शुभकामनाएँ।

वर्षभर अध्ययन के बाद अब परीक्षा का समय आ गया है। परीक्षा का नाम सुनते ही बहुतों के पसीने आने लगते हैं। अनवरत परिश्रम, आत्मविश्वास, धैर्य, दृढ़मनोबल रखकर परीक्षा में सफलता प्राप्त की जा सकती है। सालभर तक आपने जो अध्ययन किया है, मेहनत की है वह ही परीक्षा में फलदायी होगी, परन्तु मैं आपके लिए कुछ सूत्र दे रहा हूँ, जिन्हें अपनाकर आप परीक्षा में सफलता सुनिश्चित कर सकते हैं।

सफलता का शार्टकट नहीं–अधिकांश विद्यार्थी परीक्षा के दिनों में महत्त्वपूर्ण प्रश्नों की तलाश में रहते हैं। येनकेन प्रकारेण परीक्षा में आने वाले प्रश्नों की जानकारी करना उनका उद्देश्य होता है। कई विद्यार्थी प्रश्नों, गैस पेपर, वन वीक सीरिज का सहारा लेकर कम मेहनत में अच्छी सफलता हासिल करना चाहते हैं, जो उचित नहीं है। याद रखिये कठोर परिश्रम का कोई विकल्प नहीं होता। सफलता के मणिमुक्तक धूलि में बिखरे नहीं पड़े हैं, उन्हें पाना है तो गहरे में उतरने की हिम्मत इकट्ठी करो, कठोर परिश्रम के लिए शपथ ग्रहण करो। कठोर परिश्रम से टपकने वाले स्वेदकण ही जीवन का महान् पुरस्कार हैं। उसी से सफलताओं को पाया जा सकता है। जिसने भी कुछ कहने लायक सफलता पाई है, उसे गहराई तक उतरना पड़ा है। विजय श्री का वरण करने के लिए गलियाँ ढूंढना बेकार है, वे भटका सकती हैं। आपको यदि कहीं से महत्त्वपूर्ण प्रश्न मिलते हैं तो आप उन प्रश्नों में से जिसका उत्तर आपको पता नहीं है उसे तैयार करें। न कि ऐसे महत्त्वपूर्ण प्रश्नों पर ही आश्रित होकर शेष अध्ययन छोड़ दें।

मानसिक दबाव में न आएँ– परीक्षा के दिनों में बेहतर परिणाम की लालसा में मानसिक दबाव में आकर छात्र-छात्राएँ देर रात तक अध्ययन करते हैं। नींद भगाने के लिए चाय, दवाइयों का प्रयोग भी करते हैं । इन सबसे स्वास्थ्य पर कुप्रभाव तो पड़ता ही है आपको परीक्षा में श्रेष्ठ परिणाम भी नहीं मिलता, क्योंकि मानसिक रूप से थके होने के कारण परीक्षा कक्ष में उत्तर स्मरण नहीं आते। परीक्षा में प्रस्तुतीकरण कमजोर होने पर सब कुछ गुड़ गोबर

हो जाता है। कई बार बीमार होने पर परीक्षा से वंचित होने की नौबत भी आ जाती है।परीक्षा के दिनों में मस्तिष्क एवं आंखों को पूरा विश्राम देना आवश्यक है। परीक्षा के दिनों में शयन और जागरण सामान्य दिनों की तरह ही करें।

समय सारिणी बनाएँ—योजनाबद्ध रूप से समयसारिणी बनाकर आप परीक्षा में इच्छित सफलता पा सकते हैं। कभी-कभी विद्यार्थी एक ही विषय पर अधिक जोर देते हैं। इससे शेषविषयों में उनके प्राप्तांक कम होते हैं। सभी विषयों को उचित समय देकर दिनचर्या बनाएँ। कंठस्थीकरण वाले विषय सुबह जल्दी पढ़ें। गणित दोपहर एवं रात्रि में पढ़ें। जिन विषयों में आप स्वयं को कमजोर समझते हैं उनको आप कुछ समय अधिक दे सकते हैं। परंतु इतना अधिक नहीं कि बाकी विषयों में पीछे रह जाएँ।

आत्मविश्वास बनाए रखें—आत्मविश्वास के बारे में मैंने पिछले पत्र में बहुत- कुछ लिखा था। परीक्षा के दिनों में आत्मविश्वास बनाए रखना अतिआवश्यक है। इसका सबसे अच्छा तरीका है-परीक्षा का पूर्वाभ्यास। इससे आपकी लेखन की गति बढ़ेगी, कमियाँ मालूम होंगी, उन्हें दूर करके आपको आत्मविश्वास की प्राप्ति भी होगी।

परीक्षा के दिन क्या करें?

- सूर्योदय पूर्व उठें। पूरे पाठ्यक्रम की संक्षेप में पुनरावृत्ति करें।
- परीक्षा के एक घंटा पूर्व अध्ययन करना छोड़ दें। आपने सालभर अध्ययन किया है, अतः घबराने की आवश्यकता नहीं है। एक घंटे के समय हड़बड़ाहट का है, अब आपको कुछ याद भी नहीं होगा, यह समय है-मानसिक शांति का। अपने मस्तिष्क को तनाव रहित करें।
- भोजन बहुत ही हल्का करें। गरिष्ठ भोजन से परीक्षा कक्ष में आलस्य आता है।
- घर से निकलने से पूर्व शांतचित्त होकर एक माला "सिद्धा सिद्धिं मम दिसंतु" की फेरें।
- सभी बड़ों को प्रणाम कर आशीर्वाद लेकर घर से प्रस्थान करें। अपने साथ कोई किताब, पुस्तक, नोट्स न ले जाएँ।
- परीक्षा-विषय से संबंधित कोई चर्चा न करने का प्रयास करें।
- परीक्षा कक्ष में जाने के बाद मौन रहें, अनावश्यक बातचीत नहीं करें। प्रश्न-पत्र प्राप्त होने तक महामंत्र नवकार का स्मरण करें।
- परीक्षा में जिन प्रश्नों का उत्तर आता है लिखें, नहीं आता है तो भी उत्तर लिखने का प्रयास करें। एक सिद्धांत बनालें, न तो किसी को उत्तर

बताएंगे, न ही पूछेंगे।

- उत्तरपुस्तिका में आपकी जानकारी एवं उत्तर के अलावा कुछ न लिखें। परीक्षक के लिए लिखे गए संदेश या याचना भरे शब्दों से आपको नुकसान हो सकता है।

नकल का सहारा कभी न लें— नकल एक दण्डनीय एवं निंदनीय कृत्य है। सरकार ने नकल करने वाले विद्यार्थियों के लिए अर्थदण्ड एवं कारावास का कानून बना लिया है। जिन्हें अपने कुल की मर्यादा या सम्मान की परवाह है, ऐसे छात्र नकल का कभी भी सहारा नहीं लेते।

परीक्षा कक्ष में पूछताछ की प्रवृत्ति भी आपके लिए घातक सिद्ध हो सकती है। कभी-कभी छात्र सही उत्तर लिखकर पुनः इसलिए काट देते हैं कि पड़ौसी छात्र का उत्तर यह नहीं है। उन्हें बाद में बहुत पश्चात्ताप होता है।

आपस में पूछताछ करने से आपका समय तो बिगड़ेगा ही, एकाग्रचित्तता भी समाप्त होगी। हड़बड़ाहट में परीक्षा देकर आप कई गलतियाँ कर बैठेंगे।

आशा है ऊपर बताए सूत्र आपके लिए उपयोगी होंगे। आपकी सफलता की कामना करता हूँ।

कई भैय्या बहनों ने मुझे पत्र लिखे हैं, आदोनी, करनूल (आ.प्र.) से मनीष जैन, मकराना से दीपशिखा, डोंडीलोहारा से स्नेहा, जयपुर से प्रवीण लोढ़ा! आप सभी को हार्दिक धन्यवाद।

अच्छा तो अब आप अध्ययन में जुट जाएँ, अगले पत्र में फिर मिलेंगे।

तुम्हारा भैया

नवलसिंह जैन (अधीक्षक), श्री जयमल जैन छात्रावास
पो. मेड़ता शहर, जिला-नागौर(राज.) ३४१५१०

जीवन

श्री सुरेशचन्द कोठारी

जीवन एक पुष्प है-जो कभी भी मुरझा सकता है।
जीवन एक सपना है- जो कभी भी टूट सकता है।
जीवन एक झरना है- जो बहता है और सूख जाताहै।
जीवन एक हवा का झोंका है- जो आता है और चला जाता है।
जीवन एक सागर है- जिसमें तरंगे आती हैं और शांत हो जाती हैं।
जीवन एक तमाशा है-हंसाता है और रूलाता है।
जीवन एक जलता हुआ दीपक है-जो कभी भी बुझ सकता है।
जीवन प्रभु से मिला वरदान है- जो कभी भी क्षण-भंगुर हो सकता है।

-१८, अचरोल हाउस, सिविल लाइन्स, जयपुर

साहित्य-समीक्षा

डॉ. धर्मचन्द जैन

जैन दर्शन के नवतत्त्व—*जैन साध्वी डॉ. धर्मशीला जी,* ***प्रकाशक***— *(1) प्राच्य विद्यापीठ, शाजापुर (म.प्र.), (2) पार्श्वनाथ विद्यापीठ, आई.टी.आई. रोड़, वाराणसी (उ.प्र.), (3) रिसर्च फाउण्डेशन फॉर जैनोलॉजी, चेन्नई, (4) श्री गुजराती श्वे. स्था. जैन एसोशिएशन, चेन्नई, पृष्ठ 18+444,* ***मूल्य*** *400 रुपये,* ***सन्*** *2000*

जैन दर्शन में बन्धन एवं मुक्ति की प्रक्रिया को समझने के लिए नव तत्त्वों को समझना आवश्यक है। नव तत्त्व हैं- जीव, अजीव, पुण्य, पाप, आस्रव, संवर, निर्जरा, बन्ध और मोक्ष। साध्वी श्री उज्ज्वलकुमारी जी की शिष्या डॉ. धर्मशीला जी म.सा. ने 'जैन संस्कृत ग्रन्थों में नव तत्त्वों का विवेचन' विषय पर पी-एच.डी. उपाधि हेतु पूना विश्वविद्यालय को मराठी भाषा में शोधप्रबन्ध प्रस्तुत किया था, जिस पर उन्हें सन् १६७७ में यह उपाधि प्रदान की गई। महासती जी का शोध प्रबन्ध पहले मराठी भाषा में प्रकाशित हुआ, फिर गुजराती में तथा अब हिन्दी में प्रकाशित हुआ है। हिन्दी में प्रकाशित इस पुस्तक का सम्पादन मूर्धन्य मनीषी विद्वान् डॉ. सागरमल जी जैन ने किया है। नवतत्त्वों पर यह पुस्तक साधारण पाठकों की ज्ञानवृद्धि में सहायक सिद्ध हो सकती है। साध्वीजी ने भारतीय दर्शन एवं विज्ञान के साथ भी पदे-पदे तुलना प्रस्तुत करते हुए ग्रन्थ को विद्वत्ता प्रदान की है।

अनुभव वाणी : एक समीक्षात्मक अध्ययन (जैन दर्शन के विशेष संदर्भ में) *—साध्वी डॉ. अमितप्रभाजी,* ***प्रकाशक***—*मुनि श्री हजारीमल स्मृति प्रकाशन, पीपलियां बाजार, ब्यावर—305901,* ***पृष्ठ*** *400,* ***मूल्य***—*151 रुपये, विक्रम सम्वत् 2058 भाद्रपद*

निर्गुण भक्ति की ज्ञानाश्रयी परम्परा में रामस्नेही सम्प्रदाय का महत्त्वपूर्ण स्थान है। इसी सम्प्रदाय में सन्त सुखराम दास जी एक अनुभव सिद्ध उदार विचारधारा के सन्त हुए। अध्यात्मसाधिका महासती श्री उमरावकंवरजी 'अर्चना' के सान्निध्य में उनकी सुशिष्या साध्वी अमितप्रभा जी ने सन्त सुखरामदासजी की कृति अणभै वाणी (अनुभव वाणी) पर जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय से डॉ. चेतनप्रकाश जी पाटनी के निर्देशन में पी-एच.डी. उपाधि प्राप्त की है। साध्वीजी ने 'अनुभव वाणी' में काव्य, समाज और दर्शन' विषय पर कार्य किया था, जिसे यथावश्यक संशोधित कर 'अनुभव वाणी : एक समीक्षात्मक अध्ययन (जैन दर्शन के विशेष संदर्भ में)' शीर्षक से प्रकाशित किया गया है। शोध ग्रन्थ सात अध्यायों में आबद्ध है। प्रथम अध्याय में निर्गुण भक्ति धारा एवं प्रमुख सन्तों पर प्रकाश डाला गया है। दूसरे अध्याय में रामस्नेही सम्प्रदाय एवं सन्तसुखरामदास जी का जीवन-परिचय है। तृतीय, चतुर्थ एवं पंचम अध्यायों में क्रमशः अनुभव वाणी का

साहित्यिक, सामाजिक एवं दार्शनिक दृष्टि से मूल्यांकन किया गया है। षष्ठ अध्याय में सन्त सुखरामजी के जैन धर्म-दर्शन के ज्ञान की सोदाहरण चर्चा करते हुए प्रतिपादित किया गया है कि उनके काव्य में जैन धर्म के तीर्थंकर, सोलह सतियों, बत्तीस दोष, पाँच ज्ञान, कर्म, मोक्ष आदि का विवरण उपलब्ध है। सप्तम अध्याय उपसंहार के रूप में है। शोध प्रबंध पूरे श्रम एवं निष्ठा के साथ तैयार किया गया है, जिसकी उपादेयता का अनुभव जैन एवं रामस्नेही सम्प्रदाय दोनों को हो सकेगा।

जिनवाणी पर अभिमत

आपके द्वारा प्रकाशित पत्रिका बहुत ही अच्छी, नेक और मार्गदर्शक है। नित्य सन्त-दर्शन कई ग्रामों में दुर्लभ है, पर आपके द्वारा प्रकाशित पत्रिका से सन्त वाणी, गुरु वाणी और जिनवाणी पढ़कर जरूर संत-दर्शन होते हैं। अज्ञान को दूर करने का आपका संतुलित संकल्प 'जिनवाणी' मासिक है। आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा.एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. की प्रेरणा निश्चित रूप से आप जिनवाणी के माध्यम से सार्थक कर रहे हैं। आपका सफर ऐसा ही यशस्वी हो, यही शुभकामना करते हैं।

दिनांक २१.०१.2003 *एम.दिलीपकुमार बागमार, वडाला-वडाली*

जिनवाणी का जो पिछले लगभग एक वर्ष से सम्पादकीय लेख आ रहा है, उससे इस पत्रिका की ख्याति में अभिवृद्धि हुई है। प्रत्येक लेख पढ़ने योग्य है। फरवरी २००३ में 'ऋषि परम्परा और आचार्य श्री आनन्दऋषि जी म.सा.' की रचना से तो जिनवाणी पत्रिका की ख्याति बढ़ेगी। यह सब आपकी मेहनत, कौशल एवं गुरुभक्ति का ही प्रताप है।

,दिनांक २0.0२.2003 *हस्तीमल गोलेछा, ब्यावर*

जिनवाणी का प्रायः हर सम्पादकीय आपके व्यापक आगमज्ञान, गहरी सूझबूझ एवं गम्भीर चिन्तन का द्योतक है। जिनवाणी के पाठकों की बढ़ती संख्या पत्रिका की लोकप्रियता में वृद्धि का प्रतीक है।एतदर्थ बधाई स्वीकार करें।

दिनांक २१.0२.2003 *प्रो. चांदमल कर्णावट, मुम्बई*

जिनवाणी के कागज प्रिण्टिंग उत्तम हैं। यह विशेष दर्जे की ऊँचाईयों को छू रही है, जो काबिले तारीफ है।

दिनांक १९.0२.2003 *सुरेशचन्द कोठारी, जयपुर*

महामहिम राष्ट्रपति द्वारा पुस्तक 'शाकाहार ही क्यों?' का लोकार्पण और उनके द्वारा शाकाहार के प्रति विशेष आस्था से कट्टर शाकाहारी होने की अभिव्यक्ति में आबद्ध समाचार (जिनवाणी माह फरवरी २००३) ने अहिंसाप्रेमियों को अभिभूत कर दिया। उक्त समाचार शाकाहार प्रचार अभियान को बल देगा, इसमें सन्देह नहीं।

दिनांक २0.0२.2003 *राजेन्द्र प्रसाद जैन, भवानीमण्डी*

समाचार-संकलन

अक्षयतृतीया की स्वीकृति पूना सकल श्रीसंघ को

पूना सकल श्रीसंघ की भावभरी विनति पर रत्नवंश के अष्टम पट्टधर आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, **परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा.** ने तप और दान के विशिष्ट पर्व अक्षय तृतीया की साधु मर्यादा में रखने योग्य सभी आगारों के साथ पूना सकल श्रीसंघ को स्वीकृति प्रदान कर दी है।

अक्षय तृतीया का पावन पर्व वैशाख शुक्ला ३, रविवार तदनुसार ४ मई २००३ को समुपस्थित हो रहा है। एकान्तर तप की साधना करने वाले, नवीन व्रत-प्रत्याख्यान अंगीकार करने वाले श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं तथा श्रीसंघों से विनम्र अनुरोध है कि वे अपने पारिवारिक-परिजनों और इष्ट मित्रों के साथ पूना सकल श्रीसंघ के तत्त्वावधान में आयोजित तप पूर्णाहूति समारोह में भाग लें। आचार्यप्रवर आदि संत-मुनिराजों के दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण, सत्संग-सेवा के लाभ के साथ तप और दान के पावन प्रसंग पर व्रत-नियम युक्त श्रद्धा समर्पित करें।

-अरुण मेहता, महामंत्री

सूरत में अपूर्व धर्म-प्रभावना

परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ८ डहाणू-वापी-बलसाड़-नवसारी क्षेत्र में धर्मोद्योत-धर्मप्रभावना करते १ फरवरी को उधना-सूरत पधारे। उधना स्थानक में श्रद्धालुओं की विशाल जनमेदिनी के कारण जन समुदाय को स्थानक के बाहर खड़े रहकर प्रवचन सुनना पड़ा। दिनांक ३ फरवरी को आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के दीक्षा-दिवस पर आचार्यप्रवर ने स्व-अनुभूति के अनेक प्रसंग रखते उस दिव्य-दिवाकर के गुण स्मरण तो किए ही स्थानकवासी समाज में अहिंसा-शील-सदाचार के क्षेत्र में उस महापुरुष का कृतित्व रखते फरमाया कि हमें युगद्रष्टा आचार्य भगवन्त के गुणों का अनुसरण करना है। आचार्य भगवन्त के दीक्षा-दिवस पर त्याग-तप की अच्छी प्रभावना रही। दिनांक ४ फरवरी को उधना स्थानक से विहार कर आचार्यप्रवर कैलाशनगर स्थित धानेरा स्थानक पधारे जहां श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन संघ के अध्यक्ष श्री रतीलाल भीखाभाई गांधी ने आचार्यप्रवर के कैलाशनगर पदार्पण पर अपनी एवं संघ की ओर की से हार्दिक स्वागत-अभिनन्दन करते हुए विनती रखी की आप पूरा शेखेकाल यहां

विराजकर हमें जिनवाणी का अमृत पान करायें। दिनांक ४ फरवरी को विरक्ता बहिन अपने पारिवारिक-परिजनों एवं मांडल ग्रामवासियों के साथ सूरत पहुंची तो सूरत शहर में दीक्षा महोत्सव के प्रति आबाल वृद्ध सबका उत्साह कई गुना बढ़ गया। देशभर के श्री संघ एवं श्रद्धालु श्रावक- श्राविकाओं का ४ फरवरी से सूरत पहुँचना प्रारम्भ हुआ जो दीक्षाभिषेक तक बराबर बना रहा। ७ फरवरी को शोभायात्रा एवं वीर माता-पिता, विरक्ता बहिन के सम्मान में अभिनन्दन समारोह तथा ८ फरवरी को भव्य भागवती दीक्षा संघ की गौरव-गरिमा के अनुरूप हर्षोल्लास पूर्वक सम्पन्न हुई।

दिनांक ९ फरवरी को आचार्यप्रवर भटाररोड़ स्थानक पधारे। समीप में स्कूल में प्रवचन रखा गया। दिनांक १० फरवरी को पार्लेपाइन्ट और तदनन्तर संग्रामपुरा, कतारगांव फरसकर आचार्यप्रवर १५ फरवरी को अमरोली पधारे। दिनांक १६ फरवरी को नवदीक्षिता महासती जी को पूज्य गुरुदेव ने छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ करवाया। बड़ी दीक्षा पर स्थानीय एवं आगत श्री संघों ने व्रत-नियम युक्त श्रद्धा समर्पित कर कार्यक्रम में उत्साह प्रदर्शित किया। मद्रास, पूना, नंदुरबार, वर्मानगर-मुम्बई, इन्दौर, अहमदाबाद, अमरावती, नागपुर, जोधपुर, कोटा, हुबली, बीजापुर, बाकड़ी, साक्री आदि श्रीसंघों की ओर से चातुर्मास की भावपूर्ण विनतियाँ आचार्यप्रवर के श्रीचरणों में रखी गई। जामनेर और मांडल श्री संघ ने भी चातुर्मास की विनतियाँ रखी।

अमरोली से टीकमनगर ज्ञान गंगा प्रवाहित करते आचार्यप्रवर मॉडल टाउन पधारे। आचार्यप्रवर जहाँ भी पधारते हैं, धर्मस्थान में आकर सामायिक करने की प्रभावी प्रेरणा करते हैं। महाराष्ट्र के अन्य-अन्य क्षेत्रों की भांति सूरत शहर में और उपनगरों में सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने धर्मस्थान में प्रतिदिन/ साप्ताहिक सामायिक के नियम स्वीकार किये। मॉडल टाउन में आचार्यप्रवर ने साम्प्रदायिक निन्दा से बचने की प्रेरणा की। प्रवचन-प्रभाकर आचार्यप्रवर की प्रेरणा और अतिशय से प्रवचन सभा में उपस्थित भाई-बहिनों ने साम्प्रदायिक निंदा-विकथा नहीं करने का संकल्प किया।

सूरत शहर में आचार्यप्रवर के पदार्पण से सूरतवासियों को जैन भागवती दीक्षा के अनुमोदन का अपूर्व लाभ तो मिला ही, विभिन्न क्षेत्रों में श्रावक-श्राविकाओं ने उत्साह से दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सत्संग-सेवा के लाभ के साथ व्रत-नियम अंगीकार करने में भावना का सुन्दर रूप प्रदर्शित किया। शहर एवं उपनगरों के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं ने साम्प्रदायिकता को गौणकर सेवा-भक्ति का अनुपम आदर्श उपस्थित किया। सूरत में सर्व श्री विजयराज जी खींवसरा-मांडल, श्री कन्हैयालाल जी बोथरा-डहाणू, श्री माणकमल जी भण्डारी-सूरत ने दीक्षा के समय सपत्नीक शीलव्रत के खंद किये। श्री अशोक जी मेहता, अध्यक्ष सुधर्म स्था. जैन संघ,

सूरत, श्री गणपत जी ललवाणी, और श्री नौरतनमल जी ललवानी ने भी शीलव्रत के खंद किये। कई श्रावकों ने मर्यादित समय सीमा के अन्तर्गत ब्रह्मचर्य के नियम अंगीकार किये। सामायिक-साधना के प्रति जनभावना सराहनीय रही।

सूरत से विहार कर आचार्यप्रवर चलथान-पलसाना क्षेत्र में ज्ञान-गंगा प्रवाहित कर नवसारी पधारे। नवसारी श्रीसंघ ने कुछ दिन विराजने की विनति रखी, लेकिन आचार्यप्रवर ने पूना की ओर विहार की भावना का संकेत कर फरमाया कि मुझे अभी दूर तक जाना है, नवसारी श्रीसंघ ने पहले भी सेवा का लाभ लिया है। आचार्यप्रवर ने नवसारी से अष्टगांव विहार किया। आगे बलसाड़-वापी-विरार होते हुए पूना की ओर बढ़ने की संभावना है। **सम्पर्क सूत्र- श्री मोफतराज जी मुणोत, मुणोत विला, वेस्ट कम्पाउण्ड लेन, ६३-के, भूलाभाई देसाई रोड़, मुम्बई-४०००२६ (महा.)**

मध्यप्रदेश में धर्मोद्योत

परम श्रद्धेय उपाध्याय पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा., सेवाभावी श्री मंगलमुनि जी म.सा., विद्याभिलाषी श्री यशवन्तमुनि जी म.सा. ठाणा ३ का पदार्पण होने से इन्दौरवासियों को दर्शन-वन्दन, प्रवचन-श्रवण और सत्संग- सेवा का सुयोग तो मिला ही, श्रद्धालुओं ने व्रत-नियम अंगीकार कर अपनी भक्ति-भावना का परिचय भी दिया। जानकी नगर में आचार्य भगवन्त के जन्म- दिवस पर त्याग-तप की अच्छी प्रभावना रही। महावीर भवन एवं उपनगरों में भी अपूर्व उत्साह देखा गया। विभिन्न उपनगरों की भावपूर्ण विनतियों के कारण उपाध्यायप्रवर साधना-आराधना की ज्यों ही पृच्छा करते, आबाल-वृद्ध सामायिक-स्वाध्याय, दया-संवर के लिए सहज तत्पर हो जाते।

इन्दौर से ग्रामानुग्राम ज्ञान-गंगा प्रवाहित करते हुए उपाध्याय प्रवर ६ फरवरी को उज्जैन पधारे। तपस्वी श्री कानमुनि जी आदि ठाणा करीब २½ किलोमीटर उपाध्यायप्रवर की अगवानी में पधारे। श्रद्धेय श्री कानमुनिजी, तपस्वी श्री मानमुनि जी, गीतार्थ श्री पारसमुनि जी के साथ साम्प्रदायिक सौहार्द भाव के कारण उपाध्यायप्रवर महावीर भवन स्थानक में करीब एक सप्ताह विराजे। दो सम्प्रदायों के संतरत्नों का एक साथ ठहरना और परस्पर प्रेम का सुन्दर दृश्य देखकर जन समुदाय आह्लादित था। उपाध्यायप्रवर के पधारने के बाद पूर्व से विराजित सन्तों ने अपना प्रवचन नहीं करके श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर आदि संतों के प्रवचन करवाये, जिसका उज्जैनवासियों ने भावनापूर्वक लाभ लिया। दोपहर के बाद उपाध्यायप्रवर द्वारा उत्तराध्ययन सूत्र का वाचन, रात्रि में सन्तों द्वारा पृष्ट प्रश्नों का समुचित समाधान का दृश्य अद्भुत था। रात्रि में प्रश्नोत्तर का दृश्य ऐसा लगता था, जैसे गौतम गणधर और केशिश्रमण का मिलन हुआ हो।

उपाध्यायप्रवर मारवाड़ पधारने के लक्ष्य से महाराष्ट्र से चिन्तन बनाए हुए विहार कर रहे थे, अतः आगे बढ़ने की भावना होते हुए भी सेवाभावी सुश्रावक श्री

पारसचन्द जी चोरड़िया एवं उज्जैन के सुज्ञ श्रावकों की पुरजोर विनती के कारण १६ फरवरी को नयापुरा स्थानक विराजे और फिर उज्जैन से विहार किया। मध्यप्रदेश में गांव-गांव, नगर-नगर के श्री संघ व श्रद्धालु अपने-अपने क्षेत्र को फरसने की विनतियाँ लेकर आते, जिन्हें उपाध्यायप्रवर सहजभाव से यह कहते देखो-क्या फरसना बनती है। उपाध्यायप्रवर आगत लोगों से सामायिक-स्वाध्याय और धर्म-ध्यान की पृच्छा करते तो भक्तों की सहज भावना बने बिना नहीं रहती और हर आगत अपनी शक्ति और सामर्थ्य से कोई-न-कोई व्रत-नियम जरूर स्वीकार करता। १७ फरवरी को उज्जैन से विहार कर आप २० फरवरी को महीदपुर पधारे।

सैंधवा से प्रवेश कर उपाध्याय प्रवर ने अब तक मध्यप्रदेश के गांवों-कस्बों-नगरों को जिनवाणी का अमृत पान कराते हुए सामायिक-स्वाध्याय-साधना और सेवा में सतत जागरूक रहने की प्रेरणा की है, जिससे मध्यप्रदेश में जहां- जहां उपाध्यायप्रवर का विचरण हुआ है वहां धर्मध्यान के ठाट लगे रहे।

महीदपुर से विहार कर उपाध्यायप्रवर कोटा की ओर बढ़ रहे हैं। झारड़ा-बड़ौद होते हुए डग पधारने के समाचार ज्ञात हुए हैं। फाल्गुनी चौमासी तक उपाध्यायप्रवर कोटा पधार सकते हैं।**सम्पर्क सूत्र-श्री बुद्धिप्रकाश जी जैन, महेन्द्र सेव भण्डार, आर्य समाज मार्ग, कोटा (राज.)**

सूर्यनगरी में उत्साह का संचार

मधुरव्याख्यानी श्री गौतममुनि जी म.सा., तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म. सा. ठाणा २ पालासनी चातुर्मास पश्चात् जोधपुर पधारे, तब से जोधपुर शहर एवं उपनगरों में सत्संग-सेवा और संत-समागम से जोधपुर वासी अत्यन्त हर्षित हैं। लक्ष्मीनगर, हेमसिंह जी का कटला, महावीर नगर, इन्कमटैक्स कॉलोनी, पावटा, घोड़ों का चौक, सरदारपुरा, कमला नेहरू नगर, जहां-जहां भी मुनि मण्डल का पदार्पण हुआ, सर्वत्र प्रवचन सभा में अच्छी उपस्थिति से लगता है जोधपुर वासी संत-समागम से उत्साहित हैं। आचार्य भगवन्त का जन्म-दिवस और दीक्षा-दिवस घोड़ों का चौक में त्याग-तप के साथ मनाया गया। मुनिद्वय जहां भी पधारे, भक्तों में भक्ति-भावना देखी गई। मधुरव्याख्यानी मुनिश्री के प्रवचन सामयिक विषयों से ओतप्रोत रहते हैं वहीं आबाल-वृद्ध सबको सामायिक-स्वाध्याय की सतत व प्रभावी प्रेरणा से जोधपुर के धर्म-स्थान सामायिक-साधना करने वाले श्रावक-श्राविकाओं के लिए आकर्षण का केन्द्र बने हुए हैं। रविवारीय सामूहिक सामायिक में निरन्तर बढ़ती उपस्थिति प्रेरणादायी है।

जोधपुर के अनेक उपनगर मुनि मण्डल की सेवा में अपनी विनतियां रख रहे हैं। मधुरव्याख्यानी मुनिश्री भी सबको यथायोग्य समय देकर ज्ञान-ध्यान सिखाने में समय का उपयोग कर रहे हैं।

कमला नेहरू नगर क्षेत्र से मुनिद्वय चौपासनी हाउसिंग बोर्ड स्थित

सामायिक- स्वाध्याय भवन पधार गए है। **सम्पर्क सूत्र- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, घोड़ों का चौक, जोधपुर(राज.)**

महासती मण्डलों के विहार

- **साध्वीप्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ३ घोड़ों का चौक स्थानक, जोधपुर में सुख शांति पूर्वक विराजमान हैं।
- **शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरी जी म.सा.** आदि ठाणा घोड़ों का चौक स्थानक में आचार्य भगवन्त के जन्म-दिवस, दीक्षा-दिवस मनाकर सरदारपुरा गांधी मैदान स्थित मोदी हाउस कुछ दिन विराजकर नेहरू पार्क स्थानक पधारे। नेहरूपार्क स्थानक से २५ फरवरी को विहार कर शासन प्रभाविका जी म.सा. पी.डब्लू. डी. कॉलोनी पधारे हैं। सरस्वती नगर आदि समीपवर्ती क्षेत्रों की विनतियाँ हैं।
- **सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ४ जब गोटन विराज रहे थे, तब नेत्र चिकित्सा शिविर में आए डॉ. रतन पुरोहित ने सेवाभावी महासती जी की नेत्रज्योति का परीक्षण कर परामर्श दिया कि आप जोधपुर पधारें तब ऑपरेशन कराना हितावह रहेगा। महासती मण्डल गोटन से खारिया-पालड़ी-खांगटा-साथिन क्षेत्र फरसते १६ फरवरी को पीपाड़ पहुंचा। तीन दिन पीपाड़ विराजकर रिंया-बुचकला-चोढ़ा-बीनावास-दांतीवाड़ा-डांगियावास-देवरिया-बनाड़ होकर १ मार्च को जोधपुर पधारे हैं।
- **शान्तस्वभावी तपस्विनी महासती श्री शान्तिकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ४ स्वास्थ्य संबंधी कारणों से भोपालगढ़ विराज रहे हैं। महासती मण्डल के सान्निध्य में २५ से ३१ दिसम्बर २००२ तक धार्मिक शिक्षण शिविर में ७० बालक-बालिकाओं ने ज्ञानार्जन किया। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के जन्म-दिवस पर हुए तप-त्याग के अनन्तर भी धर्माराधन का क्रम बना हुआ है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री तेजकंवर जी म.सा.** ८ फरवरी को दीक्षा पर सूरत पधारने की भावना रखते थे, किन्तु विहार की अनुकूलता नहीं होने से आपने अपनी नेश्रायवर्तिनी व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. और महासती श्री विमलेशप्रभा जी म.सा. को अलग-अलग संघाड़ों में विहार कर सूरत पहुंचने की आज्ञा दी और चार सतियों को अपनी सेवा में जायखेड़ा रखा। महासती मण्डल का समीपवर्ती क्षेत्रों में विहार चल रहा है। व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा ७ ने सूरत से १८ फरवरी को विहार किया जो नवसारी क्षेत्र फरसकर गुरुणी जी की सेवा में महाराष्ट्र की ओर

विहार करने की भावना रखते हैं।

- **व्याख्यात्री महासती श्री रतनकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ५ अहमदाबाद सुखशांति पूर्वक विराजमान हैं। महासती श्री उषाजी म.सा. के स्वास्थ्य में सुधार चल रहा है।अहमदाबाद के सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं ने श्रमणोचित औषधोपचार में भावनापूर्वक सहयोग दिया है और दे रहे हैं, वह अनुकरणीय है।
- **विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ६दीक्षा पूर्व सूरत पधार गये थे, सूरत के उपनगरों को फरसते नवसारी पधारे, जहां से बलसाड़-वापी-डहाणू की ओर अग्र विहार चल रहा है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री सौभाग्यवती जी (सोहन जी) म.सा.** आदि ठाणा ४ ने १९ फरवरी को लक्ष्मीनगर से विहार किया। लोढ़ा प्याऊ, बनाड़, डांगियावास होते हुए महासती मण्डल का २२ फरवरी को बीनावास पदार्पण हुआ, जहां सेवाभावी महासती श्री संतोषकंवर जी म.सा. आदि ठाणा ४ चोढ़ा से बीनावास पधारे थे, दोनों संघाड़ों का बीनावास में मिलना हुआ। बीनावास से कापरड़ा-भावी-पिचियाक फरसते महासती मण्डल का २६ फरवरी को बिलाड़ा पदार्पण हुआ। ब्यावर की ओर अग्र विहार संभावित है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा.** आदि ठाणा ६ अजमेर विराजित थे, अजमेर से दो अलग-अलग संघाड़ों में विहार किया। व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवर जी म.सा. नसीराबाद पधारे तथा महासती श्री समर्पिता जी म.सा. आदि ठाणा ४ किशनगढ़ पधारे जो नसीराबाद पहुंचकर पुनः मिल गये। नसीराबाद से आगे-पीछे विहार करते हुए महासती मण्डल का विजयनगर पदार्पण हुआ। विजयनगर से आगे-पीछे विहार करके धनोप-केकड़ी पधारने की संभावना है। पोरवाल क्षेत्र की ओर अग्र विहार संभावित है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलता जी म.सा.** आदि ठाणा ३ भीलवाड़ा से ग्रामानुग्राम ज्ञान-गंगा प्रवाहित करते उदयपुर पधारे। उदयपुर के सेवाभावी सुश्रावक श्री राजेन्द्र जी कुम्भट, श्री पार्श्वकुमार जी मेहता आदि श्रावकों ने विहार-सेवा का लाभ लिया और निरन्तर लाभ ले रहे हैं। महासती मण्डल उदयपुर से कपड़गंज-सामलाजी होते बड़ौदा(गुजरात) की ओर बढ़ रहे हैं जिनके मार्च के प्रथम सप्ताह में बड़ौदा पहुँचने की संभावना है।
- **व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवती जी म.सा.** आदि ठाणा ३ ने सवाईमाधोपुर से विहार कर आचार्य भगवन्त का दीक्षा-दिवस बजरिया में मनाया। वहाँ से महासती मण्डल ग्रामानुग्राम विहार करते हुए २५ फरवरी को गंगापुर पहुंचा है।

सूरत शहर में मुमुक्षु सुश्री पायल खींवसरा की भव्य भागवती दीक्षा सम्पन्न

रत्नवंश के अष्टम पट्टधर आगमज्ञ प्रवचन-प्रभाकर व्यसन-मुक्ति के प्रबल प्रेरक परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री १००८ श्री हीराचन्द्र जी म.सा., महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. आदि ठाणा ८, विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवर जी म.सा., व्याख्यात्री महातसी श्री सरलेशप्रभा जी म.सा. आदि ठाणा १२ के पावन सान्निध्य में मांडल निवासी वीरपिता सुश्रावक श्री विजयकुमार जी खींवसरा एवं वीरमाता किरणदेवी जी खींवसरा की आत्मजा मुमुक्षु सुश्री पायल खींवसरा की भागवती दीक्षा दयालजी आश्रम, मजूरा गेट, सूरत के विशाल प्रांगण में **माघ शुक्ला सप्तमी ८ फरवरी २००३** को संघ की गौरव-गरिमा के अनुरूप अत्यन्त भव्यता से सम्पन्न हुई। दीक्षाभिषेक के पावन प्रसंग पर दरियापुरी सम्प्रदाय की विदुषी महासती श्री कुसुमबाई जी महाराज आदि ठाणा ने पधार कर दीक्षा की अनुमोदना की।

प्रातः काल लगभग १० बजे माता-पिता, पारिवारिक परिजन और संघ पदाधिकारियों की अनुमति प्राप्त कर आचार्यप्रवर ने अपने मुखारविन्द से दीक्षार्थिनी बहिन को मंगलपाठ सुनाया और उसके पश्चात् विधिपूर्वक 'करेमि भंते' के पाठ से दीक्षा प्रदान की। दीक्षा के इस पावन अवसर पर लगभग पाँच हजार श्रावक-श्राविकाओं ने साक्षात् अनुमोदन का लाभ लिया। वीरपिता श्री विजयकुमार जी खींवसरा एवं वीरमाता श्रीमती किरणदेवी जी खींवसरा ने आजीवन शीलव्रत का खंद कर त्याग का आदर्श उपस्थित किया। तपस्वी श्री प्रकाशमुनि जी म.सा. के सांसारिक भ्राता श्री माणकमल जी भण्डारी एवं डहाणू के श्रावक श्री कन्हैयालालजी बोथरा ने भी ब्रह्मचर्य व्रत अंगीकार किया। आचार्यप्रवर ने चरित्र और चारित्र की व्याख्या करते हुए फरमाया कि लोकजीवन में जितनी शान्ति एवं सौहार्द चरित्र से बढ़ता है, उससे अधिक लाभ चारित्र पर चरण बढ़ाने वाले को 'समाधि' का मिलता है। दीक्षा-पाठ के पूर्व श्री कपिलमुनि जी म.सा., तत्त्वचिन्तक श्री प्रमोदमुनि जी म.सा. एवं महान् अध्यवसायी श्री महेन्द्रमुनि जी म.सा. ने भी धर्मसभा को सम्बोधित करते हुए वैराग्य का महत्त्व प्रतिपादित किया।

मुमुक्षु बहिन पायल खींवसरा ने दीक्षा के पूर्व अपने विचार प्रकट करते हुए अपने माता-पिता और परिवारजन के सहयोग के प्रति एवं परम श्रद्धेय आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर पूज्य श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सन्त-प्रवरों एवं अनन्त उपकारिणी गुरुणी जी के प्रति अपनी भक्तिभावना प्रदर्शित कर हार्दिक क्षमायाचना की और कहा कि आप अम्मा-पिया का दायित्व निभायें और मेरी संयम-साधना में कहीं कोई कमी दिखे तो मुझे चेताएँ।

मुमुक्षु बहिन के ओजस्वी वचनों, चेहरे की प्रफुल्लता एवं अधिकारपूर्वक बोलने की कला देखकर जनसमुदाय प्रभावित हुए बिना नहीं रहा। वीरमाता किरणदेवी जी ने अपने विचार प्रकट करते हुए कहा- "हर माता का एक स्वप्न होता है कि उसकी कोख से पुत्र पैदा हो। मेरे भाग्य में यह कमी रही, लेकिन मेरी पुत्री लड़के से कम नहीं है, इसनें हमारा नाम रोशन किया है। मैं यह जानती हूँ कि संयम खेल नहीं है। मेरा पायल के लिए यही आशीर्वाद है कि संयम की सम्यक् साधना में तुम पुरुषार्थ करना और एक भवतारी होकर शाश्वत सुख मोक्ष को प्राप्त करना।" मुमुक्षु बहिन के दादा श्री उत्तमचन्द जी खींवसरा ने अपने परिवार के स्वागत-सत्कार के लिए सूरत शहर के श्रावकों का धन्यवाद करते हुए कहा कि मेरी पौत्री धन्य है। रत्नवंश के प्रति अपने परिवार की भक्तिभावना के संबंध में उन्होंने कहा कि मेरे परिवार से कम-से-कम दो दीक्षाएँ और होंगी।

संघ-संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत ने श्रावक-श्राविकाओं को कर्त्तव्य बोध का स्मरण कराते हुए कहा कि हमारे दो मुख्य कार्य हैं। एक है संयम मार्ग में आगे बढ़ने में सहयोग करना और दूसरा है संयम की दृढ़ता में सहयोग करना। अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के अध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना ने सूरत की सुन्दर व्यवस्था के लिए अपनी ओर से एवं अखिल भारतीय संघ की ओर से साधुवाद देते हुए आभार प्रकट किया। उन्होंने मांडल ग्राम के संघ-अध्यक्ष श्री भागचन्द जी खींवसरा के प्रति भी आभार व्यक्त किया कि मेरी कल्पना नहीं थी, किन्तु पूरा मांडल ग्राम दीक्षार्थिनी बहिन के स्वागत-सत्कार में उमड़ पड़ा। मंच संचालन शासन सेवा समिति के सदस्य माननीय श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने किया।

शोभायात्रा– ७ फरवरी २००३ को दीक्षार्थिनी बहन की शोभायात्रा का दृश्य अद्भूत था। प्रातः लगभग ८ बजे दयालजी आश्रम, मजूरा गेट से हाथी-घोड़े-ऊँट एवं भजन मंडलियों से सज्जित शोभायात्रा रिंगरोड़ होती हुई कैलाशनगर क्षेत्र के धानेरा जैन स्थानक पहुँची। शोभायात्रा ने त्याग-वैराग्य के भजनों की ओर जनमानस को आकर्षित किया। भव्य शोभायात्रा में सूरत शहर एवं विभिन्न ग्राम-नगरों से समागत श्रावक-श्राविकाओं द्वारा की गयी जय-जयकार की ध्वनि से आकाश गूंज रहा था।

सूरतवासियों के उत्साह, दीक्षा-महोत्सव में पधारे सुज्ञ श्रावक-श्राविकाओं की भावना और विभिन्न सम्प्रदायों के सहयोग से लगभग ३ घण्टे का कार्यक्रम अत्यन्त उल्लासपूर्वक सम्पन्न हुआ।

स्वागत-अभिनन्दन– ७ फरवरी को ही दयालजी आश्रम में अभिनन्दन समारोह का आयोजन हुआ। भव्य एवं शालीन समारोह में वीरपिता श्री विजयकुमार जी खींवसरा का माल्यार्पण, शॉल, साफा एवं रजत पट्टिका पर अंकित अभिनन्दन पत्र से अभिनन्दन किया गया। वीरमाता सुश्राविका श्रीमती किरणदेवी जी का

अभिनन्दन माल्यार्पण एवं साड़ी ओढ़ा कर किया गया। मुमुक्षु बहिन सुश्री पायल खींवसरा को चून्दड़ी ओढ़ाकर तथा अभिनन्दन पत्र समर्पित कर सम्मानित किया गया। मुमुक्षु बहिन के परिवार जनों का सम्मान सूरत श्रीसंघ की ओर से किया गया।

दीक्षार्थिनी बहिन का सुधर्म जैन श्रावक संघ, धानेरा, स्थानकवासी जैन श्रावक संघ, दरियापुरी, स्थानकवासी जैन संघ संग्रामपुर, आठ कोठी जैन उपाश्रय, अरिहन्त जैन मण्डल, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ नवसारी, रादेड़ श्रीसंघ, साधुमार्गी जैन संघ सूरत, जयमल जैन श्रावक संघ, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ सूरत, श्री वर्द्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ (मेवाड़) उधना, हुक्मगच्छीय शांतक्रांति संघ, सूरत तथा हायर परचेज एसोशियेट आदि संस्थाओं ने मुमुक्षु बहिन का हार्दिक स्वागत-अभिनन्दन किया।

मुमुक्षु बहिन ने अपने भावोद्गार प्रकट करते हुए कहा- "माता-पिता, शिल्पाचार्य और गुरु के अनन्त-अनन्त उपकार कभी भुलाये नहीं जा सकते। वर्ष १९९५ में भोपालगढ़ में पं. रत्न श्री शुभेन्द्रमुनि जी म.सा. के संथारे के समय मेरी माताश्री ने संकल्प किया था कि मेरे परिवार से कोई भी दीक्षित होगा तो मैं सहयोग प्रदान करूँगी। उनके शुभ संकल्प का ही यह सुपरिणाम है कि मैं चारित्रधर्म अंगीकार करने के लिए उद्यत हुई हूँ। मेरे माता-पिता और परिवारजनों ने सहर्ष दीक्षा की अनुमति प्रदान की, इसका मुझे प्रमोद है। मैं आप सबके आशीर्वाद से संयम-साधना में सजग रहकर शाश्वत सुख को प्राप्त करूँ, यही भावना है।"

प्रारम्भ में स्वागताध्यक्ष श्री स्वरूपचन्द जी बाफना ने दीक्षा आयोजन समिति की ओर से विरक्ता बहिन, वीर माता-पिता एवं परिजनों सहित सबका भावभीना स्वागत करते हुए अपनी धन्यता प्रकट की। सूरत महिला मण्डल की बहिनों ने समवेत स्वरों में स्वागत गीत प्रस्तुत किया।

समारोह को मुख्य अतिथि श्री अनिल जी जैन, विशिष्ट अतिथि श्री रतीलाल भीखाभाई गांधी एवं समारोह-अध्यक्ष श्री रतनलाल जी बाफना ने सम्बोधित किया। मंगलाचरण अतिरिक्त महामन्त्री श्री हस्तीमल जी गोलेछा ने किया तथा धन्यवाद ज्ञापन अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के महामंत्री श्री अरूण जी मेहता ने किया। मंच का सुन्दर संचालन शासनसेवा समिति के सदस्य श्री ज्ञानेन्द्र जी बाफना ने किया।

सूरत में १६ फरवरी को बड़ी दीक्षा

सूरत शहर के अमरोली में १६ फरवरी को नवदीक्षिता महासती जी को पूज्य आचार्यप्रवर ने ५ महाव्रतों के साथ छेदोपस्थापनीय चारित्र में आरूढ़ कराया और महासती जी का नाम **'महासती पद्मप्रभा'** रखा गया।

-अरुण मेहता, महामंत्री,
अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ

पल्लीवाल क्षेत्र में धार्मिक प्रचार-प्रसार यात्रा सम्पन्न

स्वाध्यायियों, श्रीसंघों के अध्यक्ष, मंत्री, श्रावक एवं श्राविकाओं को सामायिक-स्वाध्याय एवं व्यसनमुक्ति की प्रेरणा देने हेतु श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर एवं स्वाध्याय संघ शाखा पल्लीवाल क्षेत्र के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक २०.०२.२००३ से २४.०२.२००३ तक धार्मिक प्रचार-प्रसार कार्यक्रम पल्लीवाल क्षेत्र के गंगापुर सिटी, करौली, नसिया गंगापुर, हिण्डौन सिटी, शेरपुर, बरगमा, वर्द्धमान नगर हिण्डौन, बौण, पहरसर, मई, नदबई, खेरली, खौह, सहाड़ी, लक्ष्मणगढ़, मौजपुर, हरसाना, मण्डावर, रसीदपुर, महुवा आदि स्थानों पर आयोजित किया गया।

इस प्रचार-प्रसार कार्यक्रम में श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर की संयोजक श्रीमती सुशीला जी बोहरा, जोधपुर, वरिष्ठ एवं चिन्तनशील तत्त्वज्ञ स्वाध्यायी श्रीमान फूलचन्द जी मेहता, उदयपुर, श्री छगनचन्द जी जैन, खौह, संयोजक-शाखा पल्लीवाल क्षेत्र, श्री रामजीलाल जी जैन, खेरली, प्रचारक-शाखा पल्लीवाल क्षेत्र एवं स्वाध्याय संघ के कार्यालय प्रभारी श्री प्रकाश जी सालेचा ने अपनी अमूल्य सेवायें प्रदान की।

इस प्रचार-प्रसार कार्यक्रम में स्वाध्यायी आमंत्रित करने, आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड द्वारा संचालित धार्मिक परीक्षाओं में भाग लेने और सामूहिक प्रार्थना एवं सामायिक-स्वाध्याय करने की प्रेरणा की गई। इस दौरान २८ नये स्वाध्यायी बनाये गये तथा १७ मई से ३० जून २००३ की अवधि में गंगापुर सिटी, करौली, हिण्डौन सिटी, शेरपुर, पहरसर, नदबई, खौह, लक्ष्मणगढ़, मौजपुर एवं मण्डावर में स्थानीय शिविर आयोजित करने का निर्णय लिया गया। प्रचार-प्रसार के दौरान बरगमा, लक्ष्मणगढ़, मण्डावर, पहरसर में श्राविका मण्डल का गठन किया गया। पल्लीवाल क्षेत्र में संचालित धार्मिक पाठशालाओं का निरीक्षण भी प्रचार के दौरान किया गया एवं पाठशालाओं में अध्यनरत बच्चों की मौखिक परीक्षा भी ली गयी और महुवा एवं गंगापुर (रविवारीय) में नयी धार्मिक पाठशाला भी शुरू की गयी।

—*रिखबचन्द मेहता,* सचिव

आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा २७ जुलाई २००३ को

अखिल भारतीय श्री जैनरत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, की कक्षा १ से ११ तक की आगामी परीक्षा २७ जुलाई २००३, रविवार को दोपहर १२ से २ बजे तक आयोजित की जायेगी।

१९ जनवरी २००३ को आयोजित परीक्षा में जिन्होंने भाग लिया है, उन्हें आगामी परीक्षा हेतु अब आवेदन-पत्र भरकर भिजवाने की आवश्यकता नहीं है। उत्तीर्ण होने वाले परीक्षार्थियों को अगली कक्षा का तथा अनुत्तीर्ण होने वाले परीक्षार्थियों को पुनः उसी कक्षा का प्रवेश-पत्र भेजने की व्यवस्था बोर्ड कार्यालय द्वारा

की जा रही है। नये परीक्षार्थियों एवं दसवीं-ग्यारहवीं कक्षा की परीक्षा देने वालों को ही आवेदन-'पत्र भरकर बोर्ड कार्यालय को भिजवाना आवश्यक है। विस्तृत जानकारी के लिये सम्पर्क करें-**विमला मेहता, संयोजक, अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, घोड़ों का चौक, जोधपुर(राज.), फोन नं. 2630490**

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, जयपुर में प्रवेशार्थ निःशुल्क संस्कार निर्माण शिविर

श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान के तत्त्वावधान में उच्च माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की परीक्षाओं की समाप्ति के पश्चात् एक पंच दिवसीय संस्कार निर्माण शिविर आयोजित किया जायेगा। इस शिविर में इस वर्ष सन् २००३ में जिन्होंने दसवीं की परीक्षा दी है वे ही छात्र आवेदन पत्र प्रेषित करें। इस शिविर के मुख्य उद्देश्य इस प्रकार हैं-

1. **जीवन के सर्वांगीण विकास के लिए आधुनिक वैज्ञानिक पद्धति से जीवनोपयोगी तत्त्वज्ञान संस्कार निर्माण के रूप में शिक्षण दिया जायेगा।**
2. **शिविरार्थियों में से इस संस्थान में प्रवेशार्थी छात्रों का चयन किया जायेगा।**

इस संस्था का उद्देश्य संस्कारशील उच्चस्तरीय जैन विद्वान तैयार करना है। इसके लिए छात्रों को उच्चस्तरीय संस्कृत, प्राकृत आदि विषयों का अध्यापन कराया जाता है, जिससे छात्र बी.ए., एम.ए., आर.ए.एस. आदि की परीक्षाओं में वरीयता सूची में स्थान पाते हैं तथा छात्रों को आत्मनिर्भर होने के लिए पूर्ण सहयोग दिया जाता है, जिससे उन्हें आजीविका के लिए इधर- उधर नहीं जाना पड़ता है। संस्थान में परिश्रमी, सेवाभावी, अनुशासनप्रिय, प्रतिभासम्पन्न छात्रों को ही प्रवेश दिया जाता है। संस्थान के छात्रों की भोजन, आवास आदि की व्यवस्था निःशुल्क है।

शिविर तथा संस्थान में प्रवेशार्थी छात्र अपना नाम, पिता का नाम, गोत्र, जन्मतिथि, निवास स्थान का पता, धार्मिक योग्यता एवं दो वर्षों में विद्यालयीय परीक्षाओं में प्राप्त अंक-तालिका (प्रति अलग से संलग्न करे) आदि का विवरण देते हुए निम्नांकित पते पर १५ अप्रेल २००३ तक आवेदन पत्र प्रेषित करें, जिससे उन्हें अनुमति पत्र एवं शिविर तिथि की सूचना समय पर भेजी जा सके।

-अधिष्ठाता, श्री जैन सिद्धान्त शिक्षण संस्थान, ए-9, महावीर उद्यान कॉलोनी, बजाज नगर, जयपुर(राज.)

आचार्य श्री डॉ. शिवमुनि जी सिरसा की ओर

आचार्य श्री डॉ. शिवमुनि जी महाराज अपनी शिष्यमण्डली के साथ सिरसा (हरियाणा) की ओर पधार रहे हैं। अक्षयतृतीया ४ मई २००३ को आचार्य श्री सिरसा में विराजें, ऐसी संभावना है। सिरसा संघ तपस्वियों को अपने यहाँ आने का निमन्त्रण दे रहा है।- **वेदप्रकाश जैन, महासचिव, एस.एस. जैन सभा, सिरसा (हरियाणा), फोन नं. 234881/222530(का.) 232530 (आवास)**

आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. नागौर में

आचार्य श्री रामलाल जी म.सा.ने फाल्गुनी चौमासी नागौर में करने की स्वीकृति फरमायी है। *-चम्पालाल डागा*

अखिल भारतीय जिणधम्मो परीक्षा का परिणाम

नगरी—आचार्य श्री नानेश की कृति 'जिणधम्मो' पर आयोजित अखिल भारतीय खुली लिखित परीक्षा में ६५० परीक्षार्थियों ने भाग लिया, जिनमें ७८ सन्त-सती भी सम्मिलित हुए। योग्यता सूची इस प्रकार है- **प्रथम**—सुश्री कौशल्य धारीवाल, देशनोक, **द्वितीय**—रोहिणी लोढ़ा, उज्जैन **तृतीय**—कांतिलाल दुग्गड़, जगदलपुर, प्रेमचन्द नवलखा-मनावर, बसन्ती देवी पारख, दुर्ग, कु. रीता बैद, धमतरी, **चतुर्थ**—श्रीमती निर्मला बोथरा, ब्यावर, मंजू जैन, मंडिया, सरला देवी सांखला, नीमच, **विशेष पुरस्कार**- सीमा मूथा, ब्यावर, सुश्री सुनयना लोढ़ा, पाचौड़ी।

-महेश नाहटा

विश्वस्तरीय धर्मसम्मेलन में श्री कमलमुनि जी 'कमलेश'

१५ से २० जनवरी २००३ तक आध्यात्मिक पुनर्जागरण एवं मानवीय मूल्यों के उत्थान हेतु ऑर्ट आफ लिविंग इण्टरनेशनल सेण्टर एवं वेद विज्ञान महापीठ के संस्थापक श्री रविशंकर जी महाराज द्वारा बैंगलोर में विश्वस्तरीय धर्म सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें लगभग ८० देशों के लोग हजारों की संख्या में उपस्थित थे। इस प्रसंग पर भारत के उपराष्ट्रपति, उपप्रधानमंत्री सहित कई केन्द्रीय मंत्री, राज्यों के राज्यपाल एवं मुख्यमंत्री उपस्थित हुए। इस समारोह में जैन धर्म के प्रतिनिधि के रूप में श्री कमलमुनि जी 'कमलेश' ने भाग लेकर जैनधर्म के विचारों को विभिन्न देशों के लोगों तक पहुँचाया। *-गौतमचन्द ओस्तवाल*

अर्धमागधी आगम-साहित्य पर त्रिदिवसीय संगोष्ठी

१५ से १७ फरवरी २००३ तक जैन विश्वभारती लाडनूँ में अर्धमागधी आगम-साहित्य पर राष्ट्रीय संगोष्ठी का आयोजन किया गया। संगोष्ठी में लगभग ५० विद्वानों ने आगम-साहित्य के विभिन्न पक्षों पर अपने शोध-निबन्ध प्रस्तुत किए। शोध -निबघ्न्ध आगमों में दर्शन, इतिहास, व्याकरण, साहित्य, विज्ञान, आचार, ज्योतिष, आयुर्वेद आदि विभिन्न आयामों से सम्बद्ध थे। संगोष्ठी को सम्पूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय, वाराणसी के कुलपति डॉ. राजेन्द्र जी मिश्र, दिल्ली विश्वविद्यालय के दर्शनशास्त्र विभाग के अध्यक्ष प्रोफेसर एस.आर. भट्ट, जैन विश्वभारतीय के पूर्व कुलपति श्री महावीर राज गेलड़ा, समणी मंगलप्रज्ञा, डॉ. दयानन्द भार्गव आदि का सान्निध्य प्राप्त था। संगोष्ठी में जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जी जैन ने 'अर्धमागधी आगम-साहित्य में अस्तिकाय' विषय पर अपना शोध निबन्ध प्रस्तुत किया। संगोष्ठी का समापन कार्यक्रम राज्य सरकार के उच्च्व शिक्षा मंत्री श्री बी.डी.कल्ला के मुख्य आतिथ्य में सम्पन्न हुआ। संगोष्ठी में चर्चा,

आतिथ्य एवं वातावरण की शोभा में जैन विश्वभारती संस्थान के शिक्षकों एवं छात्रों का योगदान उल्लेखनीय था। संगोष्ठी का संयोजन डॉ. हरिशंकर पाण्डेय ने किया।

जैन धर्म पर वेबसाइट

भावनगर—जैन धर्म के विभिन्न पक्षों पर विशाल पोर्टल वेबसाइट का उद्घाटन श्री दीपचन्द भाई एस. गार्डी ने भावनगर में किया। इस साइट को आगे बढ़ाने में श्रेणिक भाई कस्तूरभाई, धीरूभाई शाह, कुमारपाल देसाई, डॉ. जितेन्द्र बी. शाह आदि का योगदान रहा है। वेबसाइट है- www.jainuniversity.org विशेष जानकारी के लिए सम्पर्क सूत्र-०२७८-२४२८९५३,२४२२२२९। *-मुकेश जासु, कपासी*

संक्षिप्त समाचार

चेन्नई—.अ.भा. श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड के अंतर्गत होने वाली अखिल भारतीय स्तर पर धार्मिक परीक्षा जनवरी २००३ की तैयारी हेतु पूर्वाभ्यास के लिये एक पूर्ण दिवसीय धार्मिक प्रशिक्षण शिविर श्री जैन रत्न युवक परिषद्, चेन्नई ने श्री बादलचन्द सायरचंद चोरड़िया स्कूल, साहूकारपेट में आयोजित किया। अध्यापन सेवा में श्री मनोहरराज जी कांकरिया, श्री दिलीप जी बया, श्री ज्ञानचन्दजी बागमार, श्री चंपालाल जी बोथरा, श्री कमलेश जी बोहरा, श्री महावीरजी बागमार, श्री महावीर जी तातेड़, श्री अशोक जी कवाड़, शिक्षण समिति के संयोजक श्री राजेन्द्र जी सांखला का योगदान रहा। करीबन तीनं सौ परीक्षार्थियों ने परीक्षा का पूर्वाभ्यास शिविर में किया। यह सफल एकदिवसीय धार्मिक प्रशिक्षण शिविर श्रीमान जबरचन्दजी, बस्तीमलजी मांगीलालजी चोरड़िया परिवार (लवेराकलां वाले) के आर्थिक सौजन्य से सम्पन्न हुआ। इस बार चेंन्नई के २६ उपनगरों में धार्मिक परीक्षा का आयोजन युवक परिषद्, चेन्नई शाखा के संचालन में हो रहा है। *-आर नरेन्द्र कांकरिया*

दिल्ली—समाजसेवी एवं कुन्दकुन्द भारती न्यास के न्यासी धर्मानुरागी श्री ओमप्रकाश जी जैन को 'पद्मश्री' के अलंकरण से विभूषित किए जाने हेतु चयनित किया गया है। वे आचार्य श्री विद्यानन्द जी मुनिराज के आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन में जैनसमाज एवं देश की सेवा में तन-मन-धन से समर्पित व्यक्तित्व हैं।

-जमनाशंकर मेनारिया

मावली—जैन एकता मंच राजस्थान की प्रतिनिधि सभा की १२ जनवरी २००३ को उदयपुर में श्री भंवरलाल जी बागरेचा, कांकरोली की अध्यक्षता में बैठक सम्पन्न हुई। सभा में प्रदेश के २०० प्रतिनिधियों ने भाग लिया। *- दलीचन्द जैन*

बैंगलोर—श्री कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ द्वारा त्रिदिवसीय स्वाध्यायी शिविर आयोजित किया गया, जिसमें १०० स्वाध्यायी सदस्यों ने भाग लिया। शिविर का समापन २ फरवरी २००३ को हुआ। *-शान्तिलाल बोहरा, संयोजक*

चेन्नई—श्री एस.एस. जैन युवक संघ एवं एस.एस. जैन युवक संघ चेरिटेबल

ट्रस्ट द्वारा अपोलो हॉस्पिटल, चेन्नई के तत्त्वावधान में गतवर्ष की भांति इस वर्ष भी निःशुल्क स्वास्थ्य निरीक्षण केम्प श्री जैन भवन एकाम्बरेश्वर अग्राहारम्, चेन्नई में मार्च २००३ को आयोजित किया जा रहा है। *-शान्तिलाल बोहरा, संयोजक*

सवाईमाधोपुर—आचार्य श्री हस्ती मेडिकल रिलीफ सोसायटी द्वारा वधवा एण्ड वधवा प्रा. लिमिटेड के सौजन्य से सामान्य चिकित्सालय परिसर में १० से १४ जनवरी २००३ तक निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में ७५० रोगियों के नेत्रों का परीक्षण कर ११४ का ऑपरेशन किया गया। इनमें से ७६ रोगियों का मोतियाबिंद का आपरेशन तथा ३८ के लैंस प्रत्यारोपित किए गए।

-पारसचन्द जैन ,

हैदराबाद—आन्ध्रा जैन स्वाध्यायी संघ द्वारा स्वाध्यायियों के ज्ञानवर्धन हेतु १६ से १८ मार्च २००३ तक बोलाराम, सिकन्द्राबाद में प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया जा रहा है। आन्ध्रप्रदेश, कर्नाटक एवं तमिलनाडु क्षेत्रों से भाग लेने वाले स्वाध्यायियों को यात्रा-व्यय दिया जाएगा तथा शिक्षण की व्यवस्था कर्नाटक जैन स्वाध्याय संघ द्वारा रहेगी। सम्पर्क फोन नं. २७५६७४६९ काचीगुड़ा धार्मिक उपकरण केन्द्र है। *-धीरज जैन*

चेन्नई—पशु कल्याण पखवाड़े के अवसर पर मवेशियों के उपचार हेतु यहाँ एक निःशुल्क जाँच शिविर आयोजित किया गया, जिसमें लगभग २०० गायों, बैलों तथा भैंसों को चिकित्सा सुविधा प्रदान की गई। *-पी.एम. चोरड़िया*

इन्दौर—स्वाध्याय से जीवन पवित्र एवं विचार शुद्ध होते हैं, प्रत्येक व्यक्ति को आत्म-उत्थान के लिए कम से कम १५ मिनट सत्साहित्य का स्वाध्याय अवश्य करना चाहिए। इस प्रकार के विचार यहां उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. ने महावीर भवन, इमलीबाजार इन्दौर में तब व्यक्त किए जब वहाँ २६ जनवरी २००३ को स्वाध्यायियों का सम्मान किया जा रहा था। उपाध्यायप्रवर ने फरमाया कि स्वाध्यायियों का जीवन नैतिकता, प्रामाणिकता और सदाचारिता से परिपूर्ण होना चाहिए। स्वाध्याय संघ की गतिविधियों की जानकारी देते हुए श्री मोहनलाल जी पीपाड़ा ने बताया कि २५ वर्ष पूर्व आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के चातुर्मास से मध्यप्रदेश जैन स्वाध्याय संघ का शुभारम्भ हुआ। श्री अशोक जी मण्डलिक ने समागत स्वाध्यायियों का स्वागत किया। वर्ष २००१ में सेवा देने वाले स्वाध्यायियों को सम्मान मुख्य अतिथि श्री कल्याणमल जी एवं श्री अनुपमकुमार जी बाफना ने प्रदान किया तथा अध्यक्षता जैन रत्न श्री नेमनाथ जी जैन ने की।

चेन्नई—करुणा इण्टरनेशनल का अखिल भारतीय सम्मेलन भव्य समारोह के रूप में ९-१० जनवरी २००३ को चेन्नई के पुरुषवाक्कम् के सी.यू.शाह भवन के प्रांगण में आयोजित किया गया। मुख्य अतिथि पांडिचेरी के महामहिम राज्यपाल श्री मलकानी जी थे। अमेरिका से पधारे चित्रभानु जी, चेयरमेन सुरेन्द्र भाई मेहता,

अध्यक्ष श्री दुलीचन्द जी जैन, उद्योगपति श्री सुगालचन्द जी जैन आदि ने सम्मेलन को उद्‌बोधित किया। इस अवसर पर श्री मलकानी जी ने १६ उत्कृष्ट विद्यालयों को ७५०००/- के अवार्ड एवं पुरस्कार प्रदान किये तथा श्री गुमानमल जी लोढ़ा ने ४० विद्यार्थियों को दयावान पुरस्कार प्रदान किये।

बधाई

प्रो. कल्याणमल जी लोढा को २ लाख का पुरस्कार

कोलकाता–विश्रुत साहित्यकार, आधुनिक हिन्दी साहित्य के मर्मज्ञ आलोचक, भारतीय संस्कृति के अनन्य उपासक, तत्त्ववेता, चिन्तनशील, प्रज्ञापुरुष, प्रभावी वक्ता, मनीषी विद्वान् एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, कोलकाता के अध्यक्ष प्रोफेसर कल्याणमल जी लोढ़ा को उत्तरप्रदेश हिन्दी संस्थान ने महात्मा गाँधी पुरस्कार से सम्मानित करने की घोषणा की है। जोधपुर विश्वविद्यालय के पूर्व कुलपति एवं कलकत्ता विश्वविद्यालय के हिन्दी-विभाग के प्रतिष्ठित पूर्व आचार्य एवं अध्यक्ष प्रोफेसर लोढ़ा को साहित्य, शिक्षा एवं संस्कृति के क्षेत्र में उत्कृष्ट योगदान हेतु यह पुरस्कार प्रदान किया जा रहा है। इस गौरवशाली पुरस्कार में उन्हें २ लाख रुपये की राशि से सम्मानित किया जाएगा। प्रोफेसर लोढ़ा आचार्य श्री हस्ती स्मृति सम्मान समिति के अध्यक्ष हैं। उनके इस सम्मान से अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं समस्त जैन समाज गौरवान्वित है।

जयपुर-सुश्री खुशबू कोठारी सुपौत्री श्री ज्ञानचन्द जी कोठारी एवं तेजकुमारी जी कोठारी तथा सुपुत्री श्री विनयचन्द जी कोठारी एवं श्रीमती सुमन जी कोठारी ने लन्दन ब्रेडफोर्ड विश्वविद्यालय से सम्बद्ध JIILM अण्डर ग्रेज्युएट बिजनिस स्कूल में बी.बी.ए. (बेचलर ऑफ साइन्स इन बिजनिस एण्ड मैनेजमेण्ट)की परीक्षा में एशिया तथा भारत के छात्रों में सर्वोच्च अंक प्राप्त करके भारतीय जैन समाज का गौरव बढ़ाया है। इसके लिए खुशबू को हार्दिक बधाई।

बीकानेर– श्री अ.भा. साधुमार्गी जैन संघ द्वारा स्थापित ५१ हजार रुपये के

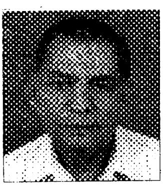

प्रतिष्ठित स्व. श्री प्रदीप कुमार रामपुरिया स्मृति साहित्य पुरस्कार वर्ष २००१ हेतु बीकानेर निवासी श्री भवानीशंकर व्यास 'विनोद'की पांडुलिपि 'मानवता का मंगल मार्ग' का चयन किया गया है। पुरस्कृत कृति के रचनाकार ६७ वर्षीय श्री भवानीशंकर व्यास 'विनोद' जिला शिक्षाधिकारी के पद से सेवानिवृत्त हुए हैं तथा 'शिविरा' पत्रिका के सम्पादक रहे हैं। राज्य स्तरीय शिक्षक पुरस्कार सहित आप अनेक पुरस्कारों से सम्मानित हुए हैं। इस पुरस्कार के निर्णायक मण्डल में डॉ. सागरमल जैन, शाजापुर, डॉ. प्रेमसुमन जैन, उदयपुर, डॉ. धर्मचन्द जैन, जोधपुर सम्मिलित थे। पुरस्कार की स्थापना स्व. श्री माणिकचन्द जी रामपुरिया ने अपने पुत्र की स्मृति में की थी। *-चम्पालाल डागा*

उदयपुर– जैन कवि श्री दिलीप धींग को सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर द्वारा जैन विद्या एवं प्राकृत विभाग से एम.ए. परीक्षा २००० में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने के उपलक्ष्य में स्वर्ण पदक प्रदान किया जायेगा।

श्रद्धांजलि

पूज्य श्री हुकमीचन्द जी म.सा. का स्वर्गवास

जोधपुर–श्रमण श्रेष्ठ श्री समर्थमल जी म.सा. के मुखारविन्द से दीक्षित ज्ञानगच्छाधिपति पूज्य श्री तपस्वीराज श्री चम्पालाल जी म.सा. के आज्ञानुवर्ती आत्मार्थी सन्त पूज्य श्री हुकमीचन्द जी म.सा. का ६२ वर्ष की आयु में बेले की तपस्या सहित ५ फरवरी २००३ को रायपुर की हवेली, जोधपुर में स्वर्गवास हो गया। आपने ६१ वर्ष की अवस्था में संयम जीवन अंगीकार किया था। तपस्वी सन्त के देहावसान से ज्ञानगच्छ में अपूरणीय क्षति हुई है। आप ज्ञानगच्छ के सन्त-रत्नों में सबसे अधिक वयोवृद्ध थे। (लोकाशाह क्रान्ति के आधार पर)

नवदीक्षित श्री नितिनमुनि जी म.सा. का महाप्रयाण

देशनोक–परमश्रद्धेय आचार्य श्री रामलाल जी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में विराजित नवदीक्षित श्री नितिनमुनि जी म.सा. का दिनांक २८ जनवरी को रात्रि में लगभग ११.१५ बजे शयन अवस्था में ही देहावसान हो गया। दिनांक २६ जनवरी को आस-पास के श्रावक-श्राविका आपके अन्तिम दर्शनार्थ और अन्त्य संस्कार में सम्मिलित होने के लिए पहुंचे। सैकड़ों श्रावक-श्राविकाओं ने नम आंखों से आपको अन्तिम विदाई दी। ***-चम्पालाल डागा***

साध्वीप्रमुखा जी की सांसारिक बहिन सुश्राविका श्रीमती पारसदेवी जी पारख का समाधिमरण

चेन्नई–दृढ़धर्मी, श्रद्धानिष्ठ, सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती पारसदेवी जी

(धर्मपत्नी स्व. श्री अजीतमल जी पारख-जोधपुर) का ८१ वर्ष की उम्र में २० फरवरी २००३ को चेन्नई में संथारे के साथ समाधिमरण हो गया।

श्रीमती पारसदेवीजी का जन्म चेन्नई में संघसेवी सुश्रावक श्री रिडमलचन्दजी भण्डारी के यहाँ सेवाभावी सुश्राविका श्रीमती जतनकंवर जी की कुक्षि से हुआ। बारनी का भण्डारी परिवार युगद्रष्टा-युगमनीषी आचार्य श्री हस्ती का समर्पित परिवार रहा। श्रीमती पारसदेवी जी की दो बहिनें साध्वीप्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवरजी म.सा. एवं शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. रत्नवंश और जिनशासन को दीप्तिमान कर रही हैं। श्रीमती पारसदेवी जी को वि.सं.२००२ में वैधव्य का दुःख सहना पड़ा, किन्तु धर्मानुरागी श्राविकारत्न ने त्याग- तप और सत्संग-सेवा के सम्बल से जीवन को नया

मोड़ दिया, वह अपने-आपमें अनुकरणीय आदर्श है। प्रतिवर्ष चातुर्मास में गुरुचरणों में रहकर धर्मध्यान करना उन्हें इष्ट था। सुश्राविका श्रीमती पारसदेवीजी ने आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., प्रवर्तिनी पूज्या महासती श्री सुन्दरकंवर जी म.सा., प्रवर्तिनी पूज्या महासती श्री बदनकंवर जी म.सा., प्रवर्तिनी पूज्या महासती श्री लाडकंवर जी म.सा., साध्वीप्रमुखा सरलहृदया महासती श्री सायरकंवरजी म. सा. , शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. प्रभृति संत-सतीवृन्द की सेवा में चार-चार माह तक रहकर धर्म साधना-आराधना की। सरलहृदया महासती श्री सायरकंवर जी म.सा. एवं शासनप्रभाविका महासती श्री मैनासुन्दरीजी म.सा. के बारनी चातुर्मास में श्राविकारत्न की भक्ति-भावना के कारण उनके भ्राता श्री देवरूपचन्द जी एवं महीपालचन्द जी भण्डारी ने पुरजोर विनती करके बारनी जैसे छोटे गांव में सफल चातुर्मास कराया, श्रद्धा-भक्ति का ऐसा सुन्दर उदाहरण प्रायः कम ही मिलता है। गांव के सभी वर्गों में भण्डारी परिवार के प्रति सदा अपनत्व रहा। जाट, माली, सुथार, राजपूत आदि घरों में नमस्कार महामंत्र और जैन जीवन शैली की छाप आज भी स्पष्ट देखी जा सकती है। बारनी की कई मुमुक्षु बहिनें जिनशासन सेवा में समर्पित हुई, उसमें सुश्राविका पारसदेवी जी की भूमिका रही।

सामायिक-स्वाध्याय, दया-संवर, उपवास-पौषध के साथ बड़ी तपश्चर्या में सुश्राविका सदैव अग्रणी रही। करीब ६० वर्ष पूर्व अंगीकार किए चौविहार एवं कच्चे पानी का त्याग अन्त समय तक रहा। व्रत-प्रत्याख्यानों के परिपालन में उनकी सजगता का ही सुपरिणाम है कि विगत करीब दो माह की अस्वस्थता में भी उनका स्मरण-भजन बराबर चल रहा था। औषधोपचार की दृष्टि से अस्पताल में रहते हुए भी व्रत-नियमों में उन्होंने सजगता बनाए रखी। जीवन के अन्त में श्राविका रत्न को दो घंटे का संथारा आया।

संघ-संरक्षक श्री डी.आर.मेहता सा. की माताश्री सुश्राविका श्रीमती लाडकंवर जी मेहता का स्वर्गगमन

जयपुर—श्रद्धानिष्ठ एवं धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती लाडकंवर जी मेहता धर्मपत्नी

स्व. श्री हनवन्तराज जी मेहता का १७ फरवरी २००३ को जयपुर में स्वर्गगमन हो गया। सन् १९१० में जोधपुर में जन्मी लाडकंवर जी को सुश्रावक श्री शम्भुनाथ जी मोदी के सारे सुसंस्कार प्राप्त हुए। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. के परमभक्त एवं सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के प्रथम अध्यक्ष सुश्रावक श्री इन्द्रनाथ जी मोदी की आप सगी छोटी बहिन थी। जब आप ३० वर्ष की थी तभी पति श्री हनवन्तराजी मेहता के देहावसान से आपका सौभाग्य सिन्दुर पुछ गया। उन क्षणों में भी आपने धैर्य एवं साहस से काम लिया तथा धर्म को जीवन का सम्बल समझा। अपने ज्येष्ठ श्री जसवन्तराजजी मेहता, श्री हुकमराजजी मेहता एवं

श्री अमृतराजजी मेहता के सहयोग से लाडकंवर जी के पुत्र-पुत्रियों को पूर्ण संरक्षण एवं उच्चतम शिक्षा के अवसर मिले। सांसद श्री जसवन्तराजजी मेहता को आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. प्रमोद से सतपीढ़िया श्रावक कहते थे। वे नैतिकता एवं शुद्ध आचार के लिए विख्यात थे।

प्रखर प्रतिभा की धनी एवं धर्मपरायण श्रीमती लाडकंवर जी मेहता उदारहृदया एवं उच्च जीवन मूल्यों को महत्त्व देने के साथ सामाजिक कुरीतियों की कट्टर विरोधी थी। उनके विचार समय से बहुत आगे के सोच वाले थे। आप प्रतिदिन कई सामायिक करती तथा सामायिक में व्यापक स्वाध्याय करती थी। सामायिक, स्वाध्याय व संयम आपके जीवन के अभिन्न अंग थे। अनेक व्रत-नियम एवं प्रत्याख्यान का आप अत्यन्त सजगतापूर्वक पालन करती थी। पूर्ण आस्था के साथ उन्होंने धर्म को जीवन में जिया और जीवन में उतारा। सेवा और त्याग को वे जीवन में उच्च स्थान देती थी। उन्होंने अपनी प्रिय वस्तुओं को त्यागा और प्राप्त साधनों से जरूरतमन्द बच्चों, वृद्धों और निःशक्तजनों की बराबर मदद करती रही। अनाथालयों, गोशालाओं और अस्पतालों की आप निरन्तर मदद करती रहीं।

आप सरलस्वभाव की सत्यनिष्ठ एवं स्पष्टभाषिणी श्राविका थी। आप अपने तप-त्याग एवं सूझबूझ के लिए परिवार, पड़ौस, संघ एवं समाज में आदरणीय थी।

आप संघ की एक प्रमुख सुज्ञ श्राविका थी। परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा., परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. एवं पं. रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्र जी म.सा. एवं सन्त-सती मण्डल के प्रति आपकी प्रगाढ़ श्रद्धा भक्ति थी। सन्त-सतियों व संघ-सेवा में आप सदैव अग्रणी रहती थी। स्वधर्मि वात्सल्य एवं श्रुतसेवा अनुकरणीय थी।

आप अपने पीछे तीन पुत्रों श्री सुरेन्द्रराज जी मेहता, श्री वीरेन्द्रराज जी मेहता एवं श्री देवेन्द्रराज जी मेहता तथा पुत्री श्रीमती विद्या लोढ़ा का भरापूरा संस्कारित परिवार छोड़कर गई हैं। श्री सुरेन्द्रराज जी मेहता, मेटलार्जिस्ट (Metallergist) इंजीनियर के पद से सेवानिवृत्त होने के अनन्तर भगवान महावीर विकलांग सहायता समिति, जयपुर का सेवाभाव से संचालन कर रहे हैं। श्री वीरेन्द्रराज जी मेहता एशियन विकास बैंक से सेवानिवृत्त हुए हैं। सबसे लघु पुत्र प्राणिमित्र श्री देवेन्द्रराज जी मेहता, राजस्थान सरकार में सचिव एवं केन्द्र सरकार में संयुक्त सचिव पद पर सफलतापूर्वक कार्य करने के पश्चात् भारतीय रिजर्व बैंक के डिप्टी गवर्नर बने। अभी आप सेबी के अध्यक्ष पद से सेवानिवृत्त होकर मानव-सेवा एवं प्राणि-सेवा के विभिन्न कार्यों में संलग्न हैं। आप कई वर्षों तक सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के अध्यक्ष रहे तथा सम्प्रति अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के संरक्षक तथा शासन सेवा समिति के सदस्य हैं। श्रीमान डी.आर.मेहता सा. की धर्मपत्नी श्रीमती विमला जी मेहता ने अपनी सासूजी श्रीमती लाडकंवर जी मेहता की

सेवा सुश्रूषा का पूर्ण लाभ लिया। विमला जी मेहता के पिता समर्पित सुश्रावक श्री उमरावमल जी ढड्ढा (संघ के विभिन्न पदों पर कार्यरत) का श्रीमती लाडकंवर जी मेहता के प्रति अत्यन्त आदरभाव था। आप संघ के तीन स्तम्भ परिवारों से सम्बद्ध थी।

धर्मनिष्ठ सुश्राविका के दिवंगत होने से संयुक्त मेहता परिवार लाडनूं हाउस, जोधपुर के एक युग का अवसान भले ही हो गया, किन्तु आप अपने पीछे जो खुशबू बिखेर गई हैं, उससे मेहता परिवार सदैव सुगन्धित रहकर संघ एवं समाज में समर्पित भाव से यथावत् कार्य करता रहेगा।

जोधपुर– आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के अनन्य भक्त,

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर के संस्थापक अध्यक्ष एवं प्रमुख न्यायविद् माननीय स्व. श्री इन्द्रनाथ जी मोदी की पुत्रवधू धर्मनिष्ठ सुश्राविका **श्रीमती सरदारकंवर जी मोदी** धर्मपत्नी श्री विशम्भरनाथ जी मोदी, एडवोकेट का १५ फरवरी २००३ को देहावसान हो गया। पारिवारिक सुसंस्कारों से संस्कारित श्रद्धानिष्ठ सुश्राविका श्रीमती सरदारकंवर जी का जीवन सरलता, मृदुता, सहिष्णुता, उदारता आदि सद्गुणों से ओतप्रोत था। संघ-सेवा और सन्त-सती सेवा में आप सदैव समर्पित रही। वाणी की मधुरता, व्यवहार की शालीनता और मन की सरलता के कारण आप घर-परिवार और संघ-समाज में प्रतिष्ठित श्राविका थी। आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. उनके पट्टधर आचार्यप्रवर १००८ पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर पं. रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सन्तों एवं सतीवृन्द के प्रति आपकी अनन्य आस्था एवं भक्ति थी।

-सुमेरनाथ मोदी

जोधपुर– सरलमना, प्रियधर्मी सुश्रावक श्रीमान् रिखबराज जी मेहता का ७४

वर्ष की आयु में १२ फरवरी २००३ को आकस्मिक देहावसान हो गया। आप सरकारी विभाग से सेवानिवृत्त हुए थे। आपका अधिकांश समय धर्माराधन में ही व्यतीत होता था। आपकी धर्मनिष्ठ धर्मपत्नी सुश्राविका श्रीमती पुष्पादेवी जी मेहता का भी लगभग सात माह पूर्व ६९ वर्ष की आयु में स्वर्गवास हो गया था। आप प्रतिदिन ४-५ सामायिकें करने के साथ रात्रि भोजन के त्यागी थे। आप पर्व तिथियों पर लिलौती त्याग, दया-संवर-पौषधादि करते रहते थे। आप दोनों की परमाराध्य आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्याय श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सन्त एवं साध्वी-मण्डल के प्रति गहरी श्रद्धा भक्ति थीं। आप अपने पीछे तीन सुपुत्रियाँ एवं दोहिते-दोहितियों का परिवार छोड़ कर गये हैं।

दुर्ग-वयोवृद्ध धर्मनिष्ठ सुश्राविका श्रीमती रूक्माबाई जी कोठारी धर्मपत्नी स्व. श्री सुखराज जी कोठारी का २३ जनवरी २००३ को ७८ वर्ष की उम्र में हृदयगति रुक

जाने से आकस्मिक निधन हो गया। आप सरल स्वभावी, मृदुभाषी, धर्मपरायण आदर्श महिला थी। आपने जीवन का अधिकांश भाग बागावास में व्यतीत किया तथा कतिपय वर्षों से दत्तक पुत्र श्री मोहनलालजी कोठारी के पास रहकर प्रतिदिन ४-५ सामायिक करती थी। आप अपने पीछे भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

-पारसमल चौपड़ा

जयपुर—श्रीमती रतनदेवी जी वैद्य धर्मपत्नी स्व. श्री बालचन्द जी वैद्य 'शिक्षाविद्' का १० फरवरी २००३ को स्वर्गवास हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करती थी। आप अपने पीछे संस्कारशील एवं भरापूरा परिवार छोड़कर गई है।

उदयपुर— सुश्री तनु नाहर (सुपुत्री श्री अरूणकुमार जी नाहर एवं दौहित्री श्री गौतमचन्द जी सिंघवी) का १६ वर्ष की वय में असामयिक देहावसान हो गया। सुश्री नाहर सहनशील एवं हंसमुख प्रवृत्ति की किशोरी थीं। सिंघवी एवं नाहर परिवार की देव, गुरु एवं धर्म पर अटूट श्रद्धा है। *-अमृतलाल मेहता*

जयपुर—सुश्रावक श्री रतनचन्द जी छाजेड़ (मामाजी) का १२ फरवरी २००३ को स्वर्गवास हो गया। आप धर्मनिष्ठ व्यक्तित्व के धनी थे।

जोधपुर— श्रद्धानिष्ठ एवं धर्मपरायण सुश्राविका श्रीमती तीजादेवी जी का ८

फरवरी २००३ को १०२ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आपका जीवन सरलता, मृदुता, सहिष्णुता, उदारता जैसे सद्गुणों से ओतप्रोत था। संघ-सेवा और सन्त-सेवा में वे समर्पित रही। वाणी की मधुरता, व्यवहार की कुशलता और मन की निष्कपटता के कारण वे घर-परिवार और संघ-समाज में सर्वत्र प्रतिष्ठित श्राविका रत्न थीं। आचार्यप्रवर पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा., आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्र जी म.सा., उपाध्यायप्रवर पं.रत्न श्री मानचन्द्र जी म.सा. आदि सन्त- सतीवृन्द के प्रति आपकी अनन्य आस्था एवं भक्ति थी। आपने जीवन में सामायिक, व्रत- प्रत्याख्यान एवं तप-त्याग को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया। आप अपने पीछे सुपुत्र श्री पीरचन्द जी चोरड़िया का पौत्रों सहित भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

पाली-मारवाड़— विजयनगर(अजमेर) निवासी श्रीमान् सूरजकरण जी बिराणी

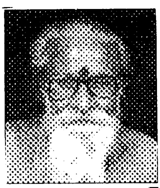

का ६ जनवरी २००३ को ७५ वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। आप धार्मिक प्रवृत्ति से ओतप्रोत, कर्त्तव्यपरायण, धुन के पक्के, उदारमना, मिलनसार एवं सेवा व स्वधर्मि वात्सल्य के प्रेरणा पुंज थे। आप अपने पीछे तीन पुत्रों (श्री राजेन्द्रप्रसाद जी, विजयनगर,श्री नरेन्द्र कुमार जी, पाली एवं श्री सुरेन्द्र कुमार जी, भीलवाड़ा) एवं तीन पुत्रियों का संस्कारित भरापूरा परिवार छोड़कर गए हैं।

-नरेन्द्र बिरानी, पाली

जयपुर—सुश्रावक श्री विरेन्द्र कुमार जी लुणावत का १६ फरवरी २००३ को निधन हो गया। आप धर्मनिष्ठ, सरल एवं प्रतिभासम्पन्न व्यक्तित्व थे। आप देव, गुरु एवं धर्म के प्रति समर्पित तथा सन्त-सतियों की सेवा में तत्पर रहते थे।

जयपुर—सुश्राविका श्रीमती बुद्धिदेवी जी जैन (पटनी) धर्मपत्नी श्री केवलचन्द जी

जैन (पटनी) का २८ जनवरी २००३ को निधन हो गया। आप स्व. सुश्रावक श्री बस्तीचन्द जी बोथरा की सुपुत्री एवं स्व. श्री भंवरलाल जी बोथरा की छोटी बहिन थी। आप धर्मनिष्ठ एवं श्रद्धानिष्ठ श्राविका थी तथा नियमित रूप से सामायिक-स्वाध्याय करती थी। आपके जीवन पर आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. एवं आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. का विशेष प्रभाव था।

अहमदाबाद—सुश्राविका श्रीमती बक्सुदेवी जी धर्मपत्नी स्व. श्री बांडमल जी

गणधर चौपड़ा निवासी बाड़मेर का २४ जनवरी २००३ को प्रातः ६ बजे देहावसान हो गया। आप सामायिक लेने की तैयारी कर रही थी, तभी अचानक प्रयाण कर गई। आप सरलहृदया एवं सेवाभावी श्राविका थी। आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म. सा., आचार्यप्रवर श्री हीराचन्द्र जी म.सा. के प्रति आपकी दृढ़ श्रद्धा-भक्ति थी। आप अपने पीछे दो पुत्र (मांगीलाल जी एवं घीसूलाल जी) तथा एक पुत्री का भरापूरा परिवार छोड़कर गई हैं।

-दौलतराज बांठियाँ

ब्यावर—श्री मिश्रीमल जी विनायकिया का ८२ वर्ष की वय में ११ फरवरी २००३ को स्वर्गवास हो गया। आप नियमित रूप से सामायिक साधना करते थे। आप संघ में मेढिभूत साधनासेवी सुश्रावक श्री धनराज जी विनायकिया (पूर्व अध्यक्ष, श्री स्थानकवासी जैन वीर संघ, ब्यावर) के ज्येष्ठ भ्राता थे।

-हस्तीमल गोलेछा

उपर्युक्त दिवंगत आत्माओं के प्रति सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जिनवाणी, अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ हार्दिक श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए उनके परिवारजनों के प्रति गहरी संवेदना व्यक्त करता है।

दिल्ली राज्य स्तरीय जैन सम्मेलन में महावीर जयन्ती पर राष्ट्रीय अवकाश की मांग

जैन महासभा दिल्ली के तत्त्वावधान में दिल्ली राज्यस्तरीय जैन सम्मेलन का आयोजन फरवरी माह में नई दिल्ली के कान्स्टीट्यूशन क्लब के सभागार में किया गया। इस अवसर पर केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में सम्मिलित श्री दिलीप जी गांधी, श्रीमती जसकौर जी मीणा तथा श्रीमती भावना बेन जी चिखलिया का जैन समाज की ओर से अभिनन्दन किया गया। सम्मेलन में जैन समुदाय की ओर से मांग रखी गयी

कि भगवान महावीर की जन्म-जयन्ती के दिन National Negotiative Instrument Act के अन्तर्गत राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया जाए और इस दिन सम्पूर्ण देश में पशुवध व शराब की बिक्री पर रोक लगायी जावे। सम्मेलन में यह भी मांग की गई कि **भगवान महावीर के 2600वें जन्म-कल्याणक के जो कार्यक्रम अधूरे रह गए हैं, वे पूरे किए जाएँ और जैन समाज के जिस-जिस वर्ग की योजनाओं की अभी तक उपेक्षा हुई है, उस विसंगति को दूर किया जाए।** *-प्रो. रतन जैन*

केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में जैन समाज को प्रतिनिधित्व

केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल के नवविस्तार में युवा सांसद श्री दिलीपकुमार मनसुखलाल गाँधी को जहाजरानी राज्यमंत्री बनाये जाने पर दिल्ली में भगवान महावीर मेमोरियल समिति व भगवान महावीर २६००वाँ जन्म-कल्याणक महोत्सव समिति की संयोजना में १० फरवरी २००३ को अभिनन्दन-समारोह आयोजित किया गया। समारोह की अध्यक्षता करते हुए भाजपा अध्यक्ष श्री वैंकेया नायडू ने जैन समाज से आह्वान किया कि वह आगे बढ़कर राजनीति में भाग ले। उन्होंने कहा कि जैन समाज साधन-सम्पन्न है। जनकल्याण की परम्परा उनके धर्म से जुड़ी हुई है। बिना राजनीति में भाग लिए सत्ता में कम भागीदारी की शिकायत करना ठीक नहीं है। राजनीति में **'जिसकी संख्या जितनी भारी, उतनी उसकी सत्ता में भागीदारी'** का सिद्धान्त है। श्री नायडू ने कहा कि युवा श्री दिलीप गाँधी की कार्यशैली, क्षमता व समर्पण को आंककर ही उन्हें केन्द्रीय मन्त्रिमण्डल में लिया गया है। समारोह में सांसद डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी, सांसद श्री ललित मेहता, वयोवृद्ध एवं पूर्व केन्द्रीय मन्त्री श्री सुन्दरलाल पटवा आदि अनेक गणमान्य जन उपस्थित थे। इस अवसर पर डॉ. लक्ष्मीमल सिंघवी की सचित्र पुस्तक 'भारत व विदेशों में जैन मन्दिर' की प्रति अतिथियों को भेंट की गई। श्री दिलीप गाँधी ने समाज को विश्वास दिलाया कि वे तन, मन व निष्ठा से समाज और राष्ट्र की सेवा करेंगे। *-आर.के.जैन*

गाय को राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांग

मध्यप्रदेश के विदिशा जिले के गंजबासौदा नगर एवं हरदा जिला मुख्यालय पर मुसलमानों ने गाय को 'राष्ट्रीय पशु' घोषित किए जाने की मांग की है। गंजबासौदा में इस मांग को लेकर लगभग ५०० मुसलमानों ने रैली निकाली। उन्होंने पूरे देश में गोहत्या पर प्रतिबंध लगाए जाने की मांग की। मुसलमानों ने कहा कि अगर बाघ जैसे हिंसक प्राणी को राष्ट्रीय पशु घोषित किया जा सकता है तो गाय जैसे पवित्र और अहिंसक प्राणी को राष्ट्रीय पशु घोषित क्यों नहीं किया जा सकता? हरदा जिला मुख्यालय पर मुसलमानों ने १६ फरवरी को धरना दिया और प्रधानमंत्री वाजपेयी के नाम एक ज्ञापन जिला प्रशासन को सौंपा। ज्ञापन में कहा है कि देश का एक प्रमुख और बहुसंख्यक सम्प्रदाय सनातन काल से ही गाय को पूजनीय और माता तुल्य मान रहा है, हम उनकी आस्थाओं और जज्बातों का सम्मान करते हुए इसे राष्ट्रीय पशु घोषित करने की मांग करते हैं। (राजस्थान पत्रिका १६ एवं २१ फरवरी

२००३ के आधार पर)

गोहत्या पर शीघ्र ही प्रतिबंध–वाजपेयी

प्रधानमंत्री श्री अटल बिहारी वाजपेयी ने २० फरवरी २००३ को मण्डी (हिमाचल प्रदेश) में एक चुनाव सभा को सम्बोधित करते हुए कहा कि वे गोमांस खाने की अपेक्षा मरना पसन्द करेंगे। उन्होंने घोषणा की कि गोहत्या पर देशभर में जल्दी ही प्रतिबंध लगाया जायेगा।

पथमेड़ा गोशाला में १२० गायें मरी

सांचौर के निकटवर्ती पथमेड़ा गांव स्थित गोपाल गोवर्धन गोशाला में दो दिन की बेमौसमी बरसात व सर्द हवा के कारण, कुपोषण की शिकार १२० गायें काल कवलित हो गईं। गोशाला के सत्तर बाड़ों में १८००० गोवंश पल रहा है। अकाल के कारण गायों को पौष्टिक आहार न मिलने से उनमें रोग-प्रतिरोधक क्षमता कम होती जा रही है। गोशाला की आर्थिक स्थिति कमजोर है। अनुदान के १.३८ करोड़ रुपये राज्य सरकार में बकाया चल रहे हैं।

जिनवाणी हिन्दी मासिक पत्रिका का विवरण

(फार्म २ नियम ८ देखिए)

१. प्रकाशन स्थान	: जयपुर
२. प्रकाशन अवधि	: मासिक
३. मुद्रक का नाम	: प्रकाशचन्द डागा
४. प्रकाशक का नाम	: प्रकाशचन्द डागा
राष्ट्रीयता	: भारतीय
पता	: सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल बापू बाजार, जयपुर-३०२००३(राज.)
५. सम्पादक का नाम	: डॉ. धर्मचन्द जैन
राष्ट्रीयता	: भारतीय
पता	: ३ के २४-२५, कुड़ी भगतासनी हाउसिंग बोर्ड, जोधपुर-३४२००५(राज.)
६. उन व्यक्तियों के नाम व पते जिनका पत्र पर स्वामित्व है	: सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल बापू बाजार जयपुर-३०२००३ (राज.)

मैं प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर एतद् द्वारा घोषित करता हूँ कि मेरी अधिकतम जानकारी एवं विश्वास के अनुसार ऊपर दिया गया विवरण सत्य है।

मार्च २००३ **हस्ताक्षर-प्रकाशचन्द डागा**
प्रकाशक

साभार-प्राप्ति-स्वीकार

500/-रुपये जिनवाणी पत्रिका की आजीवन-सदस्यता हेतु प्रत्येक

9065 श्री प्रकाश जी मेहता, जालोर (राज.)
9066 श्री जसराज जी बोथरा, जोधुपर (राज.)
9067 श्री जेठमल जी गुलेच्छा, जोधपुर (राज.)
9068 श्री कैलाशचन्द जी भण्डारी, विरार (ईस्ट), मुम्बई (महा.)
9069 श्री आशीष जी भंसाली, अहमदाबाद (गुजरात)
9090 श्री शेखरचन्द जी मेहता, तिलकनगर, जयपुर (राज.)
9091 श्री बाबूलाल जी जैन, भिवण्डी, थाना (महा.)
9092 श्री अनुज जी जैन, मुम्बई (महा.)
9093 श्री अमर जी बाफना, अन्धेरी (पूर्व), मुम्बई (महा.)
9094 श्री अमित जी समीर जी बरड़िया, इन्दौर (म.प्र.)
9095 श्री नवरतन जी कोठारी, जयपुर (राज.)
9096 **Shri Mishrilal H. Nahar Ji, Bhavnagar (Gujarat)**
9097 **Shri Manish Ji Bastimal Ji Bohra, Thane (M.H.)**
9098 श्री महेन्द्र जी के. मेहता, नवसारी (गुजरात)
9099 श्री राकेश कुमार दलीचन्द जी समदड़िया, आमधरा, नवसारी (गुजरात)
9100 श्री हर्षदकुमार हरखचन्द जी कांकरिया, बोर्डी, ठाणे (महा.)
9101 श्री विजयकुमार वीरभान जी पीतलिया, मरोली, नवसारी(गुजरात)
9102 श्री कान्तिलाल जी खिंवसरा, पो. डहाणू (महा.)
9103 श्री इन्द्रनाथ जी बोथरा, डहाणू रोड़, ठाणे (महा.)
9104 श्री एम.मनोहरलाल जी जैन, भेस्तान, सूरत (गुजरात)
9105 श्री राममिलन रामानुज जी पाण्डेय, कशियारी, रीवा (म.प्र.)

श्रीमान् अशोक कुमार जी हीरावत, जयपुर के सौजन्य से जिनवाणी के 20 आजीवन सदस्य 500/- प्रति सदस्य

9070 **Shri Subhash Ji Nahata, Mumbai (M.H.)**
9071 **Shri Milapchand Ji Jain. Agra (U.P.)**
9072 **Shri Yugalchand Ji Jain, Nagpur (M.H.)**
9073 **Shri Sanjeev Ji jain, Alwar (Raj.)**
9074 **Shri Deepak Ji Tather, Gwalior (M.P.)**
9075 **Shri F.M. Banthiya Ji, Ajmer (Raj.)**
9076 **Dr. Chandra Prakash Ji Barla, Kota(Raj.)**
9077 **Shri Syamsingh Ji Mehta, Jaipur (Raj.)**
9078 **Shri Narendra Ji Dusaj, Jaipur (Raj.)**
9079 **Shri Veerendrasingh Ji Bhandari, Jaipur (Raj.)**
9080 **Shri Netash Ji Jaipuriya, Jaipur (Raj.)**
9081 **Shri Vivek Ji Banthiya, Jaipur (Raj.)**
9082 **Shri Sunil Ji Halakhandi, Beawar, Ajmer (Raj.)**
9083 **Shri Surendra Ji Jain, Jaipur(Raj.)**
9084 **Shri Rohitram Ji Nahar, Jaipur (Raj.)**
9085 **Shri Sudheer Ji Lodha, Jaipur(Raj.)**

9086 **Shri Ajai Ji Parakh, Jaipur (Raj.)**
9087 **Shri Sureshchand Ji Hirawat, Jaipur (Raj.)**
9088 **Shri Rajkumar Ji Hirawat, Jaipur (Raj.)**
9089 **Shri Rajive Ji Shah, Mumbai (M.H.)**

जिनवाणी को साभार-प्राप्त

11000/–श्री गुप्तदान, नवसारी (गुजरात), आचार्यप्रवर श्री हस्तीमल जी म.सा. की 93वीं जन्म जयन्ती नवसारी में सानन्द सम्पन्न होने एवं आचार्यप्रवर श्री 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 8 के नवसारी पधारने के उपलक्ष्य में भेंट।

1100/– श्री मांगीलाल जी घीसूलाल जी चौपड़ा, अहमदाबाद (बाड़मेर वाले), श्रीमती बक्सुदेवी जी (धर्मपत्नी स्व. श्री बाँडमल जी सा चौपड़ा) का दिनांक 24.1. 2003 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

1100/– श्री केवलचन्द जी पटनी, जयपुर, अपनी धर्मपत्नी श्रीमती बुद्धिदेवी जी पटनी का स्वर्गवास दिनांक 28.1.2003 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

501/– श्री देवरूपचन्दजी, सुरेशचन्दजी, जयचन्दजी एवं समस्त भण्डारी परिवार की ओर से बहिन पारसबाई जी के संथारापूर्वक स्वर्गगमन के उपलक्ष्य में।

500/– श्री राजेन्द्र कुमार जी, सुरेन्द्रकुमार जी बिराणी, पाली, अपने पिताश्री श्री सूरजकरण जी बिराणी का दिनांक 6.1.2003 को देवलोकगमन हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

500/– श्रीमती कैलाशकुमारी जी छाजेड़, जयपुर, श्रीमान रतनचन्द जी छाजेड़ (मामाजी) का स्वर्गवास दिनांक 12.2.2003 को हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

251/– श्रीमती गुमानकंवर जी बोहरा, जोधपुर, अपनी सुपौत्री कीर्ति बोहरा (सुपुत्री श्रीमती सूरज एवं श्री राजेश जी बोहरा, जोधपुर) का शुभ विवाह चि. मनीष सुपुत्र श्री लाभमल जी श्रीश्रीमाल के साथ दिनांक 19.01.2003 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।,

251/– श्रीमती गुमानकंवर जी बोहरा, जोधपुर, अपने सुपौत्र चि. धनेश (सुपुत्र श्रीमती उषा एवं श्री शान्तिचन्द जी बोहरा, जोधपुर) का शुभ विवाह सौ. कुसुम सुपुत्री श्री महावीर सा मेहता, जोधपुर के साथ दिनांक 20.01.2003 को सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

250/– श्री शैलेष जी बोकड़िया, इन्दौर, पूज्य पिताश्री पन्नालालजी बोकड़िया की पुण्य स्मृति में।

201/– श्री पारसमल जी चौपड़ा, जयपुर, श्रीमती रूक्माबाई जी कोठारी (धर्मपत्नी स्व. श्री सुखराज जी कोठारी) का दिनांक 22.1.2003 को स्वर्गवास हो जाने पर उनकी पुण्य स्मृति में भेंट।

200/– श्री पीरचन्द जी विनोदकुमार जी चोरड़िया, जोधपुर, मातुश्री श्रीमती तीजादेवी धर्मपत्नी स्व. श्री उदयराज सा चोरड़िया के दिनांक 8.02.2003 को स्वर्गवास होने की पुण्य स्मृति में।

151/– श्री धर्मेन्द्र जी, मोहन कुमार जी मुणोत, अमरावती, चि. धर्मेन्द्र (सुपुत्र स्व. श्री मोहन जी मुणोत) का शुभ विवाह सौ.कां. अमिता(सुपुत्री श्री शशिकान्त जी गांधी, सतारा) के संग सानन्द सम्पन्न होने की खुशी में सप्रेम भेंट।

101/– श्री महेन्द्र कुमार जी जैन, मण्डावर–महुवा रोड़, श्री भूपेन्द्र कुमार जी जैन के सुपुत्र– जन्म 21 जनवरी 2003 के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

101/– श्री सुरेशचन्द जी जैन, कोटा की ओर से सप्रेम भेंट।

101/– श्री वीरेन्द्रकुमार जी, धीरजकुमार जी जैन, मुम्बई, चि. श्रीदेव जी जैन(सुपुत्र श्री पारसकुमार जी जैन) के जन्मदिवस दिनांक 15.2.2003 के उपलक्ष्य में जिनवाणी को सप्रेम भेंट।

101/– श्री वीरेन्द्रकुमार जी, धीरजकुमार जी जैन, मुम्बई, माताश्री स्व. श्रीमती शरबती देवी जी (धर्मपत्नी श्री गंगादास जी जैन) की पुण्य स्मृति में भेंट।

100/– श्रीमती शशि जी चौधरी, जोधपुर।

51/– कु. भारती चन्दाणी, लखनऊ(उ.प्र.) की ओर से सप्रेम भेंट।

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर को साभार-प्राप्त

101/– श्री धर्मेन्द्र जी मोहनकुमार जी मुणोत, अमरावती, नवकार महामंत्र के एक दिवसीय जाप के उपलक्ष्य में सप्रेम भेंट।

जीव-दया हेतु साभार-प्राप्त

501/– श्री विश्वम्भरनाथ जी, राजेन्द्रनाथ जी, भूपेन्द्रनाथजी मोदी, जोधपुर, श्री सरदारकंवर जी मोदी के दिनांक 16.02.2003 को स्वर्गवास होने की पावन स्मृति में।

101/– सौ. संगीता रमेशकुमार जी चोरड़िया, लासलगांव, सुपुत्र चि. आदर्श के जन्मदिवस के उपलक्ष्य में जीवदया हेतु सप्रेम भेंट।

श्री स्था. जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को साभार-प्राप्त

1100/– श्री श्यामाबाई गुगलिया, बैंगलोर।

52/– श्रीमती लीलावती जी जैन, भड़गांव।

उत्तराध्ययन सूत्र भाग-३ परीक्षा रूपरेखा

आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. द्वारा अनूदित व सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) द्वारा प्रकाशित उत्तराध्ययन सूत्र भाग–3 सम्पूर्ण पुस्तक पर परीक्षा ली जायेगी, जिसमें गाथा, शब्दार्थ, विशेषार्थ, विवेचन, सारांश, प्रश्नोत्तर, कथा आदि से संबंधित प्रश्न रहेंगे।

कंठस्थ गाथाएँ–	28वाँ अध्ययन सम्पूर्ण। 29 वाँ अध्ययन 1 से 5 सूत्र तक 32 वाँ अध्ययन 1 से 34 गाथा तक
परीक्षा की तारीख–	रविवार 8 जून 2003
परीक्षा–	दो प्रश्न पत्र होंगे। प्रथम अ भाग 30 अंक का, समय–30 मिनिट। ब भाग 70 अंक का एवं समय 2.30 घण्टे का रहेगा।
केन्द्र–	10 परीक्षार्थी होने पर केन्द्र बनाया जायेगा।
पुरस्कार–	प्रथम–7000/–, द्वितीय–6000/–, तृतीय 5000/– तथा सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को आकर्षक पुरस्कार।
आवेदन पत्र भेजने की अन्तिम तिथि–	30 अप्रेल 2003 (आवेदन पत्र के साथ अपना पासपोर्ट आकार का फोटो भेजना अनिवार्य है)
सम्पर्क सूत्र–	रतनलाल सी. बाफना, नयनतारा, सुभाष चौक, जलगांव–425001 (महा.)

JAI MAHAVEER

JAI GURU HASTI

With Best Compliments From :

P. MANGILAL HARISH KUMAR KAVAD

GURU HASTI GOLD PALACE

No. 5, CAR STREET, POONAMALLEE
CHENNAI-600 056
PHONE : 6272609

BANKERS : PHONE / 6272906

No. 5 A, CAR STREET,
POONAMALLEE
CHENNAI-600 056

Gurudev

SURANA

Financial Corporation (India) Limited

Group of Surana

Since 1971

A Multi Faceted Finance Company
With Fraternity Feel, Holding Hands
With Customers in Their Success

Just Contact For

- **Hire Purchase**
- **Leasing**
- **Bills Discounting**
- **Foreign Exchange**

Invites Deposits from Public

Call

Phone : 8525596 (6 Lines) Fax : 044-8520587
Internet ID : suranaco@md3.vsnl.net.in
Sprint E-mail ID : surana.chh@rmd.sprintrpg.ems.vsnl.net.in
Regd Cum.Corp. H.O.: No. 16, Whites Road,. II Floor,
Royapettah, Chennai - 600 014

Branches :

★ Bangalore ★ Coimbatore ★ Ernakulam ★
★ Kollidam ★ New Delhi ★

शान्ति और समता के लिए न्याय-नीतिपूर्वक धर्म का आचरण ही श्रेयस्कर है।

''आचार्य श्री हस्ती''

With Best Compliments From :

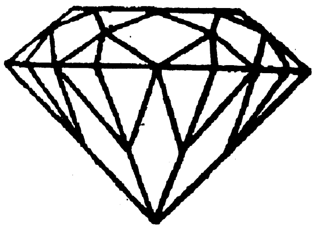

EVEREST GEMS LTD.

12-A-2,CHINA INSURANCE BUILDING,

48, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

TEL : 23681199
FAX : 23671357

Director : Sunil Lunawat
Rajesh Kothari

With Best Compliments From :

धन रोग और शोक दोनों का घर है,
जबकि धर्म रोग और शोक दोनों को
काटने वाला है।

– आचार्य श्री हस्ती

HIMA GEMS

14-A, KOK-PAH MANSION
58-60, CAMERON ROAD,
T.S.T. KOWLOON
HONG-KONG

Director
HEMANT SANCHETI

आपके व्यक्तीत्वका सही प्रतिबींब !

सोने चांदीके पारंपारीक एवमं आधुनिक आभुषणोंकी
१८५४ से विश्वसनीय सुवर्ण पेढी...

A HOUSE OF TRUST
RL
GROUP
SINCE 1854

राजमल लखीचंद™

ज्वेलर्स

१६९, जौहरी बाजार, जलगाँव. (महाराष्ट्र) फोन: ०२५७-२२६६८१,८२, ८३

All major credit cards accepted...

GRACE

आर. एन. आई. नं. 3653/57 डाक पंजीयन संख्या JPC/3825/02/2003-05

Home next to everything you need.
And far from everything you don't.

KALPATARU HABITAT
DR. S.S. RAO ROAD, PAREL

- Twin 23 storeyed luxury apartment blocks
- 2 &3 BHK apartments and 4 BHK penthouses
- Swimming pool, clubhouse & gym
- Squash court & tennis court
- Landscaped gardens & modern security systems

KALPATARU RESIDENCY
OPPOSITE CINE PLANET, SION CIRCLE

- Premium 18 storeyed towers with 2 & 3 BHK flats
- Swimming pool, squash court & gym
- Clubhouse, party lounge & landscaped gardens
- Basement and open car parking
- Tower A nearing completion

KARMA KSHETRA
NEAR SHANMUKHANANDA HALL, KING'S CIRCLE

- 25 storeyed tower with 2 wings
- 2 BHK apartments
- Landscaped gardens
- Ample car parking and modern security systems

Centrally located, they are near schools, banks, supermarkets, movie halls... And once you step in, you'll leave the hectic world outside. There'll be just you and a feeling that says, 'Relax, you are home'.

The projects are under construction/nearing completion. For details call 281 7171/282 2679/284 4102.

TRITON/2002/KCL/095

KALPA-TARU

111, Maker Chambers IV, Nariman Point, Mumbai 400 021.
Fax: 204 1548/288 4778. E-mail: sales@kalpataru.com or visit us at www.kalpataru.com

प्रकाशचन्द डागा, मन्त्री-सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, जयपुर की ओर से संजय मित्तल द्वारा दी डायमण्ड प्रिन्टिंग प्रेस, एम.एस.बी. का रास्ता, जौहरी बाजार, जयपुर से मुद्रित एवं प्रकाशचन्द डागा द्वारा प्रकाशित तथा सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल, बापू बाजार, जयपुर (राज.) से प्रकाशित। प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्द जैन।